52वां	**52nd**
राष्ट्रीय फ़िल्म	**National Film**
पुरस्कार	**Awards**

2005

मार्गदर्शन
अफ़ज़ल अमानुल्लाह
Guidance
Afzal Amanullah

संपादन/समन्वय
मनोज श्रीवास्तव
Editor/Co-ordination
Manoj Srivastava

सम्पादकीय बोर्ड
संगीता सिंह
विश्वजीत सहाय
Editorial Board
Sangita Singh
Vishwajit Sahay

उत्पादन
एस. राय
वी. के. मीणा
किशोर कुमार
गणेशी लाल
Production
S. Roy
V. K. Meena
Kishor Kumar
Ganeshi Lal

फिल्म समारोह निदेशालय के लिए विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आकल्पित और प्रकाशित
मुद्रक : बंगाल ऑफसेट वर्क्स, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

Designed and published by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, for the Directorate of Film Festivals, Printed at Bengal Offset Works, Karol Bagh, New Delhi-110005

No. : 2/8/2005 PP-V 1500 Copies October 2005

विषय सूची

CONTENTS

Page No.

निर्णायक मंडल		**JURY MEMBERS**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार	3	**ABOUT DADASAHEB PHALKE AWARD**
दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता–2004	4	Dadasaheb Phalke Award Winners-2004
पिछले वर्षों के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता	6	Dadasaheb Phalke Award Down The Years
पिछले वर्षों के स्वर्ण कमल विजेता	7	Past Winners of Swarna Kamal
कथाचित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR FEATURE FILMS**
सर्वोत्तम कथाचित्र पुरस्कार	10	Best Feature Film
निर्देशक के सर्वोत्तम प्रथम कथाचित्र के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार	12	Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director
स्वस्थ मनोरजंन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम लोकप्रिय फिल्म	14	Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वोत्तम कथाचित्र का नर्गिस दत्त पुरस्कार	16	Nargis Dutt Award for Best Film on National Integration
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	18	Best Film on Family Welfare
अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	20	Best Film on Other Social Issues
पर्यावरण सरंक्षण / परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म	22	Best Film On Environment / Conservation / Preservation
सर्वोत्तम बाल फिल्म	24	Best Children's Film
सर्वोत्तम निर्देशक	26	Best Direction
सर्वोत्तम अभिनेता	28	Best Actor
सर्वोत्तम अभिनेत्री	30	Best Actress
सर्वोत्तम सह अभिनेता	32	Best Supporting Actor
सर्वोत्तम सह अभिनेत्री	34	Best Supporting Actress
सर्वोत्तम बाल कलाकार	36	Best Child Artist
सर्वोत्तम पार्श्व गायक	38	Best Male Playback Singer
सर्वोत्तम पार्श्व गायिका	40	Best Female Playback Singer
सर्वोत्तम छायांकन	42	Best Cinematography
सर्वोत्तम पटकथा	44	Best Screenplay
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	46	Best Audiography

सर्वोत्तम संपादन	48	Best Editing
सर्वोत्तम कला निर्देशन	50	Best Art Direction
सर्वोत्तम वेषभूषा	52	Best Costume Designer
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	54	Best Music Direction
सर्वोत्तम गीत	56	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	58	Special Jury Award
सर्वोत्तम विशेष प्रभाव	60	Best Special Effects
सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन	62	Best Choreography
सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म	64	Best Feature Film in Assamese
सर्वोत्तम बंगला फीचर फिल्म	66	Best Feature Film in Bengali
सर्वोत्तम हिन्दी फीचर फिल्म	68	Best Feature Film In Hindi
सर्वोत्तम कन्नड फीचर फिल्म	70	Best Feature Film In Kannada
सर्वोत्तम मलयालम फीचर फिल्म	72	Best Feature Film in Malayalam
सर्वोत्तम मराठी फीचर फिल्म	74	Best Feature Film in Marathi
सर्वोत्तम पंजाबी फीचर फिल्म	76	Best Feature Film in Punjabi
सर्वोत्तम तमिल फीचर फिल्म	78	Best Feature Film in Tamil
सर्वोत्तम तेलुगु फीचर फिल्म	80	Best Feature Film in Telugu
सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म	82	Best Feature Film in English
सर्वोत्तम कोंकणी फीचर फिल्म	84	Best Feature Film in Konkani
विशेष उल्लेख	86	Special Mention
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	88	**Awards Not Given**
गैर कथाचित्र पुरस्कार		**AWARDS FOR NON FEATURE FILM**
सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार	90	Best Non-Feature Film
निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैर कथाचित्र पुरस्कार	92	Best First Non-Feature Film of a Director
सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय / मानवजातीय फिल्म	94	Best Anthropological / Ethnographic Film
सर्वोत्तम जीवनी फिल्म	96	Best Biographical Film
सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म / पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण फिल्म	98	Best Scientific Film/Environment Conservation/Preservation Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म	100	Best Film on Social Issues

सर्वोत्तम गवेषणा / साहसिक फिल्म	102	Best Exploration/Adventure Film
सर्वोत्तम खोजी फिल्म	104	Best Investigative Film
सर्वोत्तम कार्टून फिल्म	106	Best Animation Film
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	108	Special Jury Award
सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म	110	Best Short Fiction Film
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म	112	Best Film on Family Welfare
सर्वोत्तम निर्देशन	114	Best Direction
सर्वोत्तम छायांकन	116	Best Cinematography
सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन	118	Best Audiography
सर्वोत्तम संपादन	120	Best Editing
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन	122	Best Music Direction
सर्वोत्तम प्रकथन / वाएस ओवर	124	Best Narration/Voice Over
पुरस्कार जो नहीं दिए गए	126	**Awards not given**
सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार		**AWARDS FOR BEST WRITING ON CINEMA**
सर्वोत्तम सिनेमा पुस्तक	128	Best Book on Cinema
सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक	130	Best Film Critic
सारांश : कथाचित्र		**SYNOPSES - FEATURE FILMS**
अकले	134	Akale
अलीशा	135	Aleesha
अमू	136	Amu
अन्जी	137	Anji
ऑटोग्राफ	138	Autograph
बेरू	139	Beru
छोटा सिपाही	140	Chhota Sipahi
छुटकन की महाभारत	141	Chhutkan ki Mahabharat
डांसर	142	Dancer
देस होया परदेस	143	Des Hoya Pardes

देवराई	144	Devrai
दीनबंधु	145	Dinabandhoo
ग्रहणम्	146	Grahanam
हसीना	147	Hasina
हम तुम	148	Hum Tum
इति श्रीकान्त	149	Iti Srikanta
क्रान्तिकाल	150	Krantikal
लक्ष्य	151	Lakshya
नवरस	152	Navarasa
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस–द फॉरगॉटन हीरो	153	Netaji Subhash Chandra Bose The Forgotten Hero
ओरीडम	154	Oridam
पेज 3	155	Page 3
पेरुमढ़कालम्	156	Perumazhkalam
रेनकोट	157	Raincoat
स्वदेस	158	Swades
स्वप्नेर दिन	159	Swapner Din
स्वराभिषेकम्	160	Swarabhishekam
उत्तरायण	161	Uttarayan
वीर.ज़ारा	162	Veer-Zaara

सारांश गैर कथाचित्र — SYNOPSES NON-FEATURE FILMS

क्रेडल साँग	164	Cradle Song
द्विजा	165	Dwijaa
एक सागर किनारे	166	Eka Sagar Kinaree... A Seaside Story
गिरनी	167	Gimi
हार्वेस्ट ऑफ हंगर	168	Harvest of Hunger
इट्स प्रभात	169	It's Prabhat
क्ष त्र ज्ञ	170	Ksha Tra Gya
द लीजेन्ड ऑफ फैट ममा	171	The Legend of Fat Mama

राजू एण्ड आई	172	Raju & I
साँझ	173	Saanjh
शोर्स ऑफ साइलेन्स-व्हेल शार्क्स इन इंडिया	174	Shores of Silence-Whale Sharks in India
टाइमलैस ट्रेवलर-द हॉर्सशू क्रैब	175	Timeless Traveller-The Horseshoe Crab

निर्णायक मंडल **Jury Members**

कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR FEATURE FILMS

सुधीर मिश्रा (अध्यक्ष)
Sudhir Mishra (Chairman)

वसन्त एस.एम.ए
Vasanth SMA

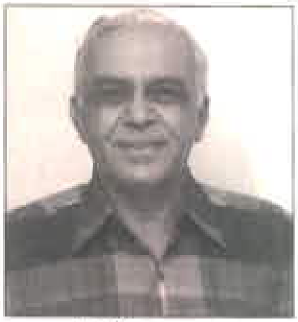

विनोद गनात्रा
Vinod Ganatra

एम. मोहन
M. Mohan

एम. संजीव
M Sanjeev

रणजीत दास
Ranjeet Das

संदीप सावंत
Sandeep Sawant

भजन सोपोरी
Bhajan Sopori

नागेश कुकुनूर
Nagesh Kukunoor

टी.एस. नागाभरणा
T.S. Nagabharana

शरद दत्त
Sharad Dutt

सुभद्रो चौधरी
Subhadro Chowdhury

चंडी मुखर्जी
Chandi Mukherjee

एल. वैद्यनाथन
L Vaidyanathan

वाणी श्री
Vani Shree

प्रीति सागर
Preeti Sagar

शताब्दी रॉय
Shatabdi Roy

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन निर्णायक मंडल JURY FOR BEST WRITING ON CINEMA

शोमा ए. चटर्जी
Shoma A. Chatterjee

रउफ़ अहमद (अध्यक्ष)
Rauf Ahmed (Chairman)

उत्पल बोड़पुजारी
Utpal Borpujari

गैर-कथाचित्र निर्णायक मंडल

JURY FOR NON-FEATURE FILMS

ए.के. बीर (अध्यक्ष)
A.K. Bir (Chairman)

कादम्बरी चिन्तामणि
Kadambari Chintamani

वासिराजू प्रकाशम
Vasiraju Prakasam

सुदीश गोपालकृष्णन
Sudhish Gopalakrishnan

सुप्रियो सेन
Supriyo Sen

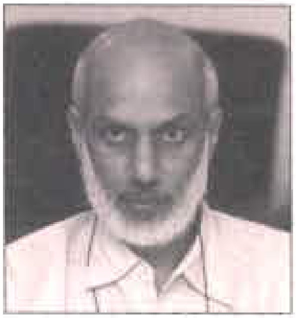

प्रसन्न जैन
Prasann Jain

पुष्पेश पन्त
Pushpesh Pant

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

Dada Saheb Phalke Award

ढुंढीराज गोविन्द फाल्के (बायें)
Dhundiraj Govind Phalke (Left)

ABOUT DADA SAHEB PHALKE AWARD

The prestigious and top most award of Indian cinema is named after the father of Indian cinema Dhundiraj Govind Phalke. He is credited with making the first ever Indian feature film in the year 1913. Beginning with Raja Harishchandra, Dadasaheb Phalke, as he was popularly called, went on to make 95 movies and 26 short films in a span of 19 years until 1932.

To honour this enterprising film personality, the Dadasaheb Phalke award was introduced in the year 1969 with a view to recognize the contribution of film personalities towards growth and development of Indian cinema. The first award was presented to the renowned actress and pioneer of studio system in India, Devika Rani.

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार

भारतीय सिनेमा का सर्वोत्तम पुरस्कार भारत में सिनेमा के जनक माने जाने वाले ढुंढीराज गोविन्द फाल्के के नाम से सुशोभित है।

'राजा हरीश्चन्द्र' से फिल्मी जीवन का प्रारंभ करने वाले दादा साहेब फाल्के ने 1932 तक, 19 वर्षों में 95 फिल्में तथा 26 लघु फिल्में बनाई।

दादा साहेब फाल्के के सम्मानार्थ यह नामित पुरस्कार सन् 1969 में पहली बार प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा स्टूडियो तंत्र की प्रतिपादक देविका रानी को प्रदान किया गया। प्रत्येक वर्ष भारतीय सिनेमा के उत्पादन और विकास के लिए आजीवन काम करने वाले व्यक्ति को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

दादा साहेब फाल्के पुरस्कार विजेता 2004

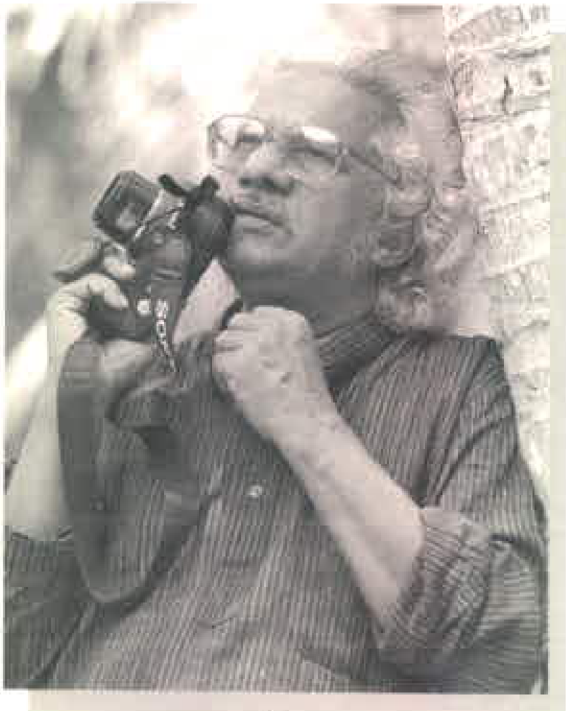

अदूर गोपालकृष्णन

Adoor Gopalakrishnan

केरल में फिल्म सोसाइटी आन्दोलन के जनक तथा नवभारतीय सिनेमा के अग्रणी प्रकाशपुंज अदूर गोपालकृष्णन का जन्म सन् 1941 में केरल की शास्त्रीय नृत्य कला कथकली के संरक्षक परिवार में हुआ। उन्होंने आठ वर्ष की छोटी आयु से ही अव्यवसायी मंच पर अभिनय प्रारम्भ किया। अपने विद्यार्थी जीवन में उन्होंने अनेक नाटकों का लेखन और मंचन किया। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे के स्नातक अदूर गोपालकृष्णन ने नौ फीचर फिल्मों तथा दर्जनभर वृत्तचित्रों का निर्माण किया है।

उनकी फिल्म स्वयंवरम् को राष्ट्रीय पुरस्कारों में सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सर्वश्रेष्ठ छायांकन तथा सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इसके बाद निर्मित उनकी प्रत्येक फिल्म को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। अदूर गोपालकृष्णन दो बार सर्वश्रेष्ठ कथाचित्र, चार बार सर्वश्रेष्ठ निर्देशक तथा तीन बार सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखन का सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। उनकी फिल्मों में कार्यरत अभिनेता, अभिनेत्री तथा तकनीशियन भी अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। उनकी तीसरी फिल्म **ऐलीपथ्यम** ने सन् 1982 में "सर्वाधिक मौलिक तथा कल्पनाशील कथाचित्र" वर्ग में विशिष्ट ब्रिटिश फिल्म इन्स्टीट्यूट पुरस्कार प्राप्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म आलोचकों द्वारा आयोजित फिप्रेस्की पुरस्कार उनकी छह फिल्मों **मुखामुखम, अनन्तरम, मथिलुकल, विधेयन, कथापुरुषन** तथा **निड़लकुथ्थू** को लगातार प्राप्त हुए हैं। अन्य अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों जैसे– यूनिसेफ फिल्म पुरस्कार (वेनिस), ओ.सी.आई.सी फिल्म पुरस्कार (एमियन्स), इण्टरफिल्म पुरस्कार, (मनहाइम) आदि से सम्मानित इस फिल्मकार की फिल्मों का प्रदर्शन विश्व के प्रत्येक महत्वपूर्ण फिल्म समारोह में हो चुका है। रॉटरडैम फिल्म समारोह में उनकी पिछली फिल्म **निड़लकुथ्थू** (शैडो किल) का चयन मानवाधिकारों के संवेदनशील प्रस्तुतीकरण के कारण एमनेस्टी–डॉयन पुरस्कार के लिए हुआ।

सन् 1984 में भारतीय सिनेमा में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्श्री से सम्मानित किया गया। उनके निबंधों के संकलन, "द वर्ल्ड ऑफ सिनेमा" को सन् 1984 में सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार प्राप्त हुआ। केरल राज्य पुरस्कार से सम्मानित, उनकी नई पुस्तक, *"दि एक्सपीरियन्स ऑफ सिनेमा"* कला तथा फिल्मकर्म पर आधारित लेखों का संकलन है। उनकी सिनेमा पर तीसरी पुस्तक, फिल्म, *लिट्रेचर एण्ड लाइफ* का हाल ही में प्रकाशन हुआ है।

सन् 2002 में वाशिंगटन के स्मिथसोनियन इन्स्टीटयूट ने उन के सम्पूर्ण फिल्मकर्म का सिंहावलोकन आयोजित करके सम्मानित किया तथा सिनेमाथेक ने ब्रुकलिन संगीत अकादमी, क्लीवलैंड सिनेमाथेक तथा म्यूजियम ऑफ फाइन आर्ट्स, ह्यूस्टन में विशेष श्रद्धांजलि अर्पित की। आपकी फिल्मों के अनेक सिंहावलोकन सिनेमाथेक पेरिस, ला रोशे, पेसारो, लिंकन सैंटर न्यूयार्क, फ्राइबुर्ग, एलेक्जांड्रिया, हेलसिंकी, फिगेरा द फोज, ब्रसेल्स, मैड्रिड तथा ल्यॉं आदि में आयोजित हो चुके हैं। उन्होंने अनेक निर्णायक मण्डलों – वेनिस, सिंगापुर, हवाई, एलेक्जांड्रिया, नई दिल्ली, सोची तथा शंघाई आदि में भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

उनकी सेवाओं और अन्तर्राष्ट्रीय सिनेमा मे विशिष्ट योगदान के फलस्वरूप फ्रांसिसी सरकार ने उन्हें संस्कृति में सर्वोच्च सम्मान "द कमाण्डर ऑफ दि ऑर्डर ऑफ आर्ट्स एण्ड लेटर्स" से सम्मानित किया है। उनके प्रमुख वृत्तचित्रों में से कुछ हैं– **गुरु चेंगन्नूर, यक्षगान, कृष्णन्नोत्तम, कलामण्डलमगोपी, कूडियट्टम** तथा **कलामण्डलम रामनकुट्टी नायर**। आजकल वह केरल की शास्त्रीय नृत्यकला के एक रूप मोहिनीअट्टम पर वृत्तचित्र निर्माण में व्यस्त हैं।

DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER 2004

Adoor Gopalakrishnan, one of the leading luminaries of the New Indian Cinema and pioneer of Film Society Movement in Kerala, was born in 1941 into a family that patronized Kathakali, the classical dance theatre in Kerala. He started acting on the amateur stage at the early age of eight, wrote and directed several stage plays during his student days. A graduate of FTII, Pune he has scripted and directed nine feature films and over a dozen documentaries.

His debut film **Swayamvaram** went on to win national awards for best film, best director, best cameraman, and best actress. Each film he made thereafter has brought him national and international recognition (National Award for the best film twice, best director four times, and the best script-writer three times). His films have also won his actors and technicians several national awards.

Adoor's third feature **Elipathayam** got him the coveted British Film Award for the most original and imaginative film of 1982. The International Film Critics Prize (FIPRESCI) has gone to him six times successively for **Mukhamukham, Anantram, Mathilukal, Vidheyan, Kathapurushan and Nizhalkkuthu**. Winner of international awards like UNICEF film prize (Venice), OCIC film prize (Amiens), INTERFILM Prize (Mannheim) etc, his films have been shown in every important festival around the world. His last film **Nizhalkkuthu** (Shadow Kill) was chosen for the Amnesty-Doen award for its theme exemplifying human rights at the Rotterdam film festival.

In consideration of his contribution to Indian cinema, the nation honoured him with the title of Padmashree in 1984. His collection of essays, *The World of Cinema* was given the national award for Best Book on Cinema in 1984. His new book *The Experience of Cinema* which won the Kerala State Award for the Best Book on Cinema this year, is a collection of articles dealing with the art and practice of cinema. *Film, Literature and Life* has just been published.

In 2002, the Smithsonian Institution in Washington honoured him by holding a retrospective of his complete works followed by tributes by the Cinematheque at the Brooklyn Academy of Music, Cleveland Cinematheque and the Museum of Fine Arts, Houston.

Other major retrospectives of his films include those at the Cinematheque in Paris, La Rochelle, Pesaro, Lincoln Centre-New York, Fribourg, Alexandria, Helsinki, Figuera de Foz, Brussels, Madrid, Lyons etc. He has served on the juries of Venice, Singapore, Hawaii, Alexandria, New Delhi, Sochi and Shanghai.

In recognition of his contribution to international cinema, the French Government has recently bestowed on him the esteemed title of *The Commander of the Order of Arts and Letters*, the highest French honour in culture.

He has made several documentaries on performing arts, significant among them being Guru Chengannur, Yakshagana, Krishnanattom, Kalamandalam Gopi, Koddiyettam and Kalamandalam Raman Kutty Nair. Presently he is engaged in the production of a documentary on Mohiniyattam, a classical dance form of Kerala.

DADASAHEB PHALKE AWARD DOWN THE YEARS

SR. NO.	YEAR	AWARDEE
1.	1969	Devika Rani Roerich
2.	1970	B.N. Sircar
3.	1971	Prithviraj Kapoor
4.	1972	Pankaj Mullick
5.	1973	Sulochana (Ruby Myers)
6.	1974	B. N. Reddy
7.	1975	Dhiren Ganguly
8.	1976	Kanan Devi
9.	1977	Nitin Bose
10.	1978	R. C. Boral
11.	1979	Sohrab Modi
12.	1980	P. Jairaj
13.	1981	Naushad Ali
14.	1982	L.V. Prasad
15.	1983	Durga Khote
16.	1984	Satyajit Ray
17.	1985	V. Shantaram
18.	1986	B. Nagi Reddy
19.	1987	Raj Kapoor
20.	1988	Ashok Kumar
21.	1989	Lata Mangeshkar
22.	1990	Akkineni Nageshwara Rao
23.	1991	Balachandra Govind Pendharakar
24.	1992	Dr. Bhupen Hazarika
25.	1993	Majrooh Sultanpuri
26.	1994	Dilip Kumar
27.	1995	Dr. Rajkumar
28.	1996	Shivaji Ganesan
29.	1997	Kavi Pradeep
30.	1998	B. R. Chopra
31.	1999	Hrushikesh Mukherjee
32.	2000	Asha Bhosle
33.	2001	Yash Chopra
34.	2002	Dev Anand
35.	2003	Mrinal Sen

PAST WINNERS OF SWARNA KAMAL

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
1.	Shyamchi Aai	P.K. Atre	Marathi	1953
2.	Mirza Ghalib	Sohrab Modi	Hindi	1954
3.	Pather Panchali	Satyajit Ray	Bengali	1955
4.	Kabuliwala	Tapan Sinha	Bengali	1956
5.	Do Ankhen Barah Haath	V. Shantaram	Hindi	1957
6.	Sagar Sangame	Debaki Kumar Bose	Bengali	1958
7.	Apur Sansar	Satyajit Ray	Bengali	1959
8.	Anuradha	Hrishikesh Mukherjee	Hindi	1960
9.	Bhagini Nivedita	Bijoy Basu	Bengali	1961
10.	Dada Thakur	Sudhir Mukherjee	Bengali	1962
11.	Shehar Aur Sapna	Khwaja Ahmed Abbas	Hindi	1963
12.	Charulata	Satyajit Ray	Bengali	1964
13.	Chemmeen	Ramu Kariat	Malayalam	1965
14.	Teesri Kasam	Basu Bhattacharya	Hindi	1966
15.	Hatey Bazare	Tapan Sinha	Bengali	1967
16.	Goopy Gyne Bagha Byne	Satyajit Ray	Bengali	1968
17.	Bhuvan Shome	Mrinal Sen	Hindi	1969
18.	Samskara	T. Pattabhiram Reddy	Kannada	1970
19.	Seemabaddha	Satyajit Ray	Bengali	1971
20.	Swayamvaram	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1972
21.	Nirmalyam	M.T. Vasudevan Nair	Malayalam	1973
22.	Chorus	Mrinal Sen	Bengali	1974
23.	Chomana Dudi	B.V. Karanth	Kannada	1975

Sr. No.	Film	Director	Language	Year
24.	Mrigaya	Mrinal Sen	Hindi	1976
25.	Ghatashraddha	Girish Kasaravalli	Kannada	1977
26.	No award recommended			1978
27.	Shodh	Biplab Ray Choudhri	Hindi	1979
28.	Akaler Sandhane	Mrinal Sen	Bengali	1980
29.	Dakhal	Goutam Ghose	Bengali	1981
30.	Chokh	Utpalendu Chakraborty	Bengali	1982
31.	Adi Sankaracharya	G.V. Iyer	Sanskrit	1983
32.	Damul	Prakash Jha	Hindi	1984
33.	Chidambaram	G. Aravindan	Malayalam	1985
34.	Tabarana Kathe	Girish Kasaravalli	Kannada	1986
35.	Halodhia Choraye Bodhan Kahi	Jahnu Barua	Assamese	1987
36.	Piravi	Shaji N. Karun	Malayalam	1988
37.	Bagh Bahadur	Buddhadeb Dasgupta	Hindi	1989
38.	Maruppakkam	K. S. Sethumadhavan	Tamil	1990
39.	Agantuk	Satyajit Ray	Bengali	1991
40.	Bhagavad Gita	G. V. Iyer	Sanskrit	1992
41.	Charachar	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1993
42.	Unishe April	Rituparno Ghosh	Bengali	1994
43.	Kathapurushan	Adoor Gopalakrishnan	Malayalam	1995
44.	Lal Darja	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	1996
45.	Thai Saheb	Girish Kasaravalli	Kannada	1997
46.	Samar	Shyam Benegal	Hindi	1998
47.	Vanaprastham	Shaji N. Karun	Malayalam	1999
48.	Shantham	Jayaraj	Malayalam	2000
49.	Dweepa	Girish Kasaravalli	Kannada	2001
50.	Mondo Meyer Upakhyan	Buddhadeb Dasgupta	Bengali	2002
51	Shwaas	Sandeep Sawant	Marathi	2003

कथाचित्र पुरस्कार

Awards for Feature Films

सर्वोत्तम कथाचित्र

पेज 3 (हिन्दी)

निर्माता **बॉबी पुष्कर्णा** को स्वर्ण कमल एवं 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

निर्देशक **मधुर भंडारकर** को स्वर्ण कमल एवं 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम कथाचित्र का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **पेज 3** को दिया गया है। फिल्म में समाचारपत्रों के पेज 3 के उथले संसार को निष्ठुर एवं व्यंग्यपूर्ण होते हुए भी सौम्यतापूर्वक प्रस्तुत करने का यह संश्लिष्ट एवं साहसिक प्रयास है।

BEST FEATURE FILM

PAGE 3 (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Producer **BOBBY PUSHKARNA**

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000 to the Director **MADHUR BHANDARKAR**

CITATION

The Award for the Best Feature Film of 2004 is given to Hindi film **Page 3** for a complex and daring attempt which exposes the shallow world of Page 3 in a manner which is both savagely satirical yet gently ironical.

बॉबी पुष्कर्णा

राहुल बॉबी पुष्कर्णा, प्रतिष्ठित फिल्म प्रोड्यूसर बलदेव पुष्कर्णा के पुत्र हैं।

लगभग दस वर्ष तक यूनाइटेड किंगडम में भू-व्यापार करने के पश्चात् भारत लौटे बॉबी ने फिल्म जगत में अपनी पहली फिल्म पेज 3 से अपार सफलता प्राप्त की है।

BOBBY PUSHKARNA

Rahul Bobby Pushkarna is the son of Baldev Pushkarna, a veteran film producer.

After a stint as realtor for ten years in the United Kingdom, he has returned to India to be a film producer and has been a successful one, both commercially and artistically with his first film itself.

मधुर भंडारकर

बाल्यकाल से फिल्मों में रुचि रखने वाले मधुर भंडारकर ने अस्सी के दशक में वीडियो लाइब्रेरियन के रूप में मुंबई से अपने कैरियर का प्रारंभ किया। सिनेमा में उनकी रुचि से प्रभावित हो कर उनके एक संबंधी ने उनका परिचय राम गोपाल वर्मा से कराया, जिनके साथ उन्होंने पांच वर्ष तक कार्य किया। उन्होंने अपनी पहली फिल्म **त्रिशक्ति** का 1999 में निर्माण किया और अपनी पहचान बनाई।

सन् 2001 में मुम्बई की 'डांस बार संस्कृति' पर निर्मित उनकी फिल्म **चाँदनी बार** से उनकी पहचान एक कर्मठ निर्देशक के रूप में बनी। फिल्म ने मॉस्को तथा जिंबाब्वे जैसे प्रतिष्ठित फिल्म समारोहों में पुरस्कार जीते। **चाँदनी बार** के लिये राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले मधुर भंडारकर का यह दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

MADHUR BHANDARKAR

A film buff since the time he was a teenager, in the early 80s, he started as a Video Librarian in Mumbai. His passion for cinema prompted his uncle to introduce him to the ace Director Ram Gopal Varma who he assisted for a period of five years. During this time, he learned the ropes of direction and went ahead to direct his first full length Hindi Feature Film in 1999 **Trishakti.**

Success came in the year 2001 when he directed one of the most hard hitting films based on the 'Dance Bar Culture' in Mumbai aptly titled **Chandni Bar**. This film was a revelation of sorts, a path breaking film in Indian Cinema which was lauded by Critics. **Chandni Bar** went on to win four awards at the 49th National Film Awards. It also won recognition at Film Festivals in Zimbabwe and Moscow. This is Madhur Bhandarkar's second National Award.

निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म

ग्रहणम् (तेलुगु)

निर्माता **कनकधारा क्रिएशन्स** को स्वर्णकमल एवं 25,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **मोहन कृष्ण इंद्रगंति** को स्वर्णकमल एवं 25,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2005 का निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम फिल्म का इंदिरा गांधी पुरस्कार तेलुगु फिल्म **ग्रहणम्** को एक मौलिक लघु कथा को जीवन्त रूप से पर्दे पर उतारने के लिए दिया गया है। प्रथम प्रयास में भी उनका सिनेमाई नियन्त्रण एवं शैली वैशिष्ट्य सराहनीय है।

INDIRA GANDHI AWARD FOR THE BEST FIRST FILM OF A DIRECTOR

GRAHANAM (Telugu)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Producer **KANAKDHARA CREATIONS**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to the Director **MOHAN KRISHNA INDRAGANTI**

CITATION
The Indira Gandhi Award for the Best First Film of a Director of 2004 is given to Telugu film **Grahanam** for bringing alive the original short story on screen. The cinematic control and stylistic ability displayed are truly rare for a first time filmmaker.

कनकधारा क्रिएशन्स

ग्रहणम कनकधारा क्रिएशन्स का प्रथम प्रयास है। उत्तम सिनेमा के निर्माण के लिए कटिबद्ध कनकधारा क्रिएशन्स ने **ग्रहणम्** के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की है। कनकधारा की योजना भविष्य में ऐसे कई चलचित्रों के निर्माण की है।

मोहन कृष्ण इंद्रगंति

यार्क यूनिवर्सिटी, टोरन्टो, कनाडा से फिल्म एवं वीडियो में मास्टर ऑफ फ़ाइन आर्ट्स करने से पूर्व, हैदराबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के छात्र मोहन कृष्ण एक पत्रकार एवं वृत्तचित्र निर्देशक रहे हैं। इनमें सर्वप्रमुख है स्वतन्त्रता के 50 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 1997 में दूरदर्शन द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की श्रृंखला **महान्ध्रा** (महान आन्ध्र प्रदेश)। मोहन कृष्ण ने अनेक वृत्तचित्रों का लेखन एवं निर्देशन किया है। **ग्रहणम्** इनकी पहली फीचर फिल्म है।

तेलुगु साहित्य को सिनेमाई पर्दे पर उतारने का मोहन कृष्ण का स्वप्न उन की प्रथम फीचर फिल्म ग्रहणम से साकार हुआ है।

KANAKDHARA CREATIONS

Grahanam is the first venture of Kanakdhara Creations. Passionate about producing good cinema, Kanakdhara Creations funded **Grahanam**. Kanakdhara plans to produce more such ventures in future.

MOHAN KRISHNA INDRAGANTI

A student of English literature from University of Hyderabad, Mohan Krishna has been a journalist and a documentary filmmaker before obtaining an MFA (Master of Fine Arts) in Film and Video from York University, Toronto, Canada. He has worked as a writer and director for a number of documentaries. The most prominent of these was **Mahandhra** (The Great Andhra), a documentary series produced on the occasion of 50 years of independence by Doordarshan in 1997.

Grahanam is his first full length feature and the realization of his long-cherished dream of adapting Telugu literature to film.

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म

वीर ज़ारा (हिन्दी) एवं ऑटोग्राफ़ (तमिल)

निर्माता **यशराज फिल्म्स** एवं **चेरन** प्रत्येक को स्वर्णकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **यश चोपड़ा** एवं **चेरन** प्रत्येक को स्वर्णकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार **वीर ज़ारा** एवं **ऑटोग्राफ** को संुयक्त रूप से दिया गया है।

वीर ज़ारा को यह पुरस्कार प्रेमकथा के मार्मिक चित्रण द्वारा मानव–निर्मित सीमाओं से ऊपर मानवीय संबंधों के महत्व को प्रतिपादित करने के लिए दिया गया है।

एवं

ऑटोग्राफ को यह पुरस्कार गृह–विरह के सशक्त किन्तु विशिष्ट काव्यात्मक प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

BEST POPULAR FILM PROVIDING WHOLESOME ENTERTAINMENT

VEER ZAARA (Hindi) and AUTOGRAPH (Tamil)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 each to the Producers **YASHRAJ FILMS (P) LTD.** AND **CHERAN**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 20,000 each to the Directors **YASH CHOPRA** AND **CHERAN**

CITATION

The Award for the Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment of 2004 is shared by **Veer Zaara** and **Autograph.**

The Award is given to **Veer Zaara** for invoking a touching tale of love highlighting the importance of human relationship above man-made boundaries.

and

Autograph for invoking nostalgia in a manner that is powerful yet poetic.

यश चोपड़ा

निःसंदेह यश चोपड़ा भारत के जाने–माने एवं सफलतम फिल्मकारों में से एक हैं। पांच दशक तक फैले अपने फिल्मी जीवन में उन्होंने 30 फिल्मों का निर्माण किया है। इन में से अधिकतम व्यावसायिक दृष्टि से सफलता का इतिहास रच चुकी हैं। अपने बड़े भाई बी.आर. चोपड़ा के सहायक के रूप में अपने फिल्मी जीवन की शुरुआत करते हुए उन्होंने पांच फिल्मों, **धूल का फूल** (1959), **धर्मपुत्र** (1961), **वक्त** (1965), **इत्तेफाक** (1969) तथा **आदमी और इंसान** (1969) का निर्देशन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने दूसरे बैनरों के लिए भी चार प्रसिद्ध फिल्मों का निर्माण किया। ये थीं – **जोशीला** (1973), **दीवार** (1975), **त्रिशूल** (1978) तथा **परम्परा** (1993)। उनका विशेष कार्य उनकी अपनी सन् 1970 में स्थापित कंपनी यशराज फिल्मस् की 27 फिल्में हैं। इन में से 12 उन्होंने स्वयं निर्देशित की हैं तथा अन्य 15 युवा फिल्मकारों ने उनकी देख–रेख में निर्देशित की हैं।

भारतीय सिनेमा की सेवा तथा योगदान के कारण वे भारत सरकार द्वारा पद्मश्री, पद्म भूषण तथा फिल्म जगत के सर्वश्रेष्ठ सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

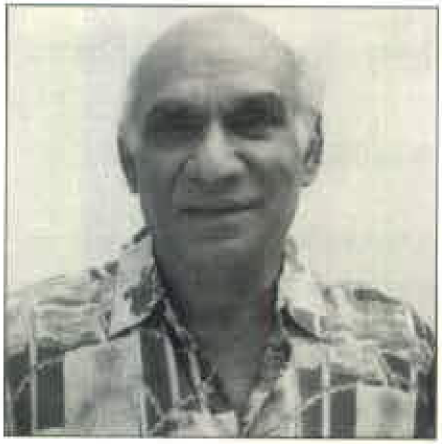

YASH CHOPRA

Yash Chopra is undoubtedly India's most successful film-maker. With a career spanning over five decades, he has been associated with almost 30 films, some of which have created box-office history.

He started out as an assistant to his brother B.R. Chopra and went on to direct 5 very successful films for his brother's banner – B.R. Films. These were **Dhool Ka Phool** (1959), **Dharmaputra** (1961), **Waqt** (1965), **Ittefaq** (1969) and **Aadmi Aur Insaan** (1969). He has wielded the baton, additionally, for four films made by other film companies – **Joshila** (1973), **Deewaar** (1975), **Trishul** (1978) and **Parampara** (1993). His greatest repertoire of work though has been 27 films made under the auspices of his own company, Yash Raj Films, established in 1970. Of these 27 films, he has directed 12 himself, while the other 15 have been directed by younger directors – under his supervision and administrative acumen as one of India's greatest producers.

In recognition of his services to Indian Cinema, he was bestowed with the highest honour in cinema by the Government of India, the Dada Saheb Phalke Award.

चेरन

चेन्नई के सुप्रसिद्ध निर्माता–निर्देशक चेरन समकालीन तमिल सिनेमा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। अनेक कठिनाइयों के बाद सन् 2001 में चेरन ने अपनी कंपनी, 'ड्रीम थिएटर' का निर्माण किया। आटोग्राफ इस कम्पनी की पहली फिल्म है। सन् 2004 में प्रदर्शित इस फिल्म ने व्यावसायिक और आलोचनात्मक सफलता दोनों की चरमसीमा को प्राप्त किया। निर्माता–निर्देशक चेरन सिनेमा को सामाजिक परिवर्तन का यंत्र मानते हैं।

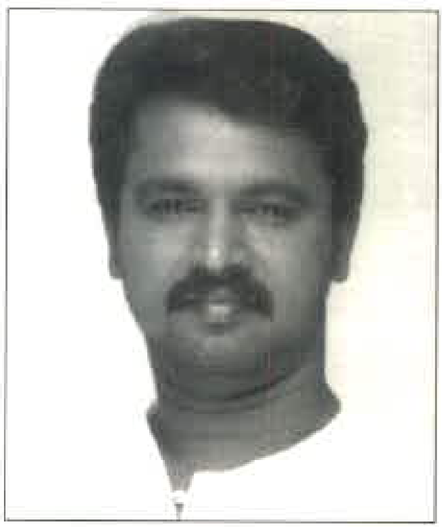

CHERAN

Cheran is a renowned Producer and Director from Chennai. He set up his production house 'Dream Theatre' in 2001, with great perseverance and hard work.

Autograph is the first release of Dream Theatre. The film was released in 2004. Instantly, it found great commercial success and won critical acclaim, a rare feat for any movie.

Cheran believes cinema is an important tool for social change.

राष्ट्रीय एकता संबंधी सर्वोत्तम कथाचित्र के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस–द फॉरगॉटन हीरो (हिन्दी)

निर्माता **सहारा इंडिया मीडिया कम्युनिकेशन्स लिमिटेड** को रजत कमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **श्याम बेनेगल** को रजत कमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्तम कथाचित्र का नरगिस दत्त पुरस्कार हिन्दी फिल्म **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस– द फॉरगॉटन हीरो** को दिया गया है। नेताजी आधुनिक भारत के अग्रणी व्यक्तित्व हैं। राष्ट्र के स्वतंत्रता के महान उद्धेश्य के लिये वे एक आदर्शवादी से क्रांतिकारी बन गये। फिल्म इस काल का अत्यंत प्रभावी रूप से चित्रण करती है।

NARGIS DUTT AWARD FOR BEST FEATURE FILM ON NATIONAL INTEGRATION

NETAJI SUBHASH CHANDRA BOSE-THE FORGOTTEN HERO (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **SAHARA INDIA MEDIA COMMUNICATION LTD.**
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 30,000 to the Director **SHYAM BENEGAL**

CITATION

The Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration of 2004 is given to the film **Netaji Subhash Chandra Bose-The Forgotten Hero**. Netaji is one of the leading of the figures of modern Indian History. From an idealistic cheracter he turned into a revolutionary to achieve his goal - freedom for his country. This film efficiently brings alive this era.

सहारा इंडिया मीडिया कम्युनिकेशन

दर्शकों को उत्कृष्ट मनोरंजन से उत्प्रेरित करने तथा भारत के नये सिनेमाई भविष्य के सृजन के उद्देश्य से सहारा–1 मोशन पिक्चर्स का जन्म हुआ। आज भारत के प्रमुख स्टूडियो, निर्माता तथा वितरकों में यह कंपनी अग्रणी है।

श्याम बेनेगल

भारतीय नवीन सिनेमा के द्योतकों में से एक श्याम बेनेगल का नाम उनकी पहली फिल्म 'अंकुर' के साथ ही देश के प्रख्यात फिल्मकारों के साथ जुड़ गया था। उनकी फिल्में देश–विदेश के फिल्म समारोहों में पिछले तीस वर्षों से प्रदर्शित होती रही हैं। उनकी फिल्में विभिन्न कथावस्तुओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने के साथ समसामयिक भारतीय जनजीवन पर आधारित रही हैं..... विकास से जुड़ी समस्याएं, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन उनकी फिल्मों में एक तार स्वरूप कई स्तरों पर चित्रित हुए हैं।

श्याम बेनेगल के नाम के साथ फिल्म कर्म का एक अपार इतिहास जुड़ा है। 24 फीचर फिल्मों, अनेक वृत्त चित्रों, टेलीविजन सीरिज़ आदि का निर्माण कर चुके, श्याम बेनेगल पद्मश्री तथा पद्म भूषण से सम्मानित हैं। इसके अतिरिक्त वे अनेकों राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

SAHARA ONE MOTION PICTURES

Sahara-One Motion Pictures, India's biggest motion pictures studio, is driven by the desire to delight audiences with quality content and to change and shape the cinematic future of India. Sahara-One Motion Pictures is India's largest studio, producing quality movies,undertaking distribution, marketing, acquiring and promoting content that it believes will be loved by the masses.

SHYAM BENEGAL

One of the pioneers of the new cinema in India, Shyam Benegal has been considered one of the leading filmmakers of the country ever since his first feature film, **Ankur** was released. His films have been seen and acclaimed widely in India and at International film festivals for the last three decades. The core subjects of his films have been varied in nature but mainly centered around contemporary Indian experience. Problems of development, social and cultural change appear on many levels as a continuing thread in practically all his films.

The Government of India has conferred on him two of its most prestigious awards– Padma Shri (1976) and Padma Bhushan (1991).

He has behind him 24 fiction features for Cinema, several documentaries and TV series including **Bharat Ek Khoj** on the history of India.

Practically all his films have won national awards and several of them have been awarded internationally. Shyam Benegal runs a film production company in Mumbai.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

हसीना (कन्नड़)

निर्माता **चिगुरु चित्र** को रजत कमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **गिरीश कासरवल्ली** को रजत कमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार कन्नड़ फिल्म **हसीना** को दिया गया है। फिल्म में मुस्लिम समाज में व्याप्त महिला एवं बालिका उत्पीड़न की सामाजिक बुराइयों का प्रभावशाली चित्रांकन है।

BEST FILM ON FAMILY WELFARE

HASINA (Kannada)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Producer **CHIGURU CHITRA**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000 to the Director **GIRISH KASARAVALLI**

CITATION
The Award for the Best Film on Family Welfare of 2004 is given to the film **Hasina**. The film effectively brings to the fore the status of women and girl child in Muslim community.

चिगुरु चित्र

कन्नड़ भाषा में सामाजिक रूप से सार्थक सिनेमा बनाने के उद्देश्य से चिगुरु चित्र की स्थापना सन् 2004 में की गई। **हसीना** चिगुरु चित्र की पहली फिल्म है। चिगुरुचित्र के अध्यक्ष आई. एम. विट्ठल मूर्ति पहले भी दो कन्नड़ फीचर फिल्मों **कानूरू हेग्गादिथि** तथा **मतदान** के कार्यकारी निमार्ता रह चुके हैं। **कानूरू हेग्गादिथि** ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता स्वर्गीय कुवेंपु के उपन्यास पर आधारित है। इस फिल्म के निर्देशक ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता गिरीश कर्नाड हैं। फिल्म **मतदान** प्रसिद्ध लेखक एस. एल. बायरप्पा के उपन्यास पर आधारित थी और इस के निर्देशक टी.एन. सीताराम थे। दोनों ही फिल्मों ने राष्ट्रीय तथा अनेकों राज्य स्तरीय पुरस्कार अर्जित किए हैं।

CHIGURU CHITRA

Chiguru Chitra was formed in 2004, with the intention of producing meaningful cinema and to enrich the tradition of socially relevant films in Kannada. **Hasina** is their maiden venture.

I.M. Vittala Murthy has been the consulting producer for two Kannada Feature Films viz. **Kanooru Heggadithi** and **Mathadana.** Kanooru Heggadithi was based on the novel written by the Jnanapeeth Award Winner Late Shri Kuvempu and was directed by another Jnanapeeth Award Winner Girish Karnad. **Mathadaana** was based on the novel written by well known writer S.L. Byrappa and directed by T.N. Seetharam. Both these feature films have won National Level Awards in addition to many more state/local awards.

गिरीश कासरवल्ली

समकालीन भारतीय सिनेमा के अग्रणी नामों में से एक है। 1975 में कन्नड़ फिल्म **घटश्राद्ध** से अपने कैरियर का प्रारम्भ करने वाले गिरीश कासरवल्ली ने तीन दशकों में नौ फिल्मों का निर्देशन किया है। उनकी फिल्में अनेक अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित, सम्मानित एवं पुरस्कृत हुई हैं। **घटश्राद्ध, तबर्णा कथे, ताई साहेब** एवं **द्वीप** इनकी मुख्य फिल्में हैं। गिरीश अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडलों के सदस्य एवं अध्यक्ष रह चुके हैं।

GIRISH KASARAVALLI

One of the leading names in contemporary Indian cinema. Started his career with Kannada Cinema in 1975. In the next three decades he made nine films. Girish has won the Swarna Kamal at National Film Awards four times and Rajat Kamal four times. His films have been screened at many International Film Festivals. **Ghatashraddha**, **Tabarana Kathe**, **Thai Saheba, Dweepa** are his notable films. He has served regularly on many national and international film juries.

मद्यनिषेध, महिला तथा बाल कल्याण, दहेज विरोधी, नशीले पदार्थों से हानियाँ, विकलाँग कल्याण आदि जैसे अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म

पेरुमढ़कालम् (मलयालम)

निर्माता **सलीम पडियत** को रजतकमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **कमल** को रजतकमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का अन्य सामाजिक मुद्दों पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मलयालम फिल्म **पेरुमढ़कालम** को एक जटिल विषय का भावपूर्ण चित्रण करने के लिए दिया गया है। फिल्म के मुख्यपात्र भारतीय नारी के आत्म त्याग, क्षमाशीलता, तितिक्षा आदि पारम्परिक मूल्यों का प्रतिपादन करते हैं।

BEST FILM ON OTHER SOCIAL ISSUES SUCH AS PROHIBITION, WOMEN AND CHILD WELFARE, ANTI-DOWRY, DRUG ABUSE, WELFARE OF THE HANDICAPPED ETC.

PERUMAZHAKKALAM (Malayalam)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **SALIM PADIYATH**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **KAMAL**

CITATION

Award for the Best Film on Other Social Issues Such as Prohibition, Women and Child Welfare, Anti-dowry, Drug Abuse, Welfare of the Handicapped etc. of 2004 is given to **Perumazhakkalam** for its deft handling of a complex, sensitive issue in a very sensitive manner. The central characters in the film reflect the traditional virtues of the Indian women, such as self-sacrifice, endurance and forgiveness, to bring two communities together.

सलीम पडियत

सलीम पडियत का जन्म सन् 1958 में केरल राज्य के प्रसद्धि ऐतिहासिक शहर कोड्डुमगल्लूर में हुआ। वाणिज्य में स्नातक सलीम, पिछले 12 वर्षों से प्रख्यात फिल्मकारों कमल तथा एम. टी. वासुदेवन नायर के साथ लगभग 25 फिल्मों में सह–निर्देशक के रूप में कार्य कर चुके हैं। उन्होंने मोहम्मद अब्दुर रहमान साहिब की जीवनी पर एक वृत्तचित्र **शेरे–मलाबार** बनाया। इसके अतिरिक्त वे कई लघु चित्र तथा एडवरटाइजिंग फिल्में बना चुके हैं।

सलीम पडियत ने अपनी पहली फिल्म **घराक्षंगल** के निर्देशन के लिए सन् 2000 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया। **पेरूमड़क्कालम** उनकी दूसरी फीचर फिल्म है।

कमल

देश–विदेश में फैले मलयाली समाज के लिए निर्देशक कमल एक परिचित नाम है। प्रसिद्ध निर्देशकों पी.एन. मैनन, के.एस. सेतुमाधवन तथा भारतन के सहायक के रूप में काम कर चुके कमल ने निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म **मिज़ीनीर पूक्कल** (1986) से अपनी अलग पहचान बनाई। तब से कमल 32 सफल फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। **मंजू पोलुरु पेनकुट्टी** तथा **पेरुमड़क्कालम** उनकी दो वर्तमान फिल्में हैं। **पेरुमड़क्कालम** को मातृभूमि फिल्म पुरस्कारों में ग्यारह पुरस्कारों (सर्वश्रेष्ठ निर्देशक तथा सर्वश्रेष्ठ फिल्म सहित) से सम्मानित किया जा चुका है। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार के अतिरिक्त सात केरल फिल्म क्रिटिक्स पुरस्कार तथा छः एशियानेट फिल्म पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

SALIM PADIYATH

Salim Padiyath was born in 1958 in Kodungallur, a historic town of Kerala. A commerce graduate, he has during the past twelve years , worked as associate director with prominent film directors such as Kamal and M.T. Vasudevan Nair for about 25 films. He directed a documentary Sher-e-Malabar on freedom – fighter Mohamed Abdur Rahiman Sahib. He has also directed a few short films and Ad films.

Gharaksharangal, which he wrote and directed all by himself, is his first feature film. This movie bagged the National Award for the Best Children's Movie for the year 2000. **Perumazhakkalm** is his second feature production.

KAMAL

Kamal is a well known director among the Malyali community around the world. Working with his mentors P.N. Menon, K.S. Sethumadhavan and Bharathan as Assistant Director moulded him into a director and gave the finishing touches before he debuted as a director in the production of **Mizhineer Pookkal** (1986). Starting with **Mizhineer Pookkal**, has directed 32 other movies, the latest being **Manjupoloru Penkutty** and **Peruumazhakkalam**. Winner of several State Awards, Kamal is identified with mainstream cinema.

Perumazhakkalam is his recent feature film. This film has already bagged eleven awards in Mathrubhumi Film Awards, including Best Director and Best Film, Seven Kerala Film Critics Awards including Best Film and Best Director and six Asianet Film Awards including Best Director, besides the coveted National Award.

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म

देवराई (मराठी)

निर्माता **वाई.एन.ओक** को रजतकमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **सुमित्रा भावे** एवं **सुनील सुक्थांकर** को रजतकमल एवं 15,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मराठी फिल्म **देवराई** को दिया गया है। इस अव्यवस्थित संसार में पर्यावरण संरक्षण एवं परिरक्षण के महत्व की चर्चा तो है किंतु पूर्वजों द्वारा बनाए मिथकों से सीखने का प्रयत्न नहीं। फिल्म बिना किसी निर्णय, भेदभाव या निन्दा के प्रत्येक को इस बात पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है।

BEST FILM ON ENVIRONMENT CONSERVATION/PRESERVATION

DEVRAI (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **Y.N. OAK**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- each to the Directors **SUMITRA BHAVE and SUNIL SUKTHANKAR**

CITATION

Award for the Best Film on Environment Conservation/Preservation of 2004 is given to the Marathi film **Devrai**. In this chaotic world, when every body talks about the importance of environment, conservation and preservation but no body cares to learn from the wisdom of myth created by our forefathers, the film creates space for every mind to realize its potential without judging, discriminating or condemning.

यशवंत नरहरि ओक

पुणे विश्वविद्यालय से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक यशवंत नरहरि ओक सिज़ोफ्रेनिया अवेयरनेस एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं। सन् 1998 से इस क्षेत्र में कार्यरत ओक ने मानसिक स्वास्थ्य तथा पर्यावरण संरक्षण पर फिल्म बनाने के उद्देश्य से फिल्म **देवराई** का निर्माण किया।

सुमित्रा भावे

सुमित्रा भावे ने राजनीति विज्ञान तथा समाजशास्त्र में पुणे विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात् उन्होंने टाटा समाज विज्ञान संस्थान, मुम्बई से समाज सेवा में भी स्नातकोत्तर शिक्षा भी प्राप्त की। 10 वर्ष तक समाज सेवा शिक्षण करने के बाद कम्युनिटी एंड स्पॉन्सरशिप प्रोग्राम, मुम्बई में प्रोजेक्ट डायरेक्टर के पद पर कार्य किया।

इनका प्रथम वृत्तचित्र **बाई** एक दलित महिला के जीवन पर आधारित था। इस वृत्तचित्र के लिए इन्हें सन् 1985 में रजत कमल प्रदान किया गया। तब से सुमित्रा भावे अपने साथी फिल्मकार सुनील सुक्थांकर के साथ पांच फीचर, 32 वृत्तचित्र तथा 26 एपीसोड का एक टी.वी. धाराविक बना चुकी है।

सुनील सुक्थांकर

बी.एम.सी.सी., पुणे से वाणिज्य में स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद सुनील सुक्थांकर ने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से फिल्म निर्देशन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। सुमित्रा भावे के साथ मिलकर फिल्में बनाने के अतिरिक्त सुनील एक विशिष्ट रंगकर्मी के रूप में भी जाने जाते हैं।

Y.N. OAK

Yashwant Narhari Oak is the President and member of the Executive Committee of Schizophrenia Awareness Association, a public trust working in the field of mental illness. He is also the Secretary of Vishwasetu Association, an organization for N.R.I.s and the local NGOs working in the field of Community Service.

SUMITRA BHAVE

Sumitra Bhave completed her graduation from Ferguson College and Masters in Sociology and Political Science from University of Poona. She went on to further take another Masters in Social Work from the Tata Institute of Social Sciences, Mumbai.

After ten years of teaching social work in Karve Institute of Social Service, Pune she was the Project Director of Community Aid and Sponsorship Program, Mumbai.

She worked in the field of women's research as the Director of Research Project Stree Vani for ten years and felt it necessary to use the audiovisual medium to express her research findings before illiterate audience. Her first documentary film **Bai** based on a case study of a Dalit slum dweller woman won President's Rajat Kamal as the best Social Welfare film in 1985. Since then Sumitra Bhave along with Sunil Sukthankar, has made five feature films, 32 documentaries and a TV serial of 26 episodes.

SUNIL SUKTHANKAR

Sunil Sukthankar a commerce graduate from BMCC, Pune did his post graduation in Film Direction from the Film & Television Institute of India. As a theatre activist he has written and directed a number of plays and street plays, apart, from several feature films.

सर्वोत्तम बाल फिल्म

छुटकन की महाभारत (हिन्दी)

निर्माता **भारतीय बाल चित्र समिति** को स्वर्णकमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **संकलप मेश्राम** को स्वर्णकमल एवं 30,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम बाल का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **छुटकन की महाभारत** को दिया गया है। यह फिल्म एक बच्चे की काल्पनिक कहानी है जिसके सपने अचानक सच होने लगते हैं। एक तूफान उठ खड़ा होता है जब गाँव में एक नौटंकी महाभारत का नाटक खेलने आती है। कौरव और पांडव योद्धा युद्ध आरम्भ होने से पहले ही अपने भेदभाव भूलकर मित्र बन जाते हैं।

BEST CHILDREN'S FILM

Chutkan Ki Mahabharat (Hindi)

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Producer **CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 30,000/- to the Director **SANKALP MESHRAM**

CITATION

The Award for the Best Children's Film of 2004 is given to the Hindi film **Chutkan Ki Mahabharat**. The film is phantasanagoric story of a boy whose dreams start coming true suddenly. All hell breaks loose when a Nautanki comes to village to play Mahabharata and suddenly its story changes. The warring Kaurvas and Pandavas bury their differences and become friends even before the war has begun.

भारतीय बाल चित्र समिति

भारतीय बाल चित्र समिति की स्थापना 1955 में हुई। संस्था बच्चों की फिल्मों के निर्माण, वितरण, प्रदर्शन एवं उन्नयन में कार्यरत है। समिति भारत तथा विदेश में बच्चों की फिल्मों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सी.एस.एफ.आई. द्वारा निर्मित फिल्में अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी हैं।

CHILDREN'S FILM SOCIETY OF INDIA (CFSI)

CFSI was established in 1955 to provide value-based entertainment to children through the medium of films. The organization is engaged in production, acquisition, distribution, exhibition and promotion of children's films.

The Society is committed to spreading and encouraging the children's film movement in India and abroad.

संकल्प मेश्राम

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से फिल्म सम्पादक के रूप में प्रशिक्षित संकल्प मेश्राम दस वर्षों से फिल्म निर्देशन एवं सम्पादन का कार्य कर रहे हैं। इन्हें वर्ष 2000 में गैरकथाचित्र वर्ग में सर्वोत्तम सम्पादन का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

कामनवेल्थ गेम्स 2002 के अवसर पर मान्चेस्टर में आयोजित सेन्सराउन्ड शो में स्पिरिट ऑफ फ्रेंडशिप मनाने के लिए ब्रिटिश फिल्म निर्देशकों के साथ संकल्प को भी आमन्त्रित किया गया था।

निर्देशन के रूप में **छुटकन की महाभारत** इनका प्रथम प्रयास है।

SANKALP MESHRAM

Sankalp Meshram, a trained Film Editor from FTII, Pune has been working for ten years as a Film Maker and Editor in Mumbai. He received the National Award for Best Editing in the non-feature film category in the year 2000.

He was also invited to England to collaborate with some British Filmmakers for the Sensurround Show held in Manchester in May 2002 to celebrate the Spirit of Friendship Festival on the occasion of the Commonwealth Games, 2002.

Chutkan Ki Mahabharat is his debut feature.

सर्वोत्तम निर्देशन

बुद्धदेव दासगुप्ता

निर्देशक **बुद्धदेव दासगुप्ता** को स्वर्ण कमल एवं 50,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार **बुद्धदेव दासगुप्ता** को बंगला फिल्म **स्वपनेर दिन** के लिए दिया गया है। निर्देशक ने इस फिल्म में पश्चिम बंगाल के जटिल सामाजिक–राजनैतिक जीवन के चित्रण एवं लक्षणा का सटीक प्रयोग किया है।

BEST DIRECTION

BUDDHADEB DASGUPTA

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 50,000/- to the Director **BUDDHADEB DASGUPTA**

CITATION

The Award for the Best Direction of 2004 is given to **BUDDHADEB DASGUPTA** in the Bengali film **SWAPNER DIN** for his apt usage of metaphors and complex handling of socio political situation present in West Bengal in a language simultaneously cinematic and poetic.

बुद्धदेव दासगुप्ता

पिछले दो दशकों में अर्थशास्त्र के इस प्रोफेसर ने भारत के प्रमुख फिल्म निर्देशकों में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। उनकी फिल्मकला में काव्यात्मक शैली तथा सामाजिक रूप से सार्थक विषयों का समावेश गोचर होता है। अपनी प्रारम्भिक फिल्मों **दूरत्व** (1978), **गृहयुद्ध** (1981) तथा **अन्धीगली** (1984) से ही बुद्धदेव दासगुप्ता ने फिल्म जगत का ध्यान अपनी प्रतिभा की ओर आकर्षित किया। उनकी प्रतिभा की पूर्णता उनकी बाद की फिल्मों **फेरा** (1986), **बाघ बहादुर** (1989), **ताहादेर कथा** (1992), **चराचर** (1993), **लालदार्जा** (1996), **उत्तरा** (2000) तथा **मन्दो मेयेर उपाख्यान** (2002) में दृष्टिगोचर होती है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी बुद्धदेव दासगुप्ता ने सन् 1978 तक शिक्षण कार्य किया। तब तक उनकी पहचान एक प्रसिद्ध कवि के रूप में हो चुकी थी। उनके उपन्यास समसामयिक बंगला साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं। उनके वृत्तचित्र भी उनकी फीचर फिल्मों की भांति ही वैशिष्ट्य प्राप्त कर चुके हैं। बुद्धदेव दासगुप्ता की कर्मशैली पर तीन पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। वे देश–विदेश से अनेक सम्मान प्राप्त कर चुके हैं।

BUDDHADEB DASGUPTA

An economics professor by training, many critics consider Buddhadeb Dasgupta to be India's foremost director today. His reputation as a filmmaker rests as much on the lyrical poetry of the film as on the socially relevant themes he highlights. His films have seen him grow from strength to strength. His initial films, **Duratwa** (1978), **Grihajuddha** (1981) and **Andhi Gali** (1984) formed a triology that served to establish him as the director to look out for. That promise has been amply fulfilled in his latter body of work. **Phera** (1986), **Bagh Bahadur** (1989), **Tahader Katha** (1992), **Charachar** (1993), **Lal Darja** (1996), **Uttara** (2000) and his latest **Mondo Meyer Upakhyan** (2002)

A multi-faceted person, he continued to teach till 1978. By then he had already become a famous poet. His novels have a special place in Bengal's contemporary literature. His documentaries have been no less celebrated. Three books have already been written on him. National and international accolades have regularly come his way, and his films are prized commodities at festivals globally.

He is a filmmaker whose trademark is the pervasive humanism, visual poetry, with an economy of expression. In latter years he has moved towards a more poetic cinema, in which the camera, framing, compositions, lighting, symbolism have contributed significantly to the evocation of mood and atmosphere. In all his films, the pulse of critical humanism animates the cinematic discourse.

सर्वोत्तम अभिनेता

सैफ अली खान

अभिनेता **सैफ अली खान** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम अभिनेता का पुरस्कार **सैफ अली खान** को हिन्दी फिल्म **हम तुम** में कठिन, जटिल पात्र को उनके सरल, सहज एवं स्वाभाविक अभिनय प्रस्तुति के लिए दिया गया है।

BEST ACTOR

SAIF ALI KHAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to Actor **SAIF ALI KHAN**

CITATION
The Award for the Best Actor of 2004 is given to **SAIF ALI KHAN** in the Hindi film **HUM TUM** for his sheer ease, subtlety and spontaneity in portraying a complex and demanding role.

सैफ अली खान

1992 में प्रताप सिंह द्वारा निर्देशित **परम्परा** से अपने कैरियर की शुरुआत करके सैफ अली खान ने अभिनेता के रूप में लम्बा सफर तय किया है। सैफ प्रतिष्ठित अभिनेत्री शर्मिला टैगोर एवं भारतीय क्रिकेट के भूतपूर्व कप्तान मन्सूर अली खान पटौदी के पुत्र हैं।

अपने चौदह वर्ष के अभिनयकाल में सैफ ने अनेक चरित्र निभाए हैं। यह इनका प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार है।

SAIF ALI KHAN

Beginning his acting career with **Parampara** directed by Pratap Singh in 1992, Saif Ali Khan has come a long way as an actor. Saif is the son of noted actress Sharmila Tagore and former Indian Cricket Captain Mansur Ali Khan Pataudi.

In his acting career of 14 years, Saif has displayed a variety of shades in his acting. This is his first National Award.

सर्वोत्तम अभिनेत्री

तारा

अभिनेत्री **तारा** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम अभिनेत्री का पुरस्कार **तारा** को कन्नड़ फिल्म **हसीना** में एक युवा मुस्लिम पत्नी के अभिनय के लिए दिया है, जो अपने समाज के पारम्परिक नियमों पर प्रश्नचिह्न लगाती है। अभिनय के माध्यम से विभिन्न मनोभावों को व्यक्त करने की उनकी क्षमता प्रशंसनीय है।

BEST ACTRESS

TARA (Anuradha T.)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to Actress **TARA**

CITATION

The award for the Best Actress of 2004 is given to **TARA** in the Kannada film **HASINA** for her powerful portrayal of a young Muslim wife boldly questioning the traditional laws of her community. Her ability to convey range of various moods through her performance in a forceful manner is commendable.

तारा

तारा कन्नड़ फिल्म जगत की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। इन्हें सर्वोत्तम अभिनय के लिए तीन बार राज्य पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उन्होंने कन्नड़ के अतिरिक्त तमिल एवं तेलुगु सहित सौ से अधिक फिल्मों में अभिनय किया है। **कानुरु हेगादिथि, कोटे, क्रम, मतदान** इत्यादि इनकी मुख्य फिल्में हैं।

TARA

Tara is a leading actress of the Kannada film industry. She has won State Award for Best Actress three times. She has acted in more than a hundred films, which include films in Tamil and Telugu apart from Kannada language. Some of her notable films are **Maa Inti Katha, Kanooru Heggadithi, Kote, Krama, Mathadana** etc.

सर्वोत्तम सह–अभिनेता

हाराधन बनर्जी

सह–अभिनेता **हाराधन बनर्जी** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम सह–अभिनेता का पुरस्कार **हाराधन बनर्जी** को बंगला फिल्म **क्रान्तिकाल** में एक असहाय एवं शय्याग्रस्त संभ्रात वृद्ध की सशक्त भूमिका के लिए दिया है।

BEST SUPPORTING ACTOR

HARADHAN BANERJEE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Supporting Actor **HARADHAN BANERJEE**

CITATION

The Award for the Best Supporting Actor of 2004 is given to **HARADHAN BANERJEE** in the Bengali film **KRANTIKAAL** for his subtle yet powerful performance in an understated portrayal of a helpless bedridden old royal.

हाराधन बनर्जी

आयु के नवें दशक में प्रवेश कर चुके हाराधन बनर्जी अभिनय के क्षेत्र में लगभग 60 वर्षों से अपना लोहा मनवा चुके हैं। सत्यजीत रे के चहेते अभिनेताओं में से एक, बनर्जी ने, उनकी आठ फिल्मों में काम किया।

अभिनय के क्षेत्र में उनका प्रवेश नाट्याचार्य शिशिर कुमार भादुड़ी के सहयोग से 1940 के आस–पास हुआ। कोलकाता विश्वविद्यालय के स्नातक हाराधन बनर्जी ने अभिनय को गंभीरता से लिया। वे अबतक दो सौ फिल्मों तथा सौ नाटकों में अभिनय प्रदर्शन कर चुके हैं।

HARADHAN BANNERJEE

Octogenarian Haradhan Bannerjee has been in the acting arena for nearly six decades. One of the favourite actors of Master Director Satyajit Ray, Banerjee has performed in eight of his films.

Bannerjee was initiated into this 'Art of acting' by great thespian Natyacharya Sishir Kumar Bhaduri, in the 40s of the last century. A post graduate from Calcutta (Kolkata) University, apart from a successful Insurance professional, Haradhan took up acting seriously. He has performed in over 200 films and nearly 100 theatre productions.

सर्वोत्तम सह–अभिनेत्री

एन. शीला देवी

सह–अभिनेत्री **एन. शीला देवी** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष, 2004 का सर्वोत्तम सह–अभिनेत्री का पुरस्कार **एन. शीला देवी** को मलयालम फिल्म **अकले** में एक समुदाय के धीरे–धीरे क्षीण एवं धूमिल होने की त्रासदी को गरिमापूर्वक अभिनीत करने के लिए दिया गया है।

BEST SUPPORTING ACTRESS

N. SHEELA DEVI

Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000 to Supporting Actress **N. SHEELA DEVI**

CITATION
The Award for the Best Supporting Actress of 2004 is given to **N. SHEELA Devi** in the Malayalam film **AKALE** for the grace with which she handles the tragedy of a community that is slowly fading away.

एन. शीला देवी

त्रिचूर, केरल में जन्मी शीला दक्षिण भारत की सभी भाषाओं में 370 से अधिक फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं। राष्ट्रपति के स्वर्णपदक से पुरस्कृत फिल्म **चेमीन** में अभिनय कर चुकी, शीला लगातार पांच बार लक्स पुरस्कार की विजेता हैं।

सात बार दक्षिण भारतीय फिल्मफेयर पुरस्कार से सम्मानित शीला, सन् 1997 में स्क्रीन वीडियोकॉन लाइफ अचीवमेंट अवार्ड की भी विजेता हैं। इसके अतिरिक्त वे अनेक राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं।

N. SHEELA DEVI

Born in Trichur, Kerala Sheela has acted in more than 370 films in all South Indian languages. Five times winner of Lux Award in a row, Sheela has acted in President's Gold Medal winning film **Chemmeen**.

She has also won the South Indian Film Fare Award seven times and Screen Videocon Lifetime Achievement Award. She has won several state and national awards.

सर्वोत्तम बाल कलाकार

ओम भुतकर

बाल कलाकार **ओम भुतकर** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष, 2004 का सर्वोत्तम बाल कलाकार का पुरस्कार **ओम भुतकर** को हिन्दी फिल्म **छोटा सिपाही** में एक भोले–भाले बालक से गोआ मुक्ति आन्दोलन के देशभक्त सिपाही में रूपान्तरण को अभिनीत करने के लिए दिया गया है।

BEST CHILD ARTIST

OM BHUTAKAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Child Artist **OM BHUTAKAR**

CITATION

The Award for the Best Child Artist of 2004 is given to **OM BHUTAKAR** in the Hindi film **CHHOTA SIPAHI** for his gradual evolution from a naïve innocent young child to a patriot in the liberation movement of Goa.

ओम भुतकर

अभिनव विद्यालय पुणे, में 10 वीं कक्षा के छात्र ओम भुतकर रंगमंच तथा सिनेमा में अभिनय के क्षेत्र में सक्रिय हैं। प्रसिद्ध नाटक **अब्राह्म लिंकनचेपत्र** (मराठी) टेलीफिल्म **सखा माझा ज्ञानेश्वर** (मराठी) में काम कर चुके ओम दो फिल्मों **गाभारा** (मराठी) तथा **छोटा सिपाही** (हिन्दी) में काम कर चुके हैं।

यह राष्ट्रीय पुरस्कार उन्हें फिल्म **छोटा सिपाही** में उनके विशिष्ट अभिनय के लिए प्रदान किया जा रहा है।

OM BHUTKAR

Born in 1990, Om Bhutkar studies in Abhinav Vidyalaya, Pune. He has acted in Marathi film **Gabhara** before **Chhota Sipahi**. Besides he has acted in telefilm **Sakha Maza Dnyaneshwar** (Marathi) and play **Abraham Linkanche Patra** (Marathi).

This national award is given to Om for his excellent performance in Chhota Sipahi.

सर्वोत्तम पार्श्व गायक

उदित नारायण

पार्श्व गायक **उदित नारायण** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम पार्श्व गायक का पुरस्कार **उदित नारायण** को हिन्दी फिल्म **स्वदेश** में **'ये तारा वो तारा'** के भावपूर्ण गायन एवं स्वर सामंजस्य के लिए दिया गया है।

BEST MALE PLAYBACK

UDIT NARAYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Male Playback Singer **UDIT NARAYAN**

CITATION
The Award for the Best Male Playback Singer of 2004 is given to **UDIT NARAYAN** for the song **"Ye Tara Wo Tara"** in the Hindi film **SWADES** to honour his soulful rendition of this beautiful melody with imaging modulation.

उदित नारायण

अत्यंत सुरीले स्वर वाले उदित नारायण ने छोटी आयु से ही गायन प्रारम्भ किया। कड़े संघर्ष के बाद उदित फिल्म **'कयामत से कयामत तक'** से दर्शकों के सामने आये और कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।

20 वर्षों के कैरियर में आज वे चहेते पुरुष गायक के रूप में भारतीय सिनेमा में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। हिन्दी तथा 15 अन्य भारतीय भाषाओं में 2600 से अधिक गीत गा चुके उदित ने कुछ प्राइवेट ऐलबमों जैसे दिल **दीवाना, भजन संगम, भजन वाटिका** तथा **ये दोस्ती** आदि का भी निर्माण किया है।

ये उनका तीसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है। वे पहले **लगान** (2001) तथा **ज़िंदगी खूबसूरत है** (2002) के लिये भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

UDIT NARAYAN

Gifted with a melodious voice, Udit began singing at a very young age. Wading his way through stiff competition, Udit Narayan shot into prominence with the film **Qayamat Se Qayamat Tak**.

He never looked back. In a career span of about 20 years, he has emerged as the most prolific and popular male singer in Indian Cinema. Having sung in over 2600 Hindi films in 15 Indian languages, Udit has released several private albums like **Dil Diwana, Bhajan Sangam, Bhajan Vatika, Ye Dosti** to name a few.

This is his third national award, the earlier two being **Lagaan** (2001) and **Zindagi Khubsurat Hai** (2002).

सर्वोत्तम पार्श्व गायिका

चित्रा

पार्श्व गायिका **चित्रा** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम पार्श्वगायिक का पुरस्कार **चित्रा** को तमिल फिल्म **आटोग्राफ** में **'ओव्वोरु पूक्कलमें'** गीत के भावाभिव्यक्तिपूर्ण गायन के लिए दिया गया है। गायिका का स्वर गीत के कथन एवं चित्रण के अनुरूप सशक्त है।

BEST FEMALE PLAYBACK SINGER

CHITRA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Female Playback Singer **CHITRA**

CITATION

The Award for the Best Female Playback Singer of 2004 is given to **CHITRA** in the film **AUTOGRAPH** for expressive and soulful rendition of the song "Ovvoru Pookalume" with powerful voice throw suitable to the text and the scene.

चित्रा

संगीतज्ञों के परिवार में जन्मी चित्रा ने अपने पिता प्रसिद्ध संगीतज्ञ श्री कृष्णनन नायर के संरक्षण में संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की। कर्नाटक शास्त्रीय संगीत में स्नातकोत्तर उपाधि मिलने के साथ चित्रा ने डा. के. ओमनाकुट्टी के संरक्षण में संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। फिल्म संगीत के क्षेत्र में उन्हें एम.जी. राधाकृष्णनन की प्रसिद्ध फिल्मों से प्रवेश मिला। डा. के.जे. येसुदास के साथ संगीत समारोहों में देश–विदेश में अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत करने का अवसर उनके जीवन का निर्णायक मोड़ था।

प्रसिद्ध संगीत निर्देशकों जैसे– इलियाराजा, रवीन्द्रन, जौन्सन, श्याम जैरी अमल देव, कन्नूर राजन के निर्देशन में चित्रा की प्रतिभा को और बल मिला। तमिल फिल्मों के पार्श्व गायन में चित्रा को प्रवेश प्रसिद्ध संगीत निर्देशक इलियाराजा की फिल्म (नी ताना अन्था क्वीन) से मिला। उन्होंने पार्श्व गायन के लिए पहला राष्ट्रीय पुरस्कार इलियाराजा द्वारा संगीत निर्देशित फिल्म **सिन्धु भैरवी** के लिए प्राप्त किया। आज चित्रा हिन्दी फिल्मों के लगभग सभी प्रसिद्ध संगीत निर्देशकों जैसे–ए.आर. रहमान, अनु मलिक, संदीप चौटा, आदेश श्रीवास्तव, विशाल, राजेश रोशन और संदेश आदि के लिए पार्श्व गायन कर चुकी हैं।

वे अनेक भाषाओं में पार्श्व गायन कर चुकी हैं। सन् 1984 से उन्होंने लगभग 12 हजार फिल्मी गीत विभिन्न भारतीय भाषाओं में तथा चार हजार गैर फिल्मी गीत गाये हैं। पार्श्व गायन के लिए ये उनका छठा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

CHITHRA

Chithra was born into a family of musicians. Her father late Krishnan Nair was a well-known singer of yesteryears. Through encouragement, single-minded dedication Nair helped his daughter develop into a playback artiste.

With a Master's degree in Music and comprehensive training in Carnatic Classical Music from Dr. K. Omanakutty, Professor of Music at Kerala University under the national talent search scholarship, Chithra was initiated into the film music field by M.G. Radhakrishnan through his films like **Attahasam, Snehapurvam Meera, Nan Ekananu**, etc. The opportunity to sing with Dr. K.J. Yesudas in live concerts all over India and abroad and also for his Tharangini Cassettes was a turning point in her career.

Having worked with Music Directors like Ilayaraja, Ravindran, Johnson, Shyam Jerry Amaldev, Kannoor Rajan Chithra's talent was further nurtured. Legendary Music Director Ilayaraja gave her the big break into Tamil films through his film Nee Tana Antha Kuil. She got her first National Award for the songs in the mega-hit film **Sindhu Bhairavi** tuned by Ilayaraja. Today she sings in Hindi films also for prominent music directos like A.R. Rehman, Anu Malik, Sandip Chowta, Adesh Srivastava, Vishal, Rajesh Roshan and Sandesh etc.

Of late she has also sung in other languages like Oriya and Bengali. Since 1984 she has recorded about 12000 film songs in various Indian languages and about 4000 non-film songs.

This is her sixth National Award as female playback singer.

सर्वोत्तम छायांकन

महेश अणे

छायाकार **महेश अणे** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
फिल्म की **प्रोसेसिंग लैबोरेटरी एड लैब्स**, मुम्बई को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार **महेश अणे** को हिन्दी फिल्म **स्वदेस** में भारतीय ग्रामीण परिदृश्य को पूर्ण वास्तविकता एवं कठोरता से चित्रित करने के लिए दिया गया है।

BEST CINEMATOGRAPHY

MAHESH ANEY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Cameraman **MAHESH ANEY**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000 to Laboratory Processing the Film **ADLAB,** MUMBAI

CITATION

The Award for the Best Cinematography of 2004 is given to **MAHESH ANEY** in the Hindi Film **SWADES** for his lens that captures the rural Indian landscape with reality and harshness.

महेश अणे

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से छायांकन में स्नातक महेश अणे ने पेप्सी, बेलॉग्स, टाटा स्टील, फेवीक्विक एवं मेगी इत्यादि के लिए एक हज़ार से अधिक व्यवसायी एवं विज्ञापन फिल्मों में कार्य किया है। इनमें से कुछ को पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

महेश ने बहुप्रचलित टेलीविजन धारावाहिकों **मूवर्स एण्ड शेकर्स**, **बिन्दास बोल**, **क्या मस्ती क्या धूम** एवं **वजूद** की परिकल्पना एवं निर्देशन किया जिसके लिए इन्हें अनेक पुरस्कार मिले।

महेश की कम्पनी द्वारा **कोका कोला**, **विक्स**, **ओनिडा टीवी**, **नीविया क्रीम**, **सिन्थॉल सोप** एवं **जॉनी वाकर गोल्फ** इत्यादि विज्ञापन फिल्मों का निर्माण किया गया है। **स्वदेश** से पूर्व महेश ने भारत दाभोलकर की **गॉड ऑनली नोज** तथा अरुणा राजे की **तुम** का छायांकन किया है।

MAHESH ANEY

An FTII, Pune graduate with specialization in Cinematography. Mahesh Aney has shot for more than a thousand commercials including some award-winning for Pepsi, Kellogs, Tata Steel, Feviquick and Maggie. Mahesh has also conceptualized and directed extremely popular television show like **Movers and Shakers, Bindaas Bol, Kya Masti Kya Dhoom** and **Wajood** which have won several awards.

Mahesh runs his own production house and has produced more than fifty commercials for brands like **Coca Cola, Vicks, Onida TV, Nivea Cream, Cinthol Soap** and **Johnny Walker Golf**. He has worked as a cinematographer on films like Bharat Dabholkar's **God Only Knows** and Aruna Raje's **Tum** before doing **Swades**.

सर्वोत्तम पटकथा

मनोज त्यागी एवं नीना अरोड़ा

पटकथा लेखकों **मनोज त्यागी एवं नीना अरोड़ा** प्रत्येक को रजतकमल एवं 5,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम पटकथा पुरस्कार **मनोज त्यागी** एवं **नीना अरोड़ा** को हिन्दी फिल्म **पेज 3** एक जटिल कहानी को विलक्षण सरलता से कहने के लिए दिया गया है। यह फिल्म हमें पृष्ठ 3 के उथले संसार में ले जाती है जो हास्यपूर्ण हैं किंतु फिर भी परानुभूतिपूर्ण है।

BEST SCREENPLAY

MANOJ TYAGI & NINA ARORA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- to each Screenplay Writers **MANOJ TYAGI & NINA ARORA**

CITATION

The Award for the Best Screenplay writer of 2004 is given to Manoj Tyagi and Nina Arora in the Hindi film **PAGE 3** for telling a complex story in a stunningly simple manner. It takes you into the empty shallow world of Page 3, in a manner which is funny yet deeply empathetic.

मनोज त्यागी

वाणिज्य प्रबंधन में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद मनोज त्यागी ने पटकथा लेखन को अपने कैरियर के रूप में चुना।

सत्ता, आन, अग्निपंख, अपहरण, कर्ण, पेज 3 जैसी फिल्मों के पटकथा लेखन के बाद मनोज आज मुम्बई फिल्म जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं।

MANOJ TYAGI

Even after obtaining a Masters in Business Administration, Manoj Tyagi chose to become a screen writer.

He has written screenplays for films like **Satta, Aan, Agnipankh, Apaharan, Karna Page 3** and the under production **Corporate**. Manoj has established himself in Mumbai film industry as a screenplay writer.

नीना अरोड़ा

नीना अरोड़ा पिछले 27 वर्षों से पत्रकार के रूप में स्टारडस्ट, स्टार एंड स्टाइल, डब्ल्यु–मैगजीन फॉर वूमैन, मूवी आदि से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने अनेक विशिष्ट पत्र–पत्रिकाओं के साथ पत्रकारिता का अनुभव प्राप्त किया है।

हाल ही में उन्होंने मधुर भंडारकर की फिल्म **पेज 3** का पटकथा लेखन किया और व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर पात्रों का सटीक रूपांकरण किया। नीना कई विशिष्ट टेलीविजन कार्यक्रमों जैसे–**आयुष्मान** तथा **जस्सी जैसी कोई नहीं** के लिये लेखन कर रही हैं।

NINA ARORA

Nina Arora has been a journalist for the past 27 years and has edited magazines such as Stardust, Star and Style, W-magazine for women, Movie, she has also written for newspapers such as Mid-Day and Bombay Times. During her stint in London she wrote for International Asian publications such as India Asia, Brick – literary magazine in Canada, Khabar in Atlanta and various other publications.

Nina recently wrote the screenplay for Madhur Bhandarkar's film Page 3, the screenplay of the film largely came from her personal experiences with celebrities and film stars down the years. She is also currently writing extensively for television and doing prestigious show like Cinevista's **Ayushmaan** and **Jassi Jaisi Koi Nahin** for Sony Television.

सर्वोत्तम ध्वनि

अनूप मुखोपाध्याय तथा आलोक डे

अंतिम मिश्रित ट्रैक के लिए प्रत्येक री-रिकार्डिस्ट **अनूप मुखोपाध्याय** तथा **आलोक डे** प्रत्येक को 5,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार अनूप मुखोपाध्याय तथा आलोक डे को बंगला फिल्म **इतिश्रीकान्त** में ध्वनि के ऐसे प्रभावशाली प्रयोग के लिए दिया है जिससे फिल्म को एक अतिरिक्त विस्तार प्राप्त हुआ है।

BEST AUDIOGRAPHY

ANUP MUKHERJEE and ALOK DEY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the Re-recordist of the Final Mixed Track **ANUP MUKHERJEE** and **ALOK DEY**

CITATION

The Award for the Best Audiography of 2004 is given to Anup Mukherjee and Alok Dey for the Bengali Film **ITI SRIKANTA** for finest recordings of the sound in a superb way that lends an extra dimension to the film.

अनूप मुखोपाध्याय

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान से ध्वनि आलेखन तथा ध्वनि अभियांत्रिकी में ग्रेजुएट अनूप मुखोपाध्याय ने दूरदर्शन, एनएफडीसी और रूपायन में काम किया है। अनूप ने 250 से अधिक फिल्मों तथा वृत्त चित्रों के लिए ध्वनि आलेखन, पुनरालेखन किया।

इन्होंने सत्यजित राय, बुद्धदेव दासगुप्ता, तरुण मजूमदार, तपन सिन्हा, मृणाल सेन, अपर्णा सेन, नबेन्दु चटर्जी, गौतम घोष, डा. भाबेन्द्र नाथ सैकिया, गौतम बोरा, प्रदीप किशन, विक्टर बनर्जी, अंजन चौधरी, स्वप्न सिन्हा, बीरेश चटर्जी, सलिल दत्त और अरबिन्द मुखर्जी जैसे फिल्मकारों के साथ काम किया।

अनूप को पहले **सॉंग्स ऑफ महुलबनीर** तथा **उत्तरा** के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुका है।

ANUP MUKHERJEE

Anup Mukherjee passed out of Film and Institute of India, Pune in 1974, as Sound Designer. Since then he has worked for over 300 films. A leading sound designer, re-recordist of the country, Mukherjee holds the credit of associating himself with three to four generation of film makers, from the master filmmaker Satyajit Ray to Budhdhadeb Dasgupta to Gautam Ghosh and others.

Anup Mukherjee, has won the National award for best audiographer, two times earlier.

आलोक डे

भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से ध्वनि विज्ञान में डिप्लोमा लेने के पश्चात् आलोक ने कुछ जानीमानी संस्थाओं जैसे–आनन्द रिकोर्डिंग स्टूडियो तथा सनी सुपर साउंड आदि के साथ 15 वर्षों तक कार्य किया। इस कार्यकाल में उन्होंने कुछ प्रसिद्ध फिल्मों जैसे– अपर्णा सेन की **मिस्टर एंड मिसेज़ अय्यर**, बुद्धदेब दासगुप्ता की **मंदोमेयेर उपाख्यान**, **स्वप्नेर दिन**, अनिल शर्मा की **गदर** तथा **अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो**, चन्द्र प्रकाश द्विवेदी की **पिंजर**, विक्रम भट्ट की **ऐलान**, कुन्दन शाह की **क्या कहना** तथा **मुगले आज़म** आदि में चीफ मिक्सिंग इंजीनियर के रूप में कार्य किया।

ALOK DEY

Alok De has done Post Graduate Diploma in Sound Engineering and Sound Recording from Film and Television Institute of India, Pune in 1989. Before joining Fiesta Entertainment Pvt. Ltd. as Chief Mixing Engineer in 2004, Alok worked for Anand Recording Studio and Sunny Super Sound as Mixing Engineer. As Chief Sound Mixing Engineer, Alok has exceptional films to his credit like **Mr. & Mrs Iyer** by Aparna Sen, **Mondo meyer Upakhyan** by Buddhadeb Dasgupta, **Gadar** and **Ab Tumhare Hawale Vatan Sathiyo** by Anil Sharma, **Pinjar** by Dr. ChandraPrakash Dwivedi, **Elaan** by Vikram Bhatt, **Kya Kehna** by Kundan Shah and **Mughle-Azam**.

सर्वोत्तम संपादन

एस. सुरेश पाई

संपादन **एस. सुरेश पाई** को रजतकमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम संपादन का पुरस्कार **एस. सुरेश पाई** को हिन्दी फिल्म **पेज 3** के सुस्पष्ट एवं कुशल संपादन के लिए दिया गया है। सुरेश संपादन द्वारा फिल्म में भाव, लय, अर्थवत्ता एवं वर्णनात्मकता को बनाए रखने में सफल हुए हैं।

BEST EDITING

S Suresh Pai

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Editor **S SURESH PAI**

CITATION

The Award for Best Editing for the year 2004 is given to **S. Suresh Pai** for the Hindi film **PAGE 3** for the crisp cutting which gives a finesse to the film and successfully sustains the tempo of the film, mood and emotion while never loosing the narrative.

एस. सुरेश पाई

अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर तथा भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे से फिल्म संपादन में प्रशिक्षित सुरेश पाई सर्वश्रेष्ठ संपादन के लिए पहले भी फिल्म स्निप के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। सुरेश द्वारा संपादित कुछ अन्य फिल्में हैं– **झंकार बीट्स, ऐव्रीबडी सेज़ आईएम फाइन, रघु रोमियो, दोबारा** तथा **पेज 3** ।

S. SURESH PAI

S. Suresh Pai, a post Graduate in English literature is a qualified Film Editor from FTII, Pune. He has already won a National Award for Best Editing for the film SNIP. Pai has edited films like **Jhankar Beats, Everybody Says I Am Fine, Raghu Romeo, Dobara** and **Page 3** and many television serials.

सर्वोत्तम कला निर्देशन

समीर चन्दा

कला निर्देशन **समीर चन्दा** को रजतकमल एवं 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम कला निर्देशन का पुरस्कार **समीर चन्दा** को हिन्दी फिल्म **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस** में कला निर्देशन के माध्यम से कई राष्ट्रों में द्वितीय विश्व युद्ध काल तक का प्रभावी पुनर्निर्माण करने के लिए दिया गया है।

BEST ART DIRECTION

SAMIR CHANDA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Art Directors **SAMIR CHANDA**

CITATION
The Award for the Best Art Direction of 2004 is given to **SAMIR CHANDA** in the Hindi film **Netaji Subhash Chandra Bose** for effectively recreating the period upto the second world war period across nations.

समीर चन्दा

फाइनआर्ट्स में स्नातक समीर चन्दा पिछले 20 वर्षों से फिल्म जगत तथा एडवरटाइजिंग से जुड़े हुए हैं। एक चित्रकार और रंगकर्मी के रूप में अपना कैरियर शुरू करने वाले समीर ने धीरे-धीरे फिल्म जगत का रुख किया।

प्रसिद्ध कलानिर्देशक नितीश रॉय के नेतृत्व में लगभग 8 वर्ष काम करने के बाद उन्होंने अपने आप को कलानिर्देशक के रूप में स्थापित किया। शीघ्र ही प्रख्यात फिल्मकारों मृणालसेन, श्याम बेनेगल, गोविन्द निहालाणी, मणिरत्नम, सुभाष घई, एम.टी.वासुदेवन नायर, आदि ने उन्हें उनके योग्यता को पहचाना। समीर दो राष्ट्रीय पुरस्कारों के साथ कई अन्य पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। 45 वर्ष के समीर चन्दा श्याम बेनेगल, मणिरत्नम तथा कई अन्य युवा फिल्मकारों की फिल्मों में काम कर रहे हैं।

SAMIR CHANDA

Samir Chanda, a graduate in fine arts, has been associated with filmmaking and advertising for over 20 years now. Starting on the other side of the fence as a painter and a theater enthusiast, he migrated to the world of film making quite by accident.

Under the able leadership and guidance of renowned production designer Nitish Roy, he was given an insight into the exciting and creative world of film making for eight years. He started sailing on his own as a production designer and art director very soon. He was accepted by the great masters of Indian cinema, like Mrinal Sen, Shyam Benegal, Govind Nihalani, Mani Ratnam, Subash Ghai, M.T. Vasudevan Nair, and earned two Prestigious National Awards, Kerala State Award and several other awards. Still going strong at the age of 45 he is designing the Forthcoming Projects with veterans like Shyam Benegal, Mani Ratnam and young film makers like Rakesh Mehra and Samir Karnik.

सर्वोत्तम वेशभूषाकार

इशरत निसार एवं एम.एन. स्वामी

प्रत्येक वेशभूषाकार **इशरत निसार** एवं **एम.एन. स्वामी** को रजतकमल एवं 5,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम वेशभूषाकर का पुरस्कार **इशरत निसार** एव **एम.एन. स्वामी** को **हसीना** फिल्म में ऐसी वेशभूषा सज्जित करने के लिए दिया गया है, जिससे पात्रों में वास्वविकता का पुट आया है और उनकी विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है।

BEST COSTUME DESIGNER

ISHRATH NISSAR and M.N. SWAMI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 5,000/- each to the
Costume Designers **ISHRATH NISSAR** and **M.N. SWAMI**

CITATION

The Award for the Best Costume Designers of 2004 is given to **ISHRATH NISSAR** and **M.N. SWAMI** in the Kannada film **HASINA** for the costumes that lent a realistic feel to the characters thereby adding to their credibility.

इशरथ निसार

इशरथ निसार एक प्रख्यात पत्रकार सामाजिक कार्यकर्ता तथा लेखिका हैं। वेशभूषाकार के रूप में **हसीना** उनकी प्रथम फिल्म है।

ISHRATH NISAR

Masters in literature (Kannada), Ishrath Nisar is a journalist, social activist, writer. As a social activist she is involved with 'Samvada' an NGO working with youths and 'Spandana' a women's collective working for violence against women. Hasina is her first film as Costume Designer.

एम.एन. स्वामी

एम.एन. स्वामी कन्नड़ फिल्म उद्योग में तीन दशकों से सम्पादक के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन्हें सर्वोत्तम सम्पादन के लिए राज्य पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। इनके द्वारा सम्पादित मुख्य फिल्मों में **तबर्णा कथे, ताई साहिबा, द्वीप, भगवद्‌गीता** इत्यादि हैं। हसीना फिल्म के लिए स्वामी ने इशरत् निसार के साथ वेशभूषासज्जा का कार्य भी किया है।

M.N. SWAMY

M.N. Swamy is working as an editor for three decades in the film industry. He has also won state award for Best Editing. Films edited by him include **Tabarna Kathe, Thai Saheba, Dweepa, Bhagwat Gita.** etc.

Swamy has designed costumes for **Hasina** alongwith Ishrath Nissar.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

विद्या सागर

संगीत निर्देशक **विद्या सागर** को रजत कमल एवं 10,000/–रुपये का नकद पुरस्कार प्रशस्ति

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार **विद्या सागर** को तेलुगु फिल्म **स्वराभिषेकम्** के लिए प्रदान किया गया है। उन्होंने संगीत विशेषकर गीतों को इस प्रकार से निर्देशित किया है कि वे फिल्म के कथ्य को बल प्रदान करते हैं। उन्होंने पारंपरिक शास्त्रीय संगीत तथा भारतीय वाद्यों के माध्यम से विशेष प्रभाव का सृजन किया है।

BEST MUSIC DIRECTION

VIDYA SAGAR

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to
Music Director (Songs and Background Music Score) **VIDYA SAGAR**

CITATION

The Award for the Best Music Direction of 2004 is given to **VIDYA SAGAR** in the Telugu film **SWARABHISHEKAM.** Songs are composed as per the situation and enrich the theme of the film. From the beginning to the end he has maintained traditional classical music and used Indian acoustic instruments thus bringing out the colour and flavour of Indian music.

विद्या सागर

आन्ध्र प्रदेश के संगीतज्ञ यू. रामचन्द्र के पुत्र विद्या सागर 11 वर्ष की बाल्यावस्था में फिल्म संगीत के क्षेत्र में पदार्पण कर चुके थे। इन्होंने तमिल, तेलुगु, मलयालम एवं कन्नड भाषा की 200 से अधिक फिल्मों के लिए संगीत दिया है। विद्या सागर को अब तक अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं जैसे–सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का केरल राज्य पुरस्कार तीन बार, फिल्मफेयर पुरस्कार दो बार, टाइम्स क्रिटिक्स पुरस्कार चार बार। विद्या सागर स्वयं दस संगीत वाद्य बजा सकते हैं।

VIDYA SAGAR

Born to a Musician Composer father U. Ramachander in Andhra Pradesh, Vidya Sagar entered the Film Music scene at the tender age of 11. Having composed music for over 200 films in Telugu, Tamil, Malayalam and Kannada. Vidya Sagar went on to win several laurels. Recipient of Kerala State Award as best music director thrice, Filmfare award twice and Times critics award four times. Vidya Sagar, plays as many as 10 instruments himself.

सर्वोत्तम गीत

बी. विजय

गीतकार **बी. विजय** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम गीत पुरस्कार **बी. विजय** को तमिल फिल्म **ऑटोग्राफ** में **"ओवरु पुक्कलमें"** गीत में आशावादी भविष्य के चित्रण तथा उसकी अत्यंत भावपूर्ण रचना के लिए दिया गया है।

BEST LYRICS

B. VIJAY

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Lyricist **B. VIJAY**

CITATION

The Award for the Best Lyrics of 2004 is given to **B. VIJAY** for the song "Ovvoru Pookalume" in the Tamil film **AUTOGRAPH** for meaningful and powerful lyrics generating hope for a better future.

बी. विजय

तमिल साहित्य में स्नातकोत्तर, बाल कृष्ण विजय प्रसिद्ध कवि और गीतकार हैं। अनेकों पुरस्कार और सम्मान प्राप्त कर चुके विजय ने 600 से अधिक गीत 200 फिल्मों के लिए लिखे हैं। विजय तमिल सिनेमा के सर्वोत्तम गीतकारों में से एक हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध गीत हैं–कादल वेन्निला (**वानाथई पोले**), रईले रईले (**5 स्टार**) तथा पक पक मदपुरा (**पार्थिबन कनवु**)।

B.VIJAY

A postgraduate in Tamil literature, a celebrated poet and lyric writer, B.Vijay has won several awards.

Having written over 600 lyrics for over 200 films, Vijay is recognized in Tamil Cinema as a top notch lyricist. Some of his hit songs include 'Kathal Vennila' (Vaanathai pola), Raile Raile (5 Star), Pak Pak Madapura (Parthiban Kanavu) etc.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

जे फिलिप बी.एम. कोशी (कुट्टी)

अभिनेता **जे फिलिप बी.एम. कोशी (कुट्टी)** को रजत कमल एवं 25,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार **जे. फिलिप बी.एम. कोशी (कुट्टी)** को तमिल फिल्म **डांसर** में शारीरिक रूप से विकलांग होते हुए भी उनके अभूतपूर्व अभिनय एवं नृत्य कौशल के प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

J. PHILLIP B.M. KOSHY (KUTTY)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 25,000/- to **J. PHILLIP B.M. KOSHY (KUTTY)**

CITATION

The Special Jury Award of 2004 is given to **J. PHILLIP B.M. KOSHY (KUTTY)** in the Tamil film **DANCER** for his incredible acting and dance performance despite being a physically challenged person.

जे. फिलिप ब्रीट मैन कोशी (कुट्टी)

21 वर्षीय जे. फिलिप ब्रीट मैन कोशी उर्फ कुट्टी विशिष्ट प्रतिभाशाली हैं। एक टाँग खो देने पर भी कुट्टी एक सफल कलाकार एवं नर्तक हैं। इन्होंने तमिलनाडू के स्कूल एवं कालेजों में 2500 से अधिक स्टेज शो किये हैं। इन्होंने दुबई, कुवैत, श्रीलंका तथा बहरीन में भी स्टेज शो किये हैं।

कुट्टी को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

डांसर इनकी पहली फिल्म है। इन्होंने रविराज द्वारा निर्देशित **उरुत्थी** (वृत्तचित्र) में भी काम किया है।

J. PHILIP BREAT MAN KOSHY (KUTTY)

Twenty one year old J. Philip Breat Man Koshy alias Kutty is a man with exceptional talent. Despite losing one leg, he has excelled as an actor and dancer. He has performed on more than 2500 stages, in schools and colleges in Tamil Nadu and foreign star nights in Dubai, Kuwait, Sri Lanka, Bahrain etc.

Winner of several prestigious awards, Kutty is an active performer. **Dancer** was his debut movie. He has also worked in **Uruthi** (Documentary) directed by Raviraj D.F.T.

सर्वोत्तम विशेष प्रभाव

सनत पिल्लेरी चेल्लेरी

प्रभाव सृजक **सनत पिल्लेरी चेल्लेरी** को रजत कमल एवं 10,000/- रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम विशेष प्रभाव पुरस्कार **सनत पिल्लेरी चेल्लेरी** को तेलुगु फिल्म **अंजी** में विशेष प्रभाव द्वारा बाह्य संसार की काल्पनिक एवं प्रभावशाली संरचना के लिए दिया गया है।

BEST SPECIAL EFFECTS

SANATH PILLERI CHELLERI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Creator **SANATH PILLERI CHELLERI**

CITATION

The Award for the Best Special Effects of 2004 is given to **SANATH PILLERI CHELLERI** in the Telugu film **ANJI** for imaginative and effective creation of an outside world using special effects.

सनत पिल्लेरी चेल्लेरी

सनत फायर फ्लाई क्रिएटिव स्टूडियो के निदेशक है। फायर फ्लाई क्रिएटिव स्टूडियो एक डिजिटल विजुअल एफेक्ट्स स्टूडियो है जो कैरेक्टर एनीमेशन तथा फिल्म और वीडियो के मोशनग्राफिक्स के क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करता है। सन् 2002 में चार विशिष्ट प्रतिभाओं द्वारा स्थापित इस स्टूडियो में 20 वर्षों के अनुभव का समावेश है। इस स्टूडियो ने कई प्रमुख तेलुगु फिल्मों के लिए विजुअल एफेक्ट्स का निर्माण किया है। इनमें से प्रमुख हैं– **अंजी, इंद्रा, टैगोर, साम्बा बन्नी।**

SANATH PILLERI CHELLERI

Sanath is the Director of Fire Fly Creative Studio (Pvt) Ltd, a Digital Visual Effects Studio with Cutting Edge capabilities in character Animation and Motion Graphics for Film and Video. Fire Fly was started in 2002 by four meritocrats with a combined experience of over 20 years in visual media. Fire Fly has delivered complex visual effects for Telugu feature such as **Anji, Indra, Tagore, Samba Bunny** etc.

सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन

प्रभुदेवा

नृत्य निर्देशिक **प्रभुदेवा** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम नृत्य निर्देशन का पुरस्कार **प्रभु देवा** को हिन्दी फिल्म **लक्ष्य** में काल्पनिक, चमत्कारिक एवं संगीतमय नृत्य संयोजन के लिए दिया गया है।

BEST CHOREOGRAPHY

PRABHU DEVA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to Choreographer **PRABHU DEVA**

CITATION

The Award for the Best Choreography of 2004 is given to **Prabhu Deva** for the Hindi film **Lakshya** for his imaginative, spectacular and rhythmic dance composition.

भु देवा

4 वर्ष की आयु में सहायक नृत्य निर्देशक के रूप में अपने पिता एन. सुन्दरम के संरक्षण में अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले प्रभु देवा आज विभिन्न भाषाओं में 250 से अधिक नृत्य निर्देशन कर चुके हैं। सन् 1991 में पवित्रन द्वारा निर्देशित तमिल फिल्म इन्दु से उन्होंने अभिनय के क्षेत्र में पदार्पण किया। तब से लगभग 20 फिल्मों में वह अभिनेता के रूप में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके हैं।

नृत्य निर्देशक के रूप में यह प्रभु देवा का दूसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

PRABHU DEVA

Prabhu Deva entered the film industry at the age of 14 as Assistant choreographer to his father N. Sundaram. As choreographer, he has directed more than 250 films in various languages, as of now.

In the year 1991, he extended his career to acting and played a lead role in the Tamil film **Indhu** directed by Pavithran. Ever since, he has acted in more than 20 films. The is Prabhu Deva's second National Award as Choreographer.

संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रत्येक भाषा में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम असमिया फीचर फिल्म
दीनबंधु

निर्मात्री **कृष्ण रॉय** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **मुनीन बरुआ** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम असमिया कथा चित्र का पुरस्कार **दीनबन्धु** को परिस्थितियों के विरुद्ध विशेषकर दहेज एवं झूठी प्रतिष्ठा से जनित मानवीय संघर्ष को दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES SPECIFIED IN THE SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ASSAMESE
DINABANDHOO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **KRISHNA ROY**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **MUNIN BARUA**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Assamese of 2004 is given to **Dinabandhoo** for a human struggle against circumstances, mainly because of dowry to portray a social status which is false.

कृष्णा रॉय

कृष्णा रॉय ने अपना कैरियर पूर्व ज्योति थिएटर के निर्देशक और प्रकाश निर्देशक के रूप में आरम्भ किया। शीघ्र ही उन्होंने रूप कुंवर थिएटर के साथ एक प्रकाश निर्देशक के रूप में कार्य आरम्भ किया। कुछ समय बाद प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता, लेखक तथा पत्रकार डा. भवेन्द्र नाथ सैकिया के सहयोग से कृष्णा रॉय ने 120 से अधिक नाटकों का निर्देशन किया।

KRISHNA ROY

Krishna Roy began his career with Purbajyoti Theatre as Director and Light Director, soon shifting over to Rupkonwar Theatre as a Light Director. Alone he launched Awahan Theatre, with the support of internationally renowned film director and cultural activist, writer, journalist Dr. Bhabendra Nath Saikia. Roy directed over 120 plays through this group.

मुनीन बरुआ

मुनीन बरुआ ने चित्रपट लेखक के रूप में 19 फीचर फिल्मों का पटकथा लेखन किया। इनमें से प्रमुख हैं–**बोवारी, एई दिश मोर दिश, पिता–पुत्र, प्रभाती पाखीर गान, हिया दिया निया, बारूद, रौंग** तथा दीनबन्धु।

निर्देशक के रूप में उनकी प्रमुख फिल्में हैं– **प्रतिमा** (1985), **पिता–पुत्र** (1987), **पहाड़ी कन्या** (1989), **प्रभाती पाखीर गान** (1992), **हिया दिया निया**(2000), **दाग** (2001), **नायक** (2001), **कन्यादान** (2003), **विधाता** (2003), **बारूद** (2003), **रौंग** (2004) तथा **दीनबन्धु** (2004)

अनेकों पुरस्कारों के विजेता मुनीन ने 50 से अधिक नाटकों का लेखन किया है।

MUNIN BARUA

Munin Barua began as a Screenplay writer and wrote nineteen Assamese feature films. Notable among them are films like Bowari, Eai Desh Mor Desh, Pita Putra, Prabhati Pakhir Gaan, Hiya Diya Niya, Barood, Rong, Dinabandhoo etc.

As a director he has directed feature films like **Pratima** (1985), **Pita Putra** (1987), **Pahari Kanya** (1989), **Prabhati Pakhir Gaan** (1992), **Hiya Diya Niya** (2000), **Daag** (2001), **Nayak** (2001), **Kanya Daan** (2002), **Bidhata** (2003), **Barood** (2003), **Rong** (2004), **Dinabandhoo** (2004) etc.

Winner of several awards, Munin has written more than fifty stage plays.

सर्वोत्तम बंगला फिल्म

क्रांतिकाल

निर्माता **शम्पा भट्टाचार्जी** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशन **शेखर दास** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम बंगला कथा चित्र का पुरस्कार क्रांतिकाल को समयपाश में बद्ध प्रतिष्ठित बांग्ला संस्कृति के साथ एक आतंकवादी के द्वन्दात्मक प्रतिकार को प्रभावी रूप से दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN BENGALI

KRANTIKAAL

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **SAMPA BHATTACHARJEE**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SEKHAR DAS**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Bengali of 2004 is given to **Krantikaal** for dialectical portrayal of a terrorist's critical encounter with a decadent Bengali royal culture trapped in a time wrap.

शम्पा भट्टाचार्जी

कोलकाता विश्वविद्यालय से शिक्षित तथा कला एवं सिनेमा की प्रशंसक शम्पा ने अपनी प्रबंधन कम्पनी से ही अपने सिने कैरियर की शुरूआत एक निर्माता के रूप में की। उनकी पहली फिल्म **महुलबनीर सेरेंग** को देश विदेश में पर्याप्त सराहना मिली तथा भारतीय पैनोरमा 2004 में भी शामिल की गई। इस फिल्म की सफलता के बाद प्रफुल्ल रॉय के उपन्यास पर आधारित **क्रान्तिकाल** शम्पा की दूसरी फिल्म है।

SAMPA BHATTACHARJEE

Sampa Bhattacharjee, educated from Calcutta University has always been an ardent appreciator of 'Serious entertaining and meaningful Cinema'. Proprietor of Nobel Associate, Sampa after concentrating a stretch of time on Management Consultancy, diversified into production of serious and meaningful Cinema. **Mahulbanir Sereng** has been her debut venture, highly appreciated in India and abroad.

After the grand success of Mahulbani...... Sampa produced her next feature film based on Prafulla Roy's Academy award winning novel Krantikal.

शेखर दास

सिनेमा के प्रति अतीव उत्साह शेखर दास को सैंटजेवियर कालेज कोलकाता के जनसंचार विद्यालय चित्रबनी ले आया। सिनेमा का अध्ययन करते हुए उन्होंने सभी पक्षों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इसी समय इन्हें कुछ अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रंगकर्मियों जैसे पीटर ब्रुक, रिचर्ड जेख्नर, येजई ग्रोतोस्की तथा हबीब तनवीर आदि के साथ काम करने का अवसर मिला। नीरद महापात्र तथा ज्यों क्लादकारिए जैसे दिग्गजों से पटकथा लेखन में दक्षता प्राप्त कर शेखर, बंगला दूरदर्शन के शीर्ष लेखक के रूप में उभरे। सुभद्रो चौधरी द्वारा निर्देशित फिल्म प्रोहोर के पटकथा लेखन के साथ ही शेखर का प्रवेश बंगला सिनेमा में हुआ। इनकी पहली फिल्म **महुलबनीर सेरेंग** भारतीय पैनोरमा में शामिल हुई तथा देश–विदेश में सराही गई।

शेखर दास कई वृत्तचित्रों, टेलीविजन धारावाहिकों और आन्तोन चेखव के नाटकों का वीडियो रूपान्तरण कर चुके हैं।

क्रान्तिकाल इनकी दूसरी फीचर फिल्म है।

SEKHAR DAS

Sekhar Das's passion for cinema took him to Chitrabani, the communications and film studies center of St. Xavier's college, Kolkata. A keen student of cinema while studying both theory and practical aspects of the 7th art, Das also excelled as an actor, director of theatre and playwright. He had the privilege of working with internationally acclaimed theatre personalities like Peter Brook, Richard Secchner, Jerzy Grotwosky, Habib Tanvir.

After learning the ropes of screenplay writing from the likes of Niradh Mahapatra and Jean Claude Carrier, he emerged as one of Bengali Television's most prolific writers. His screenplay for the film Prohor directed by Subhadro Chaudhury has won the national and international awards.

After his debut film **Mahulbanir Sereng** Das also made several documentaries, numerous suspense thrillers for TV and brilliant video adaptation of four Anton Chekov's classic plays.

Krantikaal is his second feature film.

सर्वोत्तम हिन्दी फिल्म

रेनकोट

निर्माता **श्री वेंकटेश फिल्मस** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **ऋतुपर्णो घोष** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम हिंदी कथा चित्र का पुरस्कार **रेनकोट** को प्रेम एवं मानवीय संबंधों को अतिसूक्ष्म तथा संवेदनशील रूप से प्रस्तुत करने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN HINDI

RAINCOAT

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **SHREE VENKATESH FILMS**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **RITUPARNO GHOSH**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Hindi of 2004 is given to **Raincoat** for its subtle handling of human relationship in a low-key fashion yet mentioning the warmth of a lost love.

श्री वेंकटेश फिल्म

श्रीकान्त मोहता एवं महेन्द्र सोनी के मार्गदर्शन में श्री वेंकटेश फिल्म्स बंगला फिल्मों के निर्माण तथा वितरण की ओर अग्रसर हुई। **चल मेरे भाई**, जिसमें संजयदत्त एवं गोविंदा ने अभिनय किया था, से शुरूआत कर वेंकटेश ने अनेक हिन्दी फिल्मों का भी वितरण किया है।

ऋतुपर्णो घोष की **चोखेर बाली** के निर्माण एवं वितरण के अतिरिक्त श्री वेंकटेश फिल्म्स ने **देव, मर्डर, गर्व, लक्ष्य, देवदास, मिस्टर एण्ड मिसेज़ अय्यर, मुन्नाभाई एम.बी.बी.एस.** इत्यादि का वितरण किया है।

ऋतुपर्णो घोष

23 वर्ष की छोटी आयु में ऋतुपर्णो ने पहली फिल्म का निर्माण किया। दूसरी फिल्म **उनीशे अप्रैल** (1994) उस वर्ष की सर्वोत्तम फिल्म चुनी गई। बाद की लगभग सभी फिल्मों को राष्ट्रीय पुरस्कार मिले हैं तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भरपूर सराहना मिली है, जिनमें **दहन, असूख, बारीवली, उत्सव** और **शुभो मुहुर्त** शामिल हैं। चोखेर बाली लोकार्नो फिल्म समारोह 2003 के प्रतियोगिता वर्ग में शामिल की गई और नवीनतम फिल्म **रेनकोट** बर्लिन फिल्म समरोह 2004 के सर्वोच्च पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा में थी। उन की फिल्म **अंतर्महल** भी इस वर्ष लोकार्नो फिल्म समारोह में प्रदर्शित हुई।

SHREE VENKATESH FILMS

Led by Shrikant Mohta and Mahendra Soni, Shree Venkatesh Films moved on from production and distribution of Bengali films from Bollywood under their distribution arm named Venkatesh 2000. They made their debut with the Govinda-Sanjay Dutt starrer **Chal Mere Bhai**.

Apart from producing and distributing Rituparno Ghosh's award winning Chokher Bali, SVF has also distributed films like Dev, Murder, Garv, Lakshya, Devdas, Mr. and Mrs Iyer, Munnabhai M.B.B. S. etc. and several other Bengali films.

RITUPARNO GHOSH

Rituparno Ghosh made his first film at the age of 23. Since then, there has been no looking back. Even though he has a master's degree in economics, his first love has always been the story, the telling of the tale, whether in celluloid or in chaste prose.

Advertising, filmmaking and Bengali copywriting gave him precision and discipline. His own inclinations did the rest. He is now in the happy position of not only making his own kind of films but also finding leading producers willing to back him. His films have always been woman-centered because he empathizes with the gender. In fact, his forte is his ability to read, portray the unwritten nuances of difficult relationships and highlight the unique combination of strength and vulnerability in women. Films of acclaim are **Unishey April** (1994), **Dahan** (1997), **Baariwaali** (1999), **Utsab** (2000), **Shubho Mohorat** (2002) **Chokher Bali** (2003), **Rain coat** (2004), **Antar Mahal** (2005).

सर्वोत्तम कन्नड़ फिल्म

बेरु

निर्माता **मित्रचित्र** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **पी. शेषाद्री** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम कन्नड़ कथा चित्र का पुरस्कार **बेरु** को दिया गया है। फिल्म में भ्रष्ट शासन तंत्र का एक वृद्ध लोकनर्तक की दृष्टि से निष्ठुर प्रतिपादन है।

BEST FEATURE FILM IN KANNADA

BERU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Producer **MITRACHITRA**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to Director **P. SHESHADRI**

CITATION
The Award for the Best Feature Film in Kannada of 2004 is given to **Beru** for critical analysis of bureaucratic corruption through the eyes of a folk dancer and its ironic overtone.

मित्रचित्र

कर्नाटक स्थित मित्रचित्र ने अनेक कन्नड़ फिल्मों का निर्माण किया है। मित्रचित्र को अतिथि फिल्म के लिए वर्ष 2001 का सर्वोत्त कथाचित्र का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

पी. शेषाद्री

कन्नड साहित्य और पत्रकारिता में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त शेषाद्री, कुछ समय पत्रकार के रूप में नाम कर के फिल्म **गौरीशंकर** के साथ पटकथा लेखन से जुड़ गये। स्वतंत्र रूप से कुछ टेलीविज़न धारावाहिक निर्देशित करने के पश्चात् उन्होंने अपनी पहली फिल्म **मुन्नुडी** का सन् 2000 में निर्माण किया। फिल्म के साथ उन्होंने काफी ख्याति प्राप्त की।

मुन्नुडी के बाद शेषाद्री तीन फीचर फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं जिनमें से दो फिल्में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुकी हैं। यह उनका तीसरा राष्ट्रीय पुरस्कार है।

MITRACHITRA

A leading production house of Karnataka, Mitrachitra has produced several Kannada films. Mitrachitra has won the National Award for Atithi for the year 2001.

P. SHESHADRI

A postgraduate in Kannada Literature and Journalism, after a short stint as journalist, he turned towards films in 1990 with his Screenplay and dialogues for Gourishankara. He became an independent Director of Television serials, Documentaries and Telefilms. His maiden effort as a Director of feature film **Munnudi** in 2000 brought him applause for sensitive approach to cinema and the film was hailed as a landmark. Sheshadri has since directed three other features, with two of these winning national acclaim.

This is his third National Award.

सर्वोत्तम मलयालम फिल्म

अकले

निर्माता **टॉम जॉर्ज कोलथ** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **श्याम प्रसाद** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम मलयालम कथा चित्र का पुरस्कार **अकले** को एक परिवार की त्रासद स्थिति के मार्मिक प्रतिपादन के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MALAYALAM

AKALE

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **TOM GEORGE KOLATH**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SHYAMAPRASAD**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Malayalam of 2004 is given to **Akale** for its sensitive handling of characters trapped in a tragic situation, in an unconventional filmic way.

टॉम जॉर्ज कोलथ

सन् 1970 में पालाघाट में जन्मे टॉम जॉर्ज कोलथ का बाल्यकाल से ही फिल्म जगत में अपना स्थान बनाने का स्वप्न था।

बरमिंघम स्टेट यूनिवर्सिटी, न्यूयार्क से लेखा में स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने प्रबंधन में कोलम्बिया से स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की। शीघ्र ही उन्होंने मलयालम फिल्म मीरायुदे दुखावुम मुतुविन्ते स्वप्नावुम तथा टेलीविजन के माध्यम से अभिनय की शुरुआत की। टॉम जॉर्ज अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फिल्मों के निर्माण में रत हैं।

TOM GEORGE KOLATH

Born in 1970, he grew up in a loving, traditional family in Palghat, a little town in Kerala, one of the southern states of India.

After acquiring a Bachelor's degree in Accounting from Birmingham State University of New York he excelled in the field which inspired him to acquire an MBA from Columbia. With a goal to have a good financial foundation which he could use to enter the Indian film industry, he began by acting and producing successful TV series (Anna-Kairali Television) and feature film in Malayalam (Meerayude Dukhavum Muthuvinte Swapnavum). Tom is planning to make international films.

श्याम प्रसाद

नाट्य कला में कालीकट विश्वविद्यालय के नाट्य विद्यालय से शिक्षित श्यामा प्रसाद ने मीडिया स्टडीज में यूनाइटेड किंगडम से कॉमन वेल्थ स्कॉलर के रूप में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की। उनकी फीचर फिल्म **अग्निसाक्षी** का अनेक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शन हुआ तथा इस फिल्म ने राष्ट्रीय पुरस्कार के अतिरिक्त नौ केरल राज्य फिल्म पुरस्कार भी प्राप्त किए। अपनी टेलीफिल्मों के लिए श्याम प्रसाद ने लगातार सन 1994 से 1996 तक केरल में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार प्राप्त किया। श्याम प्रसाद भारतीय पैनोरमा तथा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार निर्णायक मण्डलों में कार्य कर चुके हैं।

SHYAMAPRASAD

Born in 1960, Shyamprasad has his basic degree in Theatre Arts from the School of Drama of Calicut University in 1981. As a Commonwealth scholar, he did his Masters Degree in Media Studies at the Hull University, U.K.

His feature film Agnisakshi was premiered at many prestigious international film festivals including Karlovy vary, Cairo, Tokyo and Benodet film festival of France. The film won him National award for the best regional film of 1998 and also 9 Kerala State film awards including the Best Director and Best Film of the year 1998. For his TV films he had won consecutively the Best Director prize of Kerala state in 1994, 1995 and 1996.

In 1999 and 2003 Shyamaprasad served as member of the Jury for Indian Panorama and National Film Awards.

सर्वोत्तम मराठी फिल्म

उत्तरायण

निर्माता **ऑप्टिकस फिल्म्स** को रजतकमल एवं 20,000 /– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **बिपिन नादकर्णी** को रजतकमल एवं 20,000 /– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम मराठी कथा चित्र का पुरस्कार **उत्तरायण** को दो वृद्ध पात्रों के परस्पर प्रेम एवं आने वाली पीढ़ी से उनके द्वन्द्व एवं समस्याओं को दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN MARATHI

UTTARAYAN

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **OPTICUS FILMS**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **BIPIN NADKARNI**

CITATION
The Award for the Best Feature Film in Marathi of 2004 is given to **Uttarayan** for its portrayal of nostalgic love between two aged characters and their problems with the next generation.

ऑप्टिकस फिल्म्स्

सन् 2000 में स्थापित ऑप्टिकस फिल्म्स् टेलीविजन व्यावसायिक फिल्मों तथा फीचर फिल्मों में निर्माणरत्त है। इनकी प्रमुख व्यावसायिक फिल्में भारत की प्रमुख एडवरटाइजिंग एजेंसी जैसे– लियो बर्नेट, मैकेन एरिक्सन, बेट्स इंडिया, ग्रे एवं क्लाइंस जैसे हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड, पी.एन.जी., नेस्ले, माइको, वी वी एफ इंडस्ट्रीज इत्यादि।

बिपिन नादकर्णी

मुम्बई के सेंटजेवियर उच्च विद्यालय तथा मुम्बई विश्वविद्यालय के एलफिन्स्टोन कालेज से शिक्षित बिपिन नादकर्णी ने अपना कैरियर कार्गो तथा ट्रैफिक सहायक के रूप में प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उनका रुझान फिल्मों की ओर हुआ और उन्होंने सुमंत्र घोषाल और राम माधवानी के साथ सहायक के रूप में अनेकों टेलीविजन विज्ञापनों में कार्य किया। इनमें से हमारा बजाज तथा रिपन कपूर के जीवन पर आधारित वृत्त चित्र विशेषतः सराहे गए। शीघ्र ही बिपिन ने ऑप्टिकस के नाम से प्रोडक्शन डिजाइनर के रूप में कार्य प्रारम्भ किया।

उत्तरायण बिपिन की पहली फीचर फिल्म है।

OPTICUS FILMS

Established in the year 2000 a joint venture of Sanjay Shetty and Bipin Nadkarni, 'Opticus Films' directs and produces TV commercials. Their clientele includes agencies like Lowe, Leo Burnett, McCann Erickson, Bates India, Grey and clients like HLL, PNG, Nestle, Maico, VVF Industries etc.

Their debut venture **Uttarayan** has won twelve nominations & seven awards at the Alpha Gaurav 2005 Awards.

BIPIN NADKARNI

Bipin Nadkarni finished his schooling from St. Xavier's High School (Fort-Mumbai) and graduated in Arts from Elphinstone College, Mumbai University in 1985.

Beginning his career as a Cargo and Traffic Assistant he soon switched over to Communications in 1988. He assisted Sumantra Ghoshal and Ram Madhwani for six years, working on hundreds of TV commercials, his most memorable being the Hamara Bajaj campaign and documentary on Ripan Kapur the founder of CRY. Soon Bipin began freelancing as a Production Designer under the name of Opticus.

Uttarayan is Bipin's first feature film.

सर्वोत्तम पंजाबी फिल्म

देस होया परदेस

निर्माता **मंजीत मान** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **मनोज पुंज** को रजतकमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम पंजाबी कथा चित्र का पुरस्कार **देस होया परदेस** को पंजाब में आतंकवाद एवं पंजाबी युवा के पश्चिम की ओर पलायन एवं अलगाववाद की समस्याओं को दर्शाने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN PUNJABI

DES HOYA PARDES

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **MANJEET MAN**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **MANOJ PUNJ**

CITATION
The Award for the Best Feature Film in Punjabi of 2004 is given to **Des Hoya Pardes** for its sharp handling of terrorism in Punjab and portrayal of alienation, migration of Punjabi youth to the west.

मंजीत मान

मंजीत मान ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अपनी पहली पंजाबी संगीतमय फिल्म **मामला गड़बड़ है** के साथ प्रवेश किया। **शहीद–ए– मोहब्बत बूटा सिंह** इनकी दूसरी पंजाबी फिल्म थी जिसे हिन्दी में भी डब किया गया। इस फिल्म ने राष्ट्रीय पुरस्कार के साथ भारतीय पैनोरमा में भी प्रवेश प्राप्त किया। इस फिल्म का प्रदर्शन कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों जैसे– वैंकूवर, कोलकाता तथा सार्क फिल्म फेस्टिवल आदि में हुआ। मंजीत मान द्वारा तीसरी फिल्म, **जिंदगी खूबसूरत है** (हिन्दी) तथा चौथी फिल्म **देस होया परदेस** है। मंजीत फिल्मों के अतिरिक्त टेलीविजन कार्यक्रम तथा म्यूजिक ऐलबम का भी निर्माण करती हैं।

MANJEET MAAN

Manjeet Maan ventured into film production with **Maamla Gadbad Hai**, a popular Punjabi musical film. **Shaheed-e-Mohabbat Boota Singh** in Punjabi and dubbed in Hindi, was her second venture which won a National Award and also selected for Indian Panorama. It was also screened at various International Film Festivals like Vancouver International Film Festival, Kolkata Film Festival, SAARC Film Festival etc. and won critical acclaim. Her third film **Zindagi Khoobsoorat Hai** was in Hindi. Des Hoya Pardes is her fourth feature film.

मनोज पुंज

चण्डीगढ़ में जन्मे मनोज पुंज पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। उन्होंने अपने फिल्मकार प्रोफेसर के सहायक के रूप में निर्देशन प्रारम्भ किया। भारतीय फिल्म एवं टेलविजन संस्थान पुणे द्वारा आयोजित फिल्म अप्रिसिएशन वर्कशॉप में उन्होंने भाग लिया। शीघ्र ही उन्होंने मुम्बई से टेलीविजन सीरियल तथा म्यूजिक वीडियोज़ का निर्माण प्रारम्भ किया। उनकी प्रथम फीचर फिल्म **शहीद–ए–मोहब्बत बूटा सिंह** (पंजाबी) को राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी अन्य फिल्में हैं– **ज़िन्दगी खूबसूरत है** (हिन्दी) तथा **देश होया परदेस** (पंजाबी)। **मनोज पुंज** अपनी अगली फिल्म **पोलिटिकल असाईलम** (अंग्रेजी) पर कार्य कर रहे हैं।

MANOJ PUNJ

Chandigarh born Manoj Punj is a graduate from Punjab University.

He began by assisting his Professor who was making corporate and documentary films, in production and direction, attended a film appreciation workshop organized by NFDS in association with Film Archive of India, FTII, Pune, Embassies of Germany, USSR, Czeckoslovakia etc. Soon he shifted to Mumbai where he directed some TV software and music videos for leading companies. His debut feature film as independent director was the National Award winning feature film **Shaheed-E-Mohabbat Buta Singh** (Punjabi).

His other films are **Zindagi Khoobsoorat Hai** (Hindi) and Des Hoyaa Pardes (Punjabi). **Political Asylum** (English) is his next venture under production.

सर्वोत्तम तमिल फिल्म

नवरस

निर्माता **सुनील दोषी** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **संतोष सिवन** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम तमिल कथा चित्र का पुरस्कार **नवरस** को किन्नर समुदाय के विश्वसनीय चित्रण तथा निर्देशक के विशिष्ट सिनेमाई दृष्टिकोण के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TAMIL

NAVARASA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **SUNIL DOSHI**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SANTOSH SIVAN**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Tamil of 2004 is given to **Navarasa** for its credible exploitation of the world of the third gender blended with director's own cinematic style.

सुनील दोषी

फिल्म उत्प्रेरक सुनील दोषी मुम्बई में हैंडमेड फिल्म्स के मुख्य कार्याधिकारी हैं। भारतीय बाल तथा युवा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह (1993 और 1995) के कार्यकारी निदेशक रह चुके सुनील अनेकों अंतर्राष्ट्रीय फिल्म निर्णायक मंडलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। **नवरस** उनके द्वारा निर्मित पहली फीचर फिल्म है। वे एलाइन्स मीडिया एण्ड एन्टरटेनमेन्ट नामक कन्सलटेन्सी फर्म के मुख्य कार्यकारी अधिकारी भी हैं।

SUNIL DOSHI

Sunil Doshi is a film activist based in Mumbai and the Chief Executive of Handmade Films, Mumbai. He was the Executive Director of the International Film Festival of Children and Young People held in Udaipur (1993) and Hyderabad (1995). He has served as an International jury member at Annecy (France), Leon (France) Isafahan (Iran) and Locarno International Film Festival.

Navarasa, is the first film produced by Sunil Doshi, Handmade Films.

He is also the CEO of Alliance Media & Entertainment a consultancy firm specializing in the area of Media, Entertainment, Advertising and Marketing.

संतोष सिवन

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से छायांकन में डिप्लोमा प्राप्त संतोष की गिनती भारत के जानेमाने छायाकारों एवं फिल्मकारों में होती है। निर्देशक के रूप में वे **हेलो** (1995) तथा **मल्ली** (1999) जैसे बाल फिल्में बना चुके हैं। उनकी फिल्म **द टेररिस्ट** (1998) को देश–विदेश में कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए। अमेरिका में ये फिल्म प्रसिद्ध कलाकार जॉन माल्कोविच द्वारा प्रस्तुत की गई। संतोष को इस फिल्म के लिए सिआटल फिल्म समारोह (2000) में एमर्जिंग मास्टर नामक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संतोष छायांकन तथा निर्देशन के लिए अब तक दस राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

SANTOSH SIVAN

Santosh Sivan graduated from the prestigious Film and Television Institute of India in cinematography in 1984. As cinematographer, Santosh has worked with some of the most prominent filmmakers in India.

As director, he has made children's film like **Halo** (Hindi/1995) and **Malli** (Tamil/1999). His other Feature **The Terrorist** (Tamil/1998) received much national and international acclaim as well as numerous awards at film festivals around the world. The American stage and film actor John Malkovich also presented the film in the US. He was also awarded Emerging Master at the Seattle Film Festival in the year 2000.

Santosh has won ten National Awards for Cinematography and Direction.

सर्वोत्तम तेलुगु फिल्म

स्वराभिषेकम

निर्माता **सी.के. राव** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **के. विश्वनाथ** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम तेलुगु कथा चित्र का पुरस्कार **स्वराभिषेकम** को शास्त्रीय संगीत की उत्कृष्ट सरचना तथा विशिष्ट शास्त्रीय संगीत परंपरा के प्रदर्शन के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN TELUGU

SWARABHISHEKAM

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **C.K. RAO**
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 20,000 to the Director **K. VISWANATH**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Telugu of 2004 is given to **Swarabhishekam** for its excellent musical structure clubbed with great classical musical performance.

सी.के. राव

चेरुकुरी कौशलेन्द्र राव आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध उद्योगपतियों में से एक हैं जिन्होंने अपने प्रदेश की औद्योगिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया है। 64 वर्षीय राव टेक्सटाइल तकनीकी विशेषज्ञ हैं। भारतीय संस्कृति के प्रशंसक राव ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से फिल्म स्वराभिशेकम का निर्माण किया।

C.K. RAO

Cherukuri Kowsalendra Rao, is one of the highly respected names among the leading industrialists and commands tremendous goodwill. Sixty four years old C.K. Rao, specialized in Textile Technology served various companies as technologist, and greatly contributed to the growth and development of spinning industry in Andhra Pradesh.

From industries to films is a great pleasant diversification for Rao. He has been an ardent admirer of films, particularly the ones that have projected our rich cultural heritage and great musical values. His dream culminated with production of **Swarabhishekam**.

के. विश्वनाथ

वाहिनी स्टूडियो चेन्नई से ध्वनि आलेखक के रूप में कैरियर शुरू करने वाले, विज्ञान के स्नातक विश्वनाथ ने सौ से अधिक फिल्मों में प्रमुख निर्देशकों जैसे–बी.एन. रेड्डी, के. वी. रेड्डी, अदूर्थि सुब्बाराव तथा पी. पुल्लैया आदि के साथ रिकार्डिस्ट के रूप में कार्य किया। उनके द्वारा निर्देशित पहली फिल्म **आत्म गौरवम** ने आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित नन्दी पुरस्कार प्राप्त किया। आन्ध्र प्रदेश सरकार का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार रघुपति वैंकेया नायडू पुरस्कार भी के. विश्वनाथ प्राप्त कर चुके हैं। 11 फिल्म फेयर पुरस्कार तथा लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित विश्वनाथ की सुप्रसिद्ध फिल्में **शंकरा भरणम** तथा **स्वातिमुत्यम्** देश–विदेश में प्रसिद्ध हैं। विश्वनाथ ने कई प्रसिद्ध हिंदी फिल्मों–जैसे **सरगम, कामचोर** तथा **ईश्वर** आदि का भी निर्देशन किया। वे पद्मश्री से विभूषित हैं।

K. VISWANATH

A science graduate, started his career as an audiographer in Vahini Studios, Chennai. As a recordist he worked for about 100 films and his association in that capacity, with veteran Directors like B.N. Reddy, K.V. Reddy, Adurthi Subba Rao, P. Pulliaiah to name a few. His first directorial venture **Atma Gauravam** bagged the prestigious Andhra Pradesh Govt.'s Nandi Award. He was prestented with Raghupati Venkaiah Naidu Award. Eleven Film Fare Annual Awards and life time Achievement Award. His film **Sankarabharanam** is considered a landmark in Telugu film industry. It bagged four National Awards besides innumerable awards in India and abroad. His film **Swathi Muthyam** was an official entry for OSCARS.

Vishwanath's Hindi films **Sargam, Kamchor** and **Easwar** etc. are reckoned as best family entertainers. He has been honoured with Padma Shree by the Govt. of India.

सविंधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं से इतर भाषाओं में सर्वोत्तम कथाचित्र

सर्वोत्तम अंग्रेजी फीचर फिल्म

अमू

निर्मात्री **सोनाली बोस** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **सोनाली बोस** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम अंग्रेजी कथा चित्र का पुरस्कार **अमू** को एक लड़की अपनी पहचान के लिए संघर्ष तथा घायल समाज से उसके साक्षात्कार तथा प्रतिकार के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN EACH OF THE LANGUAGES OTHER THAN THOSE SPECIFIED IN SCHEDULE VIII OF THE CONSTITUTION

BEST FEATURE FILM IN ENGLISH

AMU

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **SHONALI BOSE**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **SHONALI BOSE**

CITATION
The Award for the Best Feature Film in English of 2004 is given to **Amu** for its innovative style of handling a girl's search for her identity and her encounter with a scarred society.

सोनाली बोस

कोलकत्ता, मुम्बई ओर दिल्ली में पली–बढ़ी सोनाली बोस मिरांडा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रकाल से ही एक सामाजिक कार्यकर्ता रही है। कोलंबिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क से राजनैतिक विज्ञान में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् सोनाली नाट्य जगत से जुड़ी रहीं। सन् 1984 में उन्होंने दिल्ली में हुए दंगों पर नाटकों का राहत शिविरों आदि में मंचन किया।

अनेक वर्षो तक नेशनल लायर्स गिल्ड के लिये कार्य करने वाली सोनाली ने मैनहाटन में सामुदायिक टेलीविजन के लिये निर्देशन किया। उन्होंने यू सी एल ए के नाट्य फिल्म टेलीविज़न स्कूल से उच्च शिक्षा प्राप्त की। उनकी लघु फिल्में **'द जेन्डर्म इज़ हियर'**, तथा **'अनडोक्युमेंटिड'** तथा वृत्तचित्र **'लिफ्टिंग द वेल'** विश्वभर में प्रदर्शित हो चुकी हैं।

'अमू' उनके द्वारा लिखित, निर्मित और निर्देशित पहली फीचर फिल्म है।

SHONALI BOSE

Shonali Bose was born in 1965 and grew up in Kolkata, Mumbai and Delhi. She has been an activist since her student days in Miranda House College, Delhi University (BA History Honours) and Columbia University, New York (MA Political Science). Bose was also passionately involved in theatre throughout school and college. In 1984 she co-wrote and acted in a street play on the Delhi riots which was performed in relief camps, riot-effected areas, markets, and colleges across Delhi.

Shonali worked as an organizer at the National Lawyer's Guild, and directed live community television in Manhattan before embarking on the MFA Directing Program at UCLA's School of Theater, Film, and Television. Her short narrative films **The Gendarme is Here** and **Undocumented** and her feature-length documentary **Lifting the Veil** have been screened throughout the world.

Amu is her feature film debut, written, produced and directed by her.

सर्वोत्तम कोंकणी

आलिशा

निर्माता **राजेन्द्र तालक क्रिएशनस** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **राजेन्द्र तालक** को रजत कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम कोंकणी कथा चित्र का पुरस्कार **आलिशा** को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता एवं भ्रष्टाचार को उद्घाटित करने के लिए दिया गया है।

BEST FEATURE FILM IN KONKANI

ALEESHA

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Producer **RAJENDRA TALAK CREATIONS**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 20,000/- to the Director **RAJENDRA TALAK**

CITATION

The Award for the Best Feature Film in Konkani of 2004 is given to **Aleesha** for its concern about pollution and protection at the same time exposing corruption.

राजेन्द्र तालक

प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं निर्माता राजेन्द्र नारायण तालाक मुम्बई विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक हैं। आर फॉर रैगिंग, तीन खेती शनि सुरती, घासीवाल कोतवाल, आधे अधूरे, लेकुरे वदान्ध झाली, चुडावा मजाला इत्यादि इनके प्रमुख नाटकों में से हैं। इन्होंने एक कोंकणी टेलीफिल्म **शीतू** तथा एक कोंकणी कैसेट **दरयाच्या देगेर** का निर्माण किया है जिसमें आशा भोसले, सुरेश वाड़कर तथा लारा ने गीत गाये हैं।

राजेन्द्र अनेक सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों से संबद्ध हैं।

RAJENDRA TALAK

A noted theatrist and producer Rajendra Narayan Talak is a Science graduate from Mumbai University. Some of his prominent plays include R for Ragging, Teen Kheti Shani Surti, Ghasiram Kotwal, Aadhe Adhure, Lekure Vadhandh Zhali, Chudava Majala. He also produced **Shitu** a Konkani telefilm and a Konkani cassett Daryachya Deger sung by Asha Bhonsle, Suresh Wadkar and Lhara.

He has also served on several cultural institutions.

विशेष उल्लेख

गुरदास मान एवं प्रदीप नायर

प्रशस्ति
निर्णायक मण्डल ने अभिनेता **गुरुदास मान** का पंजाबी फिल्म **देस होया परदेस में** आतंकवाद एवं पुलिस के दो पाटों के बीच फंसे निष्कपट, असहाय किंतु देशभक्त युवा पंजाबी जमींदार के प्रभावशाली अभिनय के लिए विशेष उल्लेख किया है।

एवं

प्रशस्ति
निर्णायक मण्डल ने निर्देशक **प्रदीप नायर** का मलयालम फिल्म **ओरिडम** में अभूतपूर्व नवीन चित्रण तथा प्रभावशाली सिनेमाई भाषा के प्रयोग के लिए विशेष उल्लेख किया है। प्रदीप नायर का यह प्रथम प्रयास सराहनीय है।

SPECIAL MENTION

GURDAS MAAN and PRADEEP NAIR

CITATION
The Jury makes a special mention of **Gurdas Maan** for an effective portrayal of an innocent, helpless, patriotic young Punjabi landlord caught in a crossfire between terrorists and the police.

and

CITATION
The Jury also makes a special mention of **Pradeep Nair** for his credible attempt at creating a new imagery and effective cinematic language in his debut film **Oridam** (Malayalam).

गुरदास मान

एक विशिष्ट खिलाड़ी, गुरदास मान ने छोटी आयु में ही गायन प्रारम्भ किया। अपने कैरियर का प्रारम्भ एक पंजाबी लोक गायक के रूप में करते हुए गुरदास राष्ट्रीय मंच पर अपने गाने "दिल द मामला है" से उभरे।

एक अभिनेता के रूप में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय **मामला गड़बड़ है, शहीद–ए–मोहब्बत बूटा सिंह** (पंजाबी) **जिन्दगी खूबसूरत है** (हिन्दी) तथा **देस होया परदेस** (पंजाबी) आदि फिल्मों से दिया। आज वे एक प्रख्यात गायक, अभिनेता तथा गीतकार के रूप में जाने जाते हैं।

GURDAS MANN

A notable sportsperson, Gurdas Mann took to singing at an early age. He began his career as a Punjabi Folk Singer and soon shot to national limelight with his song '**Dil Da Mamla Hai**'.

As an actor he has displayed his talent in prominent films like **Maamla Gadbad Hai, Shaheed-E-Mohabbat Buta Singh, Zindagi Khoobsoorat Hai, Des Hoyaa Pardes** etc. Today he is recognized as a prominent singer, actor and lyricist.

प्रदीप–नायर

पत्रकारिता में स्नातकोत्तर प्रदीप नायर वृत्तचित्र निर्देशक के रूप में सन् 1997 से कार्यरत हैं। उन्होंने दस वर्षों में सामाजिक विषयों, वातावरण तथा सांस्कृतिक विषयों पर लेखन और निर्देशन किया है। उनकी फिल्में अनेक राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में दिखाई जा चुकी हैं।

ओरिडम उनकी पहली फीचर फिल्म है।

PRADEEP NAIR

A post-graduate in Journalism and Communications, Pradeep Nair has been working as a Documentary filmmaker since 1997, scripted and directed more than ten films on Environment, Social issues and Cultural issues. His films have been selected for various film festivals.

कोकबोरोक, भोजपुरी एवं उड़िया फिल्मों के लिए
कोई पुरस्कार नहीं दिये गये।

No awards recommended for Films in the following Languages/Dialects: Kokborok, Bhojpuri and Oriya

गैर कथाचित्र पुरस्कार
Awards for Non-Feature Films

सर्वोत्तम गैर कथाचित्र पुरस्कार

गिरनी (मराठी)

निर्माता **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को स्वर्णकमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **उमेश विनायक कुलकर्णी** को स्वर्णकमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम गैर–कथा चित्र का पुरस्कार **गिरनी** को दिया गया है। यह लघु कल्पित फिल्म में एक अबोध बच्चे पर शोर के दुष्प्रभाव का अति प्रभावशाली, सिनेमाई एवं नाटकीय चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST NON-FEATURE FILM

GIRNI (Marathi)

Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Producer: **Film and Television Institute of India, Pune**
Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Director: **UMESH VINAYAK KULKARNI**

CITATION

The Award for the Best Non-Feature Film of the year 2004 is given to **Girni**. This short fiction film projects the impact of noise over a child's mind with excellent visualization and fine cinematic dramatization

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

सन् 1960 में प्रभात स्टूडियो के प्रांगण में स्थापित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे का जन्म एक उत्तम विरासत के बीच हुआ। वर्षों से फिल्म एवं टेलीविजन के क्षेत्र में उत्तम शिक्षा का उद्देश्य रखते हुए इस संस्थान ने अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध फिल्मी प्रतिभावों को जन्म दिया। आज इस संस्थान को फिल्म शिक्षा के क्षेत्र में न केवल भारत में अपितु एशिया और यूरोप में भी एक उत्कृष्ट संस्था के रूप में जाना जाता है। संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित फिल्मों ने देश–विदेश के विभिन्न फिल्म समारोहों में अनेक पुरस्कार विजित किए हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत यह संस्थान एक स्वायत्त संस्था है। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म स्कूलों के संस्थान 'सिलेक्ट' का सदस्य है।

उमेश विनायक कुलकर्णी

सन् 1976 में जन्मे भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे के विद्यार्थी हैं। गिरनी से पहले उमेश कई वृत्तचित्रों जैसे–**दर्शन**, **फेड**, **सत्यकाम**, **सेव द चिल्ड्रन** आदि का निर्माण कर चुके हैं। उमेश कई फीचर फिल्मों जैसे–**डोघी**, **ज़िंदगी ज़िंदाबाद**, **बस यारी राखो**, **एकलव्य** (वृत्तचित्र), **पिहू**, **एक अकेली** आदि के निर्माण में सहायता कर चुके हैं।

FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA

Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat studio premises at Pune and thereby inheriting a rich legacy in quality Cinema , the Film and Television Institute of India (FTII) has truly lived up to its avowed objective in the field of imparting training in film making and television programme production. Today the FTII is considered as a Center of Excellence not only in India but also in Asia and Europe. Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad. Many of them have won National and International awards.

The FTII is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India.

The FTII is a member of CILECT, an international association of film schools.

UMESH VINAYAK KULKARNI

Born in 1976, Umesh is a student of Film Direction at Film and Television Institute of India, Pune. Before Girni Umesh has made documentaries like **Darshan, Fed, Satyakam, Save the Children** etc. Umesh has also assisted in the production of feature films **Doghi, Zindagi Zindabad, Bas Yari Rakho**, documentaries **Eklavya, Pihu, Ek Akeli** and several corporate films.

His film **Darshan** was included in the Indian Panorama 2003.

निर्देशन का प्रथम सर्वोत्तम गैर–कथाचित्र पुरस्कार

एक सागर किनारे....ए सीसाइड स्टोरी (मराठी/अंग्रेजी)

निर्माता **गोमांतक मराठी एकेडमी** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **लक्ष्मीकांत शेतगांवकर** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का निर्देशक का सर्वोत्तम प्रथम गैरकथा चित्र का पुरस्कार मराठी लघुकलिप्त फिल्म **एक सागर किनारे** को दिया गया है। फिल्म में मानव के व्यापारिक एवं विवशतापूर्ण वातावरण से संबंध का सरल एवं मनोहर चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST FIRST NON-FEATURE FILM OF A DIRECTOR

EK SAGAR KINAREE... A SEASIDE STORY (Marathi/English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **GOMANTAK MARATHI ACADEMY**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **LAXMIKANT SHETGAONKAR**

CITATION

The Award for the Best First Non-Featgure of a Director for the year 2004 is given to **Ek Sagar Kinaree... A Seaside Story**. This short fiction film handles the simple and delicate relationship between ordinary human beings in a very profound evocative and enterprising manner, within a commercialized compulsive atmosphere.

गोमांतक मराठी अकादमी

मराठी भाषा, कला, साहित्य तथा संस्कृति के उत्थान के उद्देश्य से स्थापित गोमांतक मराठी अकादमी का जन्म 16 अगस्त, 1987 को एक लम्बे आन्दोलन के बाद हुआ। पिछले 18 वर्षों से यह अकादमी गोवा में मराठी भाषा के उत्थान के लिए कार्यरत है। अकादमी ने 70 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। मराठी लेखकों को पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए वित्तीय सहायता दी है। इसके अतिरिक्त अकादमी साहित्यिक सभाओं, युवा महोत्सव तथा अन्य गोष्ठियों का आयोजन करती रहती है।

GOMANTAK MARATHI ACADEMY

Gomantak Marathi Academy is a premier institute working for the development of Marathi language, Marathi literature, and Marathi art and culture. It was founded on 16th August 1987, after a long drawn agitation of Marathi protagonists of Goa.

During the last 18 years, Gomantak Marathi Academy is working for the development of Marathi language in Goa. It has published 70 books, given financial assistance to Marathi writers to publish their books. Besides this Academy organises literary conferences, youth festivals, seminars and conferences for Marathi loving people and youth.

लक्ष्मीकान्त शेतगाँवकर

लक्ष्मीकान्त थियेटर आर्ट्स में स्नातक हैं तथा भारत में प्रयोगधर्मी रंगमंच से जुड़े हुए हैं। ये नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, दिल्ली में अभिनय–अध्यापन करते हैं। ये आर्टिस्टिक डायरेक्टर ऑफ थियेटर फोरम, भारत के संस्थापक सदस्य हैं तथा अब तक 15 से अधिक नाटकों का निर्देशन कर चुके हैं। टेलीविजन धारावाहिकों के लिए थोड़े समय तक पटकथा लेखन के पश्चात् इन्होंने **स्लम्स ऑफ धारावी** तथा **इन्फ्लूऐन्स ऑफ रोमन आर्किटेक्चर ऑन गोअन हाउसेज** जैसे वृत्तचित्र बनाये जिन्हें पर्याप्त सराहना मिली।

एक सागर किनारे.....ए सीसाइड स्टोरी इनकी पहली लघुकल्पित फिल्म है।

LAXMIKANT SHETGAONKAR

Laxmikant is a graduate in Theatre Arts and has been actively involved in the experimental theatre in India, working with National School of Drama, New Delhi, as actor-teacher. He is the founder member and Artistic Director of Theatre Forum, India and has more than 15 plays to his credit as a director. With his short stint as a screenplay writer for episodic TV serials he has moved into filmmaking by his critically acclaimed documentaries **Slums of Dharavi** and **Influence of Roman Architecture on Goan Houses**.

Ek Sagar Kinare......A Seaside Story is his first fiction.

सर्वोत्तम मानव शास्त्रीय/जनजातीय फिल्म

द लैजेंड ऑफ फैट ममा (अंग्रेजी)

निर्माता **रफ़ीक इलियास** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **रफ़ीक इलियास** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम मानवशास्त्रीय/मानवजातीय फिल्म का पुरस्कार **द लीजेंड ऑफ फैट ममा** को दिया गया है। फिल्म में चाइनीज़ समुदाय की गृहस्मारी यात्रा का जीवंत तथापि विचारोत्तजक चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST ANTHROPOLOGICAL/ ETHNOGRAPHIC FILM

THE LEGEND OF FAT MAMA (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **RAFEEQ ELLIAS**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RAFEEQ ELLIAS**

CITATION
The award for the Best Antropological/Ethnographic film of the year 2004 is given to **The Legend of Fat Mama**. This documentary presents a nostalgic journey of the Chinese community in Kolkata in a very lively and engrossing, and yet thought provoking moment.

रफ़ीक इलियास

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फोटोग्राफर रफ़ीक इलियास छायाकार के रूपमें तीन वृत्त चित्रों का निर्माण कर चुके हैं। इनमें से एक कुंभ मेले पर आधारित **द नेक्टर ऑफ इम्मौर्टलिटी**, मुम्बई के फुटपाथ तथा झुग्गी झोंपड़ी वासियों के जीवन पर आधारित **स्लम मुम्बई** तथा तीसरी 150 वर्ष पुराने ऐतिहासिक वाचनालय पर आधारित **स्टैप्स इन टाइम** हैं।

द लैजेंड ऑफ फैट ममा निर्देशक तथा लेखक के रूप में उनकी पहली फिल्म है। इसके अतिरिक्त रफ़ीक मास्को तथा अन्य शहरों जैसे– ताशकंद, बुकारेस्ट आदि में दस वर्षों तक संगीत और नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में फोटोग्राफी कर चुके हैं।

RAFEEQ ELLIAS

An international award-winning advertising and magazine photographer, Rafeeq Ellias has shot three previous documentaries as a cinematographer. These include a film on the Kumbh Mela in India **The Nectar of Immortality**, another on the condition of Mumbai's pavement and slum dwellers **Slum Mumbai**, and yet another on a historic 150 year old library in Mumbai **Steps in Time. The Legend of Fat Mama** is his first documentary as a director and scriptwriter as well. His other passion is photographing ballet and opera which he has been doing for the last 10 years in Moscow, Novosibirsk, Tashkent, Moldova and Bucharest for international festivals of dance and music.

सर्वोत्तम जीवनी फिल्म

इट्स प्रभात (मराठी)

निर्माता **मैसर्स ए.वी. दामले** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **डा. श्रीमति माधवी वैद्य** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम जीवनी पुरस्कार **इट्स प्रभात** को दिया गया है। यह लघु फिल्म प्रभात फिल्म कम्पनी के गरिमामय इतिहास को मनोहर एवं आकर्षक रूप से चित्रित करती है। फिल्म में कम्पनी की प्रतिष्ठित फिल्म उद्धरणों का श्रेष्ठ संकलन है।

AWARD FOR THE BEST BIOGRAPHICAL FILM

IT'S PRABHAT (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **M/S A.V. DAMLE**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **DR. MRS. MADHAVI VAIDYA**

CITATION

The award for the Best Biographical Film of the year 2004 is given to **It's Prabhat**. This short documentary presents the glorious history of Prabhat Film Company in a very engaging and fascinating manner through excellent compilation of the excerpts of some of the renowned old films of the company.

मैसर्स ए.वी. दामले

स्वर्गीय श्री विष्णु पंत दामले के परिवार द्वारा स्थापित मैसर्स ए.वी. दामले ने प्रभात स्टूडियो द्वारा निर्मित फिल्मों के अधिकार श्री वी.एस.एस मुदलियार से प्राप्त किए तथा इन फिल्मों का 1970 के दशक में प्रभात स्टूडियो के भव्य कार्य को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से प्रदर्शन किया। कंपनी द्वारा प्रभात स्टूडियो की भव्यता पर एक पुस्तक 'एक होती प्रभात नगरी' सन् 1993 में प्रकाशित की गई। प्रभात स्टूडियो के कार्य को प्रचारित करने के उद्देश्य से मैसर्स ए.वी. दामले ने सन् 2004 में फिल्म **इट्स प्रभात** का निर्माण किया।

M/S. A.V. DAMLE

M/s. A.V. Damle, acquired the rights of Prabhat Films from Shri. V.S.S. Mudliar in 1969. The films were exhibited throughout Maharashtra between 1970 and 1980, to excellent response. The films were **Sant Tukaram, Ramshastri, Ayodhyacha Raja, Dharmatma, Shejari, Manoos, Kunku**, and **Gopal Krishna** among others.

M/s. A.V. Damle released these films on VHS format in 1989. A book titled 'Ek Hoti Prabhatnagri' on the history and facts about Prabhat Film Company was also published in June 1993.

In November, 2002 these films were transferred on VCD format and would now be available in DVD format.

Its Prabhat was produced by M/s. A.V. Damle on the occasion of 75th anniversary of 'Prabhat Film Company'.

डा. माधवी वैद्य

सेंट मीरा कॉलेज पुणे में मराठी विभाग की प्रमुख डा. माधवी वैद्य अनेक पुस्तकों का लेखन कर चुकी हैं। नाट्य क्षेत्र में अभिनय के लिए डा. वैद्य को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनके द्वारा लिखित 23 वृत्तचित्रों में से 7 राष्ट्रीय तथा 3 अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। डा. वैद्य ने मराठी टेलीविजन के लिए भी फिल्मों का निर्माण किया है। संस्कृति, कला तथा साहित्य के क्षेत्र में डा. वैद्य का योगदान सराहनीय है।

DR. MADHAVI VAIDYA

Dr. Madhavi Vaidya is the head of the Marathi Department at Saint Mira College, Pune. She has to her credit several publications. Dr. Vaidya has acted in Dramas and has won several awards. She has written scripts for 23 documentary films out of which 7 films won National Awards and 3 international Awards. She has also directed films/programmes for Marathi television.

An intensely occupied professional Dr. Vaidya has immensely contributed in the field of culture, fine arts and literature.

सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म/सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म

टाइमलेस ट्रैवलर–द हॉर्सशू क्रैब (अंग्रेजी)

निर्माता **रिवर बैंक स्टूडियोज़** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशन **गौतम पांडे** को रजत कमल तथा 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम वैज्ञानिक फिल्म/सर्वोत्तम पर्यावरण संरक्षण/परिरक्षण फिल्म का पुरस्कार **टाइमलेस ट्रैवलर–द हॉर्सशू क्रैब** को दिया गया है। इस वृत्तचित्र में रहस्यमय प्राणी **हॉर्सशू क्रैब** का बहुत वैज्ञानिक एवं अनुशीलनात्मक प्रस्तुतीकरण है। फिल्म इस अद्भुत प्राणी के संरक्षण का निवेदन भी करती है।

AWARD FOR THE BEST SCIENTIFIC FILM (including method and process of science, contribution of Scientists, etc.) ENVIRONMENT CONSERVATION / PRESERVATION FILM (including awareness)

TIMELESS TRAVELLER-THE HORSESHOE CRAB (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **M/S RIVERBANK STUDIOS, NEW DELHI**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **GAUTAM PANDEY**

CITATION

The award for the Best Scientific Film/ Environment Conservation / Preservation film of 2004 is given to **Timeless Traveller-The Horseshoe Crab**. This documentary has ventured to explore the most enigmatic creature The HORESESHOE CRAB, in a very scientific and analytical manner, effectively urging mankind to conserve this unique species.

रिवर बैंक स्टूडियोज़

अत्याधुनिक तकनीक से सम्पन्न रिवर बैंक स्टूडियोज की स्थापना 35 वर्ष पूर्व दिल्ली में वन्य जीवन तथा अन्य पर्यावरण संबंधी धारावाहिक बनाने के उद्देश्य से हुई। 200 से अधिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाली यह संस्था सिनेमा के क्षेत्र में उत्कृष्ट संस्थाओं में जानी जाती है। विश्व की प्रमुख संस्थाओं के मध्य भारत की साख स्थापित करने वाली यह एक प्रमुख संस्था है।

गौतम पांडेय

गौतम पांडेय भारत के युवा एवं उदीयमान फिल्मकार हैं जो अपनी पर्यावरण एवं वन्यजीवन पर आधारित फिल्मों के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

प्रकृति–प्रेमी परिवार में जन्मे गौतम का फिल्म बनाने का शौक बचपन से ही आरम्भ हो गया था और अब उन्होंने फिल्म को वन्यजीवन एवं पर्यावरण का संदेश देने का माध्यम बना लिया है। गौतम ने वन्यजीवन एवं पर्यावरण पर अनेक वृत्तचित्र बनाए हैं। वर्ष 2002 में उन्हें अपनी फिल्म **कुरुम्बाज–चिल्ड्रन ऑफ द ब्लू माउन्टेन्स** के लिए **मेयर आफ प्राग** का पुरस्कार मिला।

प्रतिष्ठित कार्टूनकार एवं ग्राफिक डिज़ाइनर गौतम को मैजिक आफ लाइफ फिल्म के लिए वातावरण फिल्म समारोह में **न्यूकमर अवार्ड खंड** में सर्वोत्तम डाक्यूमेन्टरी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

RIVERBANK STUDIOS

Riverbank Studios state of art production house started some 35 years ago in Delhi making documentary films on wildlife and environment and fiction based on serials including feature films. With over 200 documentaries, international and national awards to their name, Riverbank Studios is a testament to Mike Pandey's work and is a continuing legacy of great cinema. It has established India in the highly competitive international cinema circuit.

GAUTAM PANDEY

Gautam Pandey is one of India's young and upcoming wildlife filmmakers who has already won several national and international awards for his films on wildlife and environment.

Born into a family of nature–enthusiasts, Gautam's passion for filmmaking started at an early age and he is now focused on using film as a medium to bring about wildlife and other environmental issues.

Gautam has directed and produced several films on wildlife and environment. In 2002, he won his first award–the prestigious **Mayor Of Prague Award** at **IFAAF** for the **kurumbas–children of the blue mountains**

His film **Timeless Traveller – The Horseshoe Crab** is an appeal for the conservation of a unique species and aims to achieve widespread public awareness and appreciation of the horseshoe crabs throughout India and the world.

An established animator and graphics designer, Gautam has also won the Best Documentary in the **Newcomer Award Category** at the **Vatavaran Film Festival** for his animated film **Magic of Life**.

सामाजिक विषयों (जैसे मद्य निषेध, महिला एवं बाल कल्याण और दहेज, नशे की बुराई, विकलांगों का कल्याण आदि पर सर्वोत्तम फिल्म)

द्विजा (मराठी)

निर्माता **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **पंकज पुरन्दरे** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सामाजिक विषयों पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार मराठी फिल्म **द्विजा** को दिया गया है। यह लघुकल्पित फिल्म एक बालविधवा की व्यथा एवं वास्तविकता से उसका सामना करने की क्षमता का भावपूर्ण एवं सिनेमाई प्रस्तुतीकरण है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON SOCIAL ISSUES (such as prohibition, women and child welfare, and dowry, drug abuse, welfare of the handicapped etc.)

DWIJAA (Marathi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **Film and Television Institute of India, Pune**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **PANKAJ PURANDARE**

CITATION

The award for the Best Film on Social Issues for the year 2004 is given to **Dwijaa**. This short fiction film presents the distress of a child widow and her graduation over reality with subtle and sensitive cinematic treatment.

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

सन् 1960 में प्रभात स्टूडियो के प्रांगण में स्थापित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे का जन्म एक उत्तम विरासत के बीच हुआ। वर्षों से फिल्म एवं टेलीविजन के क्षेत्र में उत्तम शिक्षा का उद्देश्य रखते हुए इस संस्थान ने अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध फिल्मी प्रतिभावों को जन्म दिया। आज इस संस्थान को फिल्म शिक्षा के क्षेत्र में न केवल भारत में अपितु एशिया और यूरोप में भी एक उत्कृष्ट संस्था के रूप में जाना जाता है। संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित फिल्मों में देश–विदेश के विभिन्न फिल्म समारोहों में अनेक पुरस्कार विजित किए हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत यह संस्थान एक स्वायत्त संस्था है। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म स्कूलों के संस्थान 'सिलेक्ट' का सदस्य है।

FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA

Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat studio premises at Pune and thereby inheriting a rich legacy in quality Cinema , the Film and Television Institute of India (FTII) has truly lived up to its avowed objective in the field o f imparting training in film making and television programme production. Today the FTII is considered as a Center of Excellence not only in India but also in Asia and Europe . Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad. Many of them have own National and International awards.

The FTII is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India.

The FTII is a member of CILECT an international association of film schools.

पंकज पुरंदरे

मुम्बई विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक पंकज पुरंदरे ने फिल्म निर्देशन में भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से सन् 2004 में डिप्लोमा प्राप्त किया है।

PANKAJ PURANDARE

Pankaj Purandare is a Bachelor of Science from University of Mumbai.

He joined Narsee Monjee Institute of Management Studies to pursue Masters in Marketing in 1996. He completed Diploma in Film Direction from FTII, Pune in 2004.

सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फिल्म (खेलों का शामिल करना)

शोर्स ऑफ साइलेंस–व्हेल शार्क्स इन इण्डिया (अंग्रेजी)

निर्माता **गौतम पांडे** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **रंजना पांडे** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम गवेषणा/साहसी फिल्म का पुरस्कार अंग्रेजी फिल्म **शोर्स ऑफ साइलेंस–व्हेल शार्क्स इन इण्डिया** को दिया गया है। वृत्तचित्र में गुजरात के समुद्रतट पर व्हेल शार्क पर मछुआरों की क्रूरता का सशक्त एवं सूक्ष्म चित्रण है, जो मछुआरों की इस अनभिज्ञता में परिवर्तन ला सकता है।

AWARD FOR THE BEST EXPLORATION/ADVENTURE FILM (To include sports)

SHORES OF SILENCE – WHALE SHARKS IN INDIA (English)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **GAUTAM PANDEY**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RANJANA PANDEY**

CITATION
The award for the best exploration/adventure film for the year 2004 is given to **Shores of Silence – Whale Sharks in India**. This documentary has captured the cruelty of fisher-men over harmless sea-creature, the whale shark, along the Gujarat coast, with a fine insight and bravado, which could bring transformation to the ignorance of the fisherfolks engaged in hunting of whale sharks.

गौतम पांडेय

गौतम पांडेय भारत के युवा एवं उदीयमान फिल्मकार हैं जो अपनी पर्यावरण एवं वन्यजीवन पर आधारित फिल्मों के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

प्रकृति–प्रेमी परिवार में जन्मे गौतम का फिल्म बनाने का शौक बचपन से ही आरम्भ हो गया था और अब उन्होंने फिल्म को वन्यजीवन एवं पर्यावरण का संदेश देने का माध्यम बना लिया है। गौतम ने वन्यजीवन एवं पर्यावरण पर अनेक वृत्तचित्र बनाए हैं। वर्ष 2002 में उन्हें अपनी फिल्म **कुरुम्बाज़–चिल्ड्रन ऑफ द ब्लू माउन्टेन्स** के लिए **मेयर आफ प्राग** का पुरस्कार मिला।

प्रतिष्ठित कार्टूनकार एवं ग्राफिक डिज़ाइनर गौतम को मैजिक आफ लाइफ फिल्म के लिए वातावरण फिल्म समारोह मे न्यूकमर अवार्ड खंड में सर्वोत्तम डाक्यूमेन्टरी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

GAUTAM PANDEY

Gautam Pandey is one of India's young and upcoming wildlife filmmakers.

Born into a family of nature–enthusiasts, Gautam's passion for filmmaking started at an early age and he is now focused on using film as a medium to bring about wildlife and other environmental issues.

In 2002, he won his first award–the prestigious **Mayor Of Prague Award** at **IFAAF** for the **kurumbas–children of the blue mountains**

His film **Timeless Traveller – The Horseshoe Crab** is an appeal for the conservation of a unique species.

Gautam has also won the Best Documentary in the **Newcomer Award Category** at the **Vatavaran Film Festival** for his animated film **Magic of Life**.

रंजना पांडेय

रंजना पांडेय तीस वर्षों से मीडिया संबंधी शिक्षा के लिए कार्य कर रही हैं। रंजना ने प्रारम्भिक प्रशिक्षण फ्रांस एवं बेल्जियम में प्राप्त किया। इन्होंने बच्चों के लिए वन्यजीवन संबंधी एवं शिक्षात्मक फिल्में बनाना अपने पति एवं पार्टनर माईक पांडेय के साथ 1977 में शुरू किया एवं दिल्ली में रिवरबैंक स्टूडियोज़ की स्थापना की।

बालकेन्द्रित विचार एवं गतिविधियों की प्रेरणा से रंजना ने बच्चों के लिए मनोविनोदपूर्ण एवं शिक्षात्मक सीरिज़ **खुल्लमखुल्ला** की परिकल्पना की। इनका उद्देश्य प्रचलित किताबी शिक्षा प्रणाली से हटकर दूरदर्शन के माध्यम से ज्ञान को बच्चों के लिए रुचिकर एवं मजेदार बनाना था। इनकी अन्य फिल्में हैं– **टाइगर्स ऑफ रनथम्भौर** तथा **द लास्ट माइग्रेशन–वाइल्ड ऐलीफेन्ट्स कैप्चर इन सरगुजा**। यह वाइल्डस्क्रीन 1994 समारोह में प्रतिष्ठित पुरस्कार ग्रीन ऑस्कर पांडा प्राप्त करने वाली प्रथम एशियाई फिल्म थी। **शोर्स ऑफ साइलेन्स व्हेल शार्क्स इन इंडिया** रिवरबैंक स्टुडियोज़ को प्राप्त होने वाला दूसरा ऑस्कर है।

RANJANA PANDEY

Ranjana Pandey has been working in the field of media based education for over 30 years. She took up wildlife and educational filmmaking for children as her profession in 1977 along with her husband and partner **Mike Pandey**.

Ranjana's child centric thoughts and activities motivated her to conceptualize **Khullam Khulla**, a fun learning educational series for children. Her aim was to breakaway from the conventional education system and to seek the medium of television to make learning interesting and fun.

Her other works include films like **Tigers of Ranthambore** and **The Last Migration–Wild Elephant Capture In Sarguja** which was the first Asian film to win the world's most prestigious award–**The Green Oscar–Panda Award at the Wildscreen, 1994**.

Shores of Silence- Whale Sharks in India has also won the **The Green Oscar–Panda Award**

सर्वोत्तम खोजी फिल्म

हार्वेस्ट ऑफ हंगर (अंग्रेजी / उड़िया)

निर्माता **ऐक्शन एड इण्डिया** को रजत कमल एवं 10,000 / – रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशक **रूपश्री नन्दा** को रजत कमल एवं 10,000 / – रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम खोजी फिल्म का पुरस्कार **हार्वेस्ट ऑफ हंगर** को बोलनगीर गांव के दुर्भिक्ष पीड़ित बल प्रयोग एवं शोषणपूर्ण वातावरण में उत्तरजीविता के लिए संघर्ष कर रहे उदासीन ग्रामवासियों की कठिनाइयों का खोजी चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST INVESTIGATIVE FILM

HARVEST OF HUNGER (English/Oriya)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ACTION AID INDIA, BHUBANESHWAR**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **RUPASHREE NANDA**

CITATION

The award for the Best Investigative film for 2004 is given to **HARVEST OF HUNGER**. This documentary portrays the apathy and hardships of drought effected villagers from Bolangir District, and their struggle to survive under an atmosphere of compulsive exploitation in excellent investigative and poignant style.

ऐक्शन ऐड इंडिया

35 देशों में कार्यरत अंतर्राष्ट्रीय संस्था ऐक्शन ऐड गरीबी उन्मूलन तथा सामाजिक न्याय के क्षेत्र में कार्यरत है। भारत में सन् 1972 से सक्रिय ऐक्शन ऐड ने मानव अधिकार तथा पिछड़े वर्ग को मूलभूत अधिकार दिलवाने के क्षेत्र में कार्य किया है। सन् 1995 से यह संस्था उड़ीसा के चक्रवात से प्रभावित विभिन्न क्षेत्रों में सहायता कार्य कर रही है।

ACTION AID INDIA

Action Aid is one of the major non-governmental organizations in the world with branches in Afghanistan, Pakistan, China and Africa. In India it is working in partnership with grassroot level NGOs and CBOs. It aims at the upliftment of the downtrodden and the marginalized and focuses on the poorest of the poor. It stresses on people's rights, both human and constitutional, justice and empowerment as opposed to charity.

रूपश्री नन्दा

हार्वेस्ट ऑफ हंगर रूपश्री नन्दा की पहली फिल्म है। उन्होंने उत्कल विश्वविद्यालय से अंग्रेजी एवं मास कम्युनिकेशन्स रिसर्च सेन्टर, जामिया मिलिया इस्लामियां से जनसंचार में स्नातकोत्तर किया। वह गरीबी, क्षुधा, प्रवास, सूखा इत्यादि विषयों पर स्वतंत्र पत्रकारिता लेखन करती हैं। आजकल ये दो विषयों, बोलनगीर में सूचना प्रसार एवं सुक्तल बांध परियोजना के कारण लोगों को होने वाली कठिनाईयों पर फिल्म बना रही हैं।

RUPASHREE NANDA

Harvest of Hunger is Rupashree Nanda's first film. She holds Masters degrees in both English and Mass Communication, from the Utkal University and Mass Communication Research Center, Jamia Millia Islamia respectively. She is also a freelance journalist writing on issues of poverty, marginalization, hunger, drought, migration, labour etc. Currently, she is filming two issues, the right to information campaign in Bolangir and people's unease about the Suktel Dam project in Bolangir.

सर्वोत्तम कार्टून फिल्म

राजू एण्ड आई (अंग्रेजी/हिन्दी)

निर्माता **असीमा चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **गायत्री राव** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
कार्टूनकार **चेतन शर्मा** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम कार्टून फिल्म का पुरस्कार **राजू एण्ड आई** को दिया गया है। यह फिल्म कार्टून कला के द्वारा एक बालक की सामाजिक परिस्थितियों के प्रति जागरूकता एवं उसके अनुभवों का भावुक चित्रण करती है।

AWARD FOR THE BEST ANIMATION FILM

RAJU & I (English/Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **ASEEMA CHARITABLE TRUST, MUMBAI**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **GAYATRI RAO**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Animator: **CHETAN SHARMA**

CITATION

The award for the Best Animation film for 2004 is given to **RAJU & I**. This short film depicts the emotional journey of a child and his experience and awareness of the social conditions through an excellent technique of animation.

असीमा चेरीटेबल ट्रस्ट

असीमा चेरीटेबल ट्रस्ट पिछड़े वर्ग के बच्चों के जीवनस्तर मे उत्थान के लिए कटिबद्ध है। सन् 1997 में बान्द्रा मुम्बई में स्थापित ट्रस्ट का केंद्र दिन प्रतिदिन अनेकानेक बच्चो की शिक्षा के क्षेत्र में सहायक है। राजू एण्ड आई नामक फिल्म का निर्माण उन्होंने बच्चों में जागरुकता लाने तथा उनके अधिकारों के बारे में जानकारी देने के उद्देश्य से किया। आज यह ट्रस्ट 450 बच्चों की विभिन्न स्तरों पर शिक्षा का प्रबंध करता है।

गायत्री राव

गायत्री राव को दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट्स से एप्लाइड आर्ट्स में स्नातक तथा आई.आई.टी. मुम्बई से विजुअल कम्यूनिकेशन्स में मास्टर ऑफ डिजाइन तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् यूनिसेफ के सौजन्य से फ्लोरिडा के वाल्ट डिजनी स्टुडियोज में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। इन्होंने शुरु में राममोहन बायोग्राफिक्स में कार्य किया तथा 1997 में एनीगमैजिक स्पेशल इफकेट्स (प्रा.) लिमिटेड की सह संस्थापक एवं निर्देशक बन गईं। गायत्री ने कार्टून फिल्मों, विज्ञापन फिल्मों, लघु फिल्मों, पुस्तक सज्जा, बच्चों की पुस्तकों के लिए चित्रांकन जैसी विविध गतिविधियों में अपने कार्य का विस्तार किया। उन्होंने भारत की महान, किन्तु प्रछन्न लोककला को पुनर्जीवित करने के लिए रॉवर्क्स की स्थापना भी की है।

चेतन शर्मा

चेतन शर्मा भारत के अग्रणी कार्टूनकारों में से एक हैं, चाहे वह करडी टेल्स के लिए करडी और कीरा हो या सेरेलक विज्ञापन का प्यारा नीला भालू। जिसके लिए भी वे पैंसिल उठाते हैं मानो उसमें हृदय डाल देते हैं। इन्होंने प्रतिष्ठित प्रकाशक स्काई म्यूजिक (कृष्णा) तथा टाटा डॉनले (पेट्स आर फन) के लिए बच्चों की कुछ पुस्तकों में चित्रांकन किया है जो बहुत सराहा गया। मुम्बई में इनके स्टुडियो 'एनीमैजिक' की गतिविधियों में बच्चो की पुस्तकों का चित्रांकन, कार्टून, फिल्मों के लिए विशेष प्रभाव इत्यादि शामिल है। चेतन भारतीय बाल चित्र समिति के लिए **मा** नामक लघु फिल्म का निर्देशन भी कर रहे हैं।

ASEEMA CHARITABLE TRUST

Aseema is a Public Charitable Trust dedicated to improving the lives of underprivileged children through education. Its Centre for Street Children was established in 1997 in Bandra, a suburb of Mumbai, and continues to reach out to a growing number of children. Aseema stongly believes that education is the right of every child. It is committed in creating awareness about the rights of the child. Today Aseema reaches out to 450 street and underprivileged children. The children are provided a nutritious meal dalily and a doctor visits the center at regular intervals.

GAYATRI RAO

Gayatri Rao took a bachelor's degree in Applied Arts (B.F.A) from the College of Arts, Delhi and Masters in Design (M.Des) in Visual Communication, from IDC, IIT-Mumbai. She has also had the opportunity to do an internship at Walt Disney Studios, Florida sponsored by Unicef. She worked initially at RamMohan Biographics and in 1997 became the co-founder and director of Anigmagic Special Effects Pvt. Ltd. where she extended the scope of her work beyond the numerous animation projects for advertisements, corporate and short films, into book design and children's book illustration.

She is also the founder of Rawworks – a project to help rejuvenate some of India's rich yet largely untapped folk and tribal arts.

CHETAN SHARMA

Considered one of the forefront animators in India today, he has the knack of putting a heart into virtually any thing that his pencil sketches out, whether it is Karadi and Keera for Karadi Tales or the lovable blue bear for a Cerelac commercial. He has illustrated quite a few children's books for reputed publishers like Sky Music (Krishna) and Tata Donnelly (Pets are Fun), which have been highly appreciated. Currently, he runs 'Animagic' a studio in Mumbai, India, which does everything from children's book illustrations, animation to storyboarding and special effects for films. He is directing his first short film, titled **Maa-aa** for CFSI.

निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

क्ष त्र ज्ञ (हिन्दी)

निर्देशक **अमित दत्ता** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का निर्णायक मण्डल का विशेष पुरस्कार **अमित दत्ता** को उनकी फिल्म **क्ष त्र ज्ञ** में कहानी की प्रयोगात्मक वर्णनशैली, अनूठे दृश्य प्रभाव के अभिनव प्रस्तुतीकरण के लिए दिया गया है।

SPECIAL JURY AWARD

KSHY TRA GHYA (Hindi)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **AMIT DUTTA**

CITATION
The Special Jury Award for the year 2004 is given to the director **Amit Dutta** for his film **KSHY TRA GHYA**. This short fiction film has evolved an experimental form of narration within a story form, with excellent special visual effects in an innovative style.

अमित दत्ता

वाणिज्य प्रबंधन में स्नातक अमित ने सिनेमा के क्षेत्र को चुना और 2000 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे में फिल्म निर्देशन के छात्र बन गये। फिल्म **क्ष त्र ज्ञ** से वर्ष 2004 में इन्होंने अपना डिप्लोमा पूरा किया।

AMIT DUTTA

A Bachelor in Business Administration, Amit Dutta chose a career in Cinema. A student of Film Direction, he joined Film and Television Institute of India, Pune in 2000 and completed his diploma in the year 2004 with **Ksha Tra Gya**.

सर्वोत्तम लघु कल्पित फिल्म

क्रेडल सॉंग (हिन्दी /अंग्रेजी)

निर्माता **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **निमिशा पांडे** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम लघुकल्पित फिल्म का पुरस्कार **क्रेडल सॉंग** को एक विकलांग शिशु को जन्म देने वाले पति–पत्नी की मानसिक पीड़ा के भावपूर्ण एवं सिनेमाई चित्रण के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST SHORT FICTION FILM

CRADLE SONG (HINDI/ENGLISH)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE**
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **NIMISHA PANDEY**

CITATION
The Award for the Best Short Fiction Film of the year 2004 is given to **CRADLE SONG**. This short film has explored the mental agony of a couple, who have given birth to a crippled child, in a ethereal and stimulating cinematic style.

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

सन् 1960 में प्रभात स्टूडियो के प्रांगण में स्थापित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे का जन्म एक उत्तम विरासत के बीच हुआ। वर्षों से फिल्म एवं टेलीविजन के क्षेत्र में उत्तम शिक्षा का उद्देश्य रखते हुए इस संस्थान ने अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध फिल्मी प्रतिभावों को जन्म दिया। आज इस संस्थान को फिल्म शिक्षा के क्षेत्र में न केवल भारत में अपितु एशिया और यूरोप में भी एक उत्कृष्ट संस्था के रूप में जाना जाता है। संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित फिल्मों में देश–विदेश के विभिन्न फिल्म समारोहों में अनेक पुरस्कार विजित किए हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत यह संस्थान एक स्वायत्त संस्था है। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म स्कूलों के संस्थान 'सिलेक्ट' का सदस्य है।

निमिषा पांडे

दिल्ली के इन्द्रप्रस्थ कॉलेज से जनसंचार में स्नातक तथा भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से टेलीविजन निर्देशन में प्रशिक्षित हैं। वे कुछ सुप्रसिद्ध टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण कंपनियों के साथ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर चुकी हैं। आज कल वे सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन में सह–निर्माता के रूप में कार्यरत हैं।

FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA

Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat studio premises at Pune and thereby inheriting a rich legacy in quality Cinema , the Film and Television Institute of India (FTII) has truly lived up to its avowed objective in the field o f imparting training in film making and television programme production. Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad. Many of them have own National and International awards.

The FTII is a member of CILECT an international association of film schools.

NIMISHA PANDEY

Nimisha is a graduate in Mass Communication from Indraprastha College for Women, Delhi University and Post Graduate in television direction from Film and Television Institute of India, Pune.

She spearheaded the launch of Ryan's TV (an in house channel for Ryan's International School) in June 2003, conducting filmmaking workshops with the students.

She worked as an intern with UTV, Mumbai in June, 2002 and handled production and creative aspects of the serial Shagun.

Working as an intern with Moving Pictures Company, Noida in June, 2001, she was involved in reporting, scripting, production and editing for their breakfast show Subah Savere.

Nimisha also did art direction for a telefilm **Mera Ansh** produced by H.V. Films, Mumbai.

She is currently working withSony Entertainment Television as an associate producer.

परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म

साँझ (हिन्दी)

निर्माता **भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
निर्देशिका **जैसमीन कौर** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का परिवार कल्याण पर सर्वोत्तम फिल्म का पुरस्कार हिन्दी फिल्म **साँझ** को दिया गया है। फिल्म में वृद्धावस्था की असहाय एवं निरुपाय स्थिति का सशक्त एवं भावुक चित्रण है। इसमें जीवन का वास्तविकता से साक्षात्कार भी है।

AWARD FOR THE BEST FILM ON FAMILY WELFARE

SAANJH (HINDI)

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Producer: **FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA, PUNE**
Rajat Kamal and cash prize of Rs. 10,000/- to the Director: **JASMINE KAUR**

CITATION

The award for the Best Film on Family Welfare of the year 2004 is given to **SAANJH**. This is a very sensitively structured short film which deals with the apathy of an old man and his encounter with reality.

भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान

सन् 1960 में प्रभात स्टूडियो के प्रांगण में स्थापित भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे का जन्म एक उत्तम विरासत के बीच हुआ। वर्षों से फिल्म एवं टेलीविजन के क्षेत्र में उत्तम शिक्षा का उददेश्य रखते हुए इस संस्थान ने अनेक महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध फिल्मी प्रतिभावों को जन्म दिया। आज इस संस्थान को फिल्म शिक्षा के क्षेत्र में न केवल भारत में अपितु एशिया और यूरोप में भी एक उत्कृष्ट संस्था के रूप में जाना जाता है। संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा निर्मित फिल्मों में देश–विदेश के विभिन्न फिल्म समारोहों में अनेक पुरस्कार विजित किए हैं।

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत कार्यरत यह संस्थान एक स्वायत्त संस्था है। भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म स्कूलों के संस्थान 'सिलेक्ट' का सदस्य है।

FILM AND TELEVISION INSTITUTE OF INDIA

Established in the year 1960 on the erstwhile Prabhat studio premises at Pune and thereby inheriting a rich legacy in quality Cinema , the Film and Television Institute of India (FTII) has truly lived up to its avowed objective in the field o f imparting training in film making and television programme production. Today the FTII is considered as a Center of Excellence not only in India but also in Asia and Europe . Films made by the students of the Institute are entered in festivals both in India and abroad. Many of them have own National and International awards.

The FTII is an autonomous body under the Ministry of Information and Broadcasting of the Government of India.

The FTII is a member of CILECT an international association of film schools.

जैसमीन कौर

जालंधर पंजाब में जन्मी लेडीश्रीराम कॉलेज दिल्ली से 1999 में राजनीतिशास्त्र (विशेष) में स्नातक हैं। जैसमीन ने वर्ष 2000 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान मे प्रवेश कर वर्ष 2004 में निर्देशन में डिप्लोमा प्राप्त किया। इनकी फिल्मों में **गुड़िया**, **अन्तराल**, **सॉझ** तथा **एवरी वन इज़ इन्वाइटिड**, **द पिचिंग इज ऑन** शामिल हैं।

JASMINE KAUR

Born in Jalandhar, Punjab, Jasmine completed her graduation in Political Science (Hons.) from Lady Shri Ram College, New Delhi in 1999. She joined the Film and Television Institute, Pune in 2000 and took a Diploma in Direction in 2004. Her filmography includes **Gudia, Antaraal** (The Interlude), **Saanjh** (The Dusk) and **Everyone's invited.... the pitching is on** (Documentaries).

सर्वोत्तम निर्देशन पुरस्कार

उमेश विनायक कुलकर्णी

निर्देशक **उमेश विनायक कुलकर्णी** को स्वर्ण कमल एवं 20,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम निर्देशन का पुरस्कार **उमेश विनायक कुलकर्णी** को मराठी फिल्म **गिरनी** के निर्देशन के लिए दिया गया है। फिल्म में भावुक मस्तिष्क पर ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव का नाटकीय एवं सिनेमाई चित्रण है।

AWARD FOR THE BEST DIRECTION

UMESH VINAYAK KULKARNI

Swarna Kamal and a Cash Prize of Rs. 20,000/- to the Director: **UMESH VINAYAK KULKARNI**

CITATION

The award for the Best Direction for the year 2004 is given to **Umesh Vinayak Kulkarni** for the Marathi film **GIRNI**. This short film has portrayed the impact of sound on a young and sensitive mind with excellent dramatic and cinematic style.

उमेश विनायक कुलकर्णी

सन् 1976 में जन्में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे के विद्यार्थी हैं। गिरनी से पहले उमेश कई वृत्तचित्रों जैसे–**दर्शन**, **फेड**, **सत्यकाम**, **सेव द चिल्ड्रन** आदि का निर्माण कर चुके हैं। उमेश कई फीचर फिल्मों जैसे–**डोघी**, **ज़िंदगी ज़िंदाबाद**, **बस यारी राखो**, **एकलव्य** (वृत्तचित्र), **पिहू**, **एक अकेली** आदि के निर्माण में सहायता कर चुके हैं।

UMESH VINAYAK KULKARNI

Born in 1976, Umesh is a student of Film Direction at Film and Television Institute of India, Pune. Before Girni, Umesh has made documentaries like **Darshan, Fed, Satyakam, Save the Children** etc. Umesh has also assisted in the production of feature films **Doghi, Zindagi Zindabad, Bas Yari Rakho**, documentaries **Eklavya, Pihu, Ek Akeli** and several corporate films.

His film **Darshan** was included in the Indian Panorama 2003.

सर्वोत्तम छायांकन पुरस्कार

मनोज रेमंड लोबो

छायाकार **मनोज रेमंड लोबो** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
एड लेब्स, मुम्बई को फिल्म **गिरनी** के लिए रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम छायांकन का पुरस्कार **मनोज रेमंड लोबो** को मराठी फिल्म **गिरनी** के सुन्दर दृश्य चित्रों के छायांकन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST CINEMATOGRAPHY

MANOJ RAYMOND LOBO

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Cameramen: **MANOJ RAYMOND LOBO**
Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the **AD LABS, MUMBAI** for the film **GIRNI**

CITATION
The Best Cinematography Award of 2004 is given to **Manoj Raymond Lobo** for the Marathi film **GIRNI**. This short film is highly enriched through excellent visual choreography.

मनोज रेंमड लोबो

सन् 1974 में मुम्बई में जन्में मनोज लोबो भारतीय फिल्म एवं टेलीविज़न संस्थान, पुणे से सिनेमेटोग्राफी में डिप्लोमा प्राप्त हैं। विज्ञान में स्नातक मनोज लघु फिल्म **गिरनी** के कैमरामैन हैं।

MANOJ RAYMOND LOBO

Manoj Lobo was born in 1974 in Mumbai, Maharashtra. A Bachaler in Science from Mumbai University, he joined FTII in 2000 and shot the short film **GIRNI**.

सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन पुरस्कार

विवेक

ध्वनि आलेखक **विवेक** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम ध्वनि आलेखन का पुरस्कार **विवेक** को हिन्दी फिल्म **क्ष त्र ज्ञ** में कहानी की प्रयोगात्मक वर्णनशैली, अनूठे दृश्य प्रभाव के ध्वनि आलेखन के लिए दिया गया है।

AWARD FOR THE BEST AUDIOGRAPHY

VIVEK

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Audiographer: **VIVEK**

CITATION

The Best Audiography Award of 2004 is given to **Vivek** for the Hindi film **KSHY TRA GHYA**. This short film has evolved an experimental form of narration within a story form, with excellent sound design.

विवेक

केरल में 1977 में जन्मे विवेक दिल्ली विश्वविद्यालय से वाणिज्य स्नातक हैं। इन्होंने वर्ष 2000 में भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान में प्रवेश किया। विवेक ने **क्ष त्र ज्ञ** के लिए ध्वनि आलेखन किया है।

VIVEK

Born in Kerala in 1977, Vivek is a commerce graduate from Delhi University. He joined Film and Television Institute of India, Pune in 2000. Vivek has audiographed the short film **Kshy Tra Gya**.

सर्वोत्तम संपादन पुरस्कार

प्रशान्त नाइक

संपादक **प्रशान्त नाइक** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम सम्पादन का पुरस्कार **प्रशांत नाइक** को अंग्रेजी फिल्म **हार्वेस्ट ऑफ हंगर** के लिये दिया गया है। बोलनगीर गांव के दुर्भिक्ष पीड़ित एवं उत्तरजीविता के लिए संघर्ष कर रहे उदासीन ग्रामवासियों की कठिनाइयों का चित्रण सम्पादन द्वारा और भी सशक्त हो गया है।

AWARD FOR THE BEST EDITING

PRASHANT NAIK

Rajat Kamal and a Cash Prize of Rs. 10,000/- to the Editor: **PRASHANT NAIK**

CITATION

The Award for the Best Editing for the year 2004 is given to **Prashant Naik** for the film **HARVEST OF HUNGER**. This film has documented the apathy of the drought stricken villagers, by fluent and flowing editing style, keeping the interest on the subject engaged.

प्रशान्त नाइक

प्रशान्त नायक भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान पुणे के स्नातक हैं और आजकल वहां अध्यापन करते हैं। इससे पूर्व इन्होंने एक दशक से अधिक समय तक मुम्बई में वीडियो उद्योग एवं फिल्म सम्पादन के क्षेत्र में कार्य किया है।

PRASHANT NAIK

Prashant Naik is a graduate from FTII, Pune and currently teaches there. He has worked as an editor in Mumbai film and video industry for more than a decade.

सर्वोत्तम संगीत निर्देशन पुरस्कार

संगीत निर्देशक **ध्वनि** को रजत कमल एवं 10,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम संगीत निर्देशन का पुरस्कार **ध्वनि** को मराठी फिल्म **एक सागर किनारे...ए सीसाइड स्टोरी** के संगीत निर्देशन के लिये दिया गया है। फिल्म का कथ्य संगीत के सानिध्य में और भी सुन्दर हो गया है।

AWARD FOR THE BEST MUSIC DIRECTION

DHWANI

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Music Director **DHWANI**

CITATION

The Award for the Best Music Direction for the year 2004 is given to **Dhwani** for the film **EK SAGAR KINARE.....A SEASIDE STORY**. The beauty of this short film is enhanced by the accompaniment of very throbbing and engaging music.

ध्वनि

मुम्बई स्थित संगीत समूह ध्वनि लघु फिल्मों, वृत्तचित्रों एवं विज्ञापन फिल्मों के लिए पार्श्व संगीत देता है। **एक सागर किनारे.....ए सीसाइड स्टोरी** फिल्मी संगीत निर्देशन के क्षेत्र में इनका प्रथम प्रयास है।

DHWANI

Dhwani is a music group based in Mumbai. The group is active in providing background music for short films, documentaries and ad-films etc.

Eka Sagar Kinare....A Seaside Story is their first foray into independent music direction for film.

सर्वोत्तम प्रकथन / वॉयस ओवर

यौंग येन थॉ

प्रकथन **यौंग येन थॉ** को रजत कमल एवं 10,000 / – रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सर्वोत्तम प्रकथन / वायस ओवर का पुरस्कार **यौंग येन थॉ** को अंग्रेजी फिल्म **द लीजेंड ऑफ फैट ममा** के लिए दिया गया है। फिल्म में चाइनीज़ समुदाय की गृहस्मारी यात्रा भावपूर्ण, संवेदनशील स्वर में फिल्म की गति के अनुसार वर्णित है।

BEST NARRATION / VOICE OVER

YAN YEN THAW

Rajat Kamal and a cash prize of Rs. 10,000/- to the Narrator: **YAN YEN THAW**

CITATION

The Best Narration/Voice Over award is given to **Yan Yen Thaw** for the English film **THE LEGEND OF FAT MAMA**. This short film communicates the nostalgic journey of the Chinese community in Calcutta through a moving narration, complying with the harmonious pace of the film.

यौंग येन थॉ

यौंग येन थॉ एक व्यावसायिक इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी लॉ फर्म 'यांग' के संस्थापक हैं। अंतर्राष्ट्रीय निवेश के क्षेत्र में कानूनी परामर्श आदि में वे अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। अंतर्राष्ट्रीय बार एसोसिएशन तथा सर्वोच्च न्यायालय बार एसोसिएशन के सदस्य यौंग येन थॉ चीनी मूल के भारतीय नागरिक हैं। सन् 1969 में जन्मे यौंग की दर्शनशास्त्र, संगीत आदि में रुचि है। वे अंग्रेजी के अलावा मैंडरिन, हक्का, जापानी, फ्रांसीसी, हिंदी, कन्नड़ तथा तमिल बोलते हैं।

YANG YEN–THAW

YANG Yen–Thaw is the founder and principal of YANG, a corporate and intellectual property law firm. He has been working in the areas of cross-border investment: strategic alliances and joint ventures, mediation and negotiations; transactional and contractual work; legal; due diligence; project strategy, planning and implementation and intellectual property laws since 1993 when he obtained his legum baccalaureus and his Bachelors in Academic Laws.

He is a member of the International Bar Association, the SupremeCourt Bar Association of India and the Bar Council of Delhi. He is also the Chairman of the task group for South and Central Asia region of the Internet Corporation for Assigned Names and Numbers (ICANN).

Yen-Thaw is an Indian citizen of Chinese origin born in 1969. His personal interests include – philosophy, adventure sports, music and e-things. He speaks English, Mandarin, Hakka, Japanese, French Hindi, Kannada and Tamil.

पुरस्कार जो नहीं दिये गये

सर्वश्रेष्ठ कला/सांस्कृतिक फिल्म

सर्वोत्त्म प्रोत्साहन देने वाली फिल्म (पर्यटन, निर्यात, कारीगरी, उद्योग विषयों को शामिल करना)

सर्वोत्तम कृषि फिल्म (पशुपालन, दुग्ध उत्पादन आदि जैसे कृषि से संबंधित विषयों का शामिल करना)

सर्वोत्तम शैक्षिक/प्रेरक/शिक्षाप्रद फिल्म

Award not recommended for

Best Arts/Cultural Film

Award for the Best Promotional Film (to cover tourism, export, crafts, industry etc.)

Award for the Best Film on Agriculture (to include subjects related to and allied to agriculture like animal husbandry, dairying etc.)

Award for the Best Eductional/Motivational/Instructional Film

सिनेमा पर सर्वोत्तम लेखन पुरस्कार

Awards for Best Writing on Cinema

सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक 2004

स्टारडस्ट–विन्येट्स फ्रॉम द फ्रिन्जेज़ ऑफ द फिल्म इंडस्ट्री

प्रकाशक **पेंग्विन बुक्स (इंडिया)** को स्वर्णकमल एवं 15,000/– रुपये का नकद पुरस्कार
लेखिका **श्रीमति रूपा स्वामीनाथन** को स्वर्ण कमल एवं 15,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति

वर्ष 2004 का सिनेमा पर सर्वोत्तम पुस्तक का पुरस्कार **स्टारडस्ट–विन्येट्स फ्रॉम द फ्रिन्जेज़ ऑफ द फिल्म इंडस्ट्री** को गूढ़ शोध तथा सुरुचिपूर्ण विवेचना के लिये दिया गया है। पुस्तक फिल्मों से जुड़े ऐसे व्यक्तियों के बारे में है जो पर्दे के पीछे छिपे होने के बावजूद अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

AWARD FOR THE BEST BOOK ON CINEMA 2004

STARDUST-VIGNETTES FROM THE FRINGES OF THE FILM INDUSTRY

Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the author of the book: **MS. ROOPA SWAMINATHAN**
Swarna Kamal and a cash prize of Rs. 15,000/- to the Publisher of the book: **PENGUIN BOOKS INDIA PVT. LTD.**

CITATION

The Award is presented to the book **STARDUST-VIGNETTES FROM THE FRINGES OF THE FILM INDUSTRY** for giving a rare, fascinating insight into the lives of people on the fringes of the film industry whose contribution to cinema is no less significant. The work is marked by painstaking research and incisive analysis that does not alienate the average cinema lover.

ंग्विन बुक्स (इंडिया)

ंग्विन बुक्स (इंडिया) अंग्रेज़ी भाषा के प्रकाशन ं भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे बड़ी प्रकाशन कंपनी है। सन् 1985 में स्थापित इस कंपनी ने क्तूबर 1987 से सात पुस्तकों के प्रकाशन से ार्य प्रारंभ किया। आज यह कम्पनी प्रति वर्ष 00 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन करती है ौर इसकी पुस्तक सूची में 700 से अधिक ीर्षक हैं।

ौपन्यासिक तथा गैर औपन्यासिक साहित्य पर च्छी पकड़ रखने वाली पेंग्विन इंडिया ने गभग हर पाठक वर्ग के लिये पुस्तकों का काशन किया है।

रूपा स्वामीनाथन

जन संचार में स्नातकोत्तर रूपा कुछ समय ॉस एंजेल्स में कार्य करके भारत लौटीं और मिल सिनेमा में फिल्मकार मणि रत्नम के सहायक के रूप में कार्य किया। उन्होंने फिल्म **'फाइव बाई फोर'** से अपना स्वतंत्र फिल्म निर्देशन प्रारंभ किया। इस फिल्म का प्रदर्शन ंघाई फिल्म समारोह तथा अमेरिकन फिल्म ाज़ार में किया गया। उन्होंने रूपा प्रकाशन के लिये सिनेमा पर आधारित पुस्तकों की एक ृंखला लिखी है। **'स्टार डस्ट'– 'विनिएट्स ़ॉम द फ्रिन्ज़ेज ऑफ द फिल्म इंडस्ट्री'** उनकी नवीनतम पुस्तक है।

PENGUIN BOOKS INDIA

Penguin Books India is the largest English language trade publisher in the Indian subcontinent. Founded in 1985, PBI began publishing in October 1987 with seven titles. Today, the company publishes over 200 titles every year and has an active backlist of over 750 titles.

Known for its strong fiction and narrative non-fiction list, Penguin India has published across virtually every segment including self-help, cookery, reference and quizzing, biography, travel, picture books, business, politics, history, health and fitness, religion and philosophy as well as sports and leisure.

ROOPA SWAMINATHAN

Roopa Swaminathan did her MS in Mass Communication from Kansas State University. She then went on to Los Angeles and worked there for a few years. She returned to India and worked in the Tamil film industry (as assistant to eminent director Mani Ratnam) for some time. She made her first feature film in 2000 titled, **Five By Four** for National Film Development Corporation (NFDC). The movie has been shown at the Shanghai film festival, and the American Film Market etc. She has also written a series of coffee table biographies for Rupa publications on legendary film personalities such as Sivaji Ganeshan, MGR and Kamalahasan. **'Star Dust – Vignettes from the fringes of the film industry'** is her latest book. She currently divides time between Mumbai and Chennai.

सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार 2003

नम्रता जोशी

फिल्म समीक्षक **नम्रता जोशी** को स्वर्ण कमल एवं 15,000/– रुपये का नकद पुरस्कार

प्रशस्ति
वर्ष 2004 का सर्वोत्तम फिल्म समीक्षक पुरस्कार नम्रता जोशी को दिया गया है। ऐसे समय में जब फिल्म समीक्षा जनसंपर्क का पर्याय बन गई है, अपने लेखों से उन्होंने फिल्म समीक्षा का उच्च स्तर निर्धारित किया है। उनकी समीक्षाओं में फिल्म माध्यम की अच्छी समझ दृष्टिगोचर होती है।

AWARD FOR THE BEST FILM CRITIC 2004

MS. NAMRATA JOSHI

Swarna Kamal and Cash prize of Rs. 15,000/- to **Ms. NAMRATA JOSHI**

CITATION
The Award is presented for consistently maintaining a high standard of film evaluation at a time when reviews are tending to become a public relations exercise. Her writings reveal a sound grasp of all aspects of film-making.

नम्रता जोशी

1999 से आउटलुक पत्रिका में विशेष संवाददाता के रूप में कार्यरत नम्रता जोशी सिनेमा पर लेखन के अतिरिक्त साप्ताहिक रूप से शोटाइम मैगजीन के लिए फिल्म रिव्यूज़ भी लिखती हैं। फ्रिप्रेस्की, भारत की सदस्या, नम्रता ने भारत में अनेक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों पर लेखन किया है।

नम्रता ने आउटलुक पत्रिका द्वारा प्रकाशित हिन्दी सिनेमा के चार विशेष अंकों का सम्पादन किया है। इनमें से एक विशेषांक पाथेर पांचाली की पचासवीं वर्षगांठ पर आधारित था। इन विशेषांकों से संबद्ध सभी कार्य नम्रता ने स्वयं किया।

NAMRATA JOSHI

Special correspondent with Outlook since 1999. The job involves writing features on cinema for the back-of-the book section of the magazine. She also writes the weekly film reviews column for Showtime magazine.

She is a member of FIPRESCI India, the Indian branch of the International Federation of Film Critics and has been regularly covering the International Film Festivals in India.

Has edited four special issues of Outlook on Hindi Cinema, including one on the 50 years of Pather Panchali. It involved conceptualizing ideas, coordinating stories and the accompanying visuals, commissioning columns, editing and production of the entire issue.

कथासार : Synopses :
कथाचित्र Features Films

अकले

मलयालम / 90 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: टॉम जॉर्ज कोलथ **निर्देशन** एवं **पटकथा:** श्याम प्रसाद **कैमरा:** एस. कुमार **संपादन:** विनोद सुकुमारन **संगीत:** विष्णु श्याम प्रसाद **कलाकार** : गीतू मोहनदास, टॉम जॉर्ज कोलथ, शीला

सन् 70 के दशक की पृष्ठ भूमि में बनी इस फिल्म में समुद्र किनारे एक छोटे से घर में मार्गेरिट इवान्स और उसके दो वयस्क बच्चे रोज़ा और नील रहते हैं। शर्मीली, कोमल रोज़ा का भाई काव्यात्मक हृदय नील एक कारखाने की घुटन से भरी नौकरी में फंसा हुआ है। फिल्म सार्थक रूप से नील की विभिन्न मनोदशाओं का तथा उसके परिवार और अपने जीवन के बीच संघर्ष का सफल चित्रण करती है। फिल्म नील इवान्स के दृष्टिकोण से उसकी कथा का वर्णन करती है।

AKALE

Malayalam/90 minutes/35mm

Producer: Tom George Kolath **Direction** and **Screenplay:** Shyamaprasad: **Camera:** S. Kumar **Editing:** Vinod Sukumaran **Music:** Vishnu Shyamaprasad **Cast:** Geethu Mohandas, Tom George Kolath, Sheela

Akale is set in the seventies in a shabby seaside house occupied by Margaret Evans and her two adult children: Shy, fragile Rosa and Neil, a restless, poetic soul trapped in a stifling factory job. Neil's dilemma forms a central conflict of the film, as the faces and agonizing choice between responsibility for his family and living his own life. Neil Evans narrates this, revisiting a time when his family longs to escape their meager existence by creating idealized fantasy worlds.

Elegant juxtaposition of the humorous and the tragic, lonely characters and dark sensibilities explore ways of using the medium of cinema to depict the inferior life and memories of characters. A dream – like, illusory atmosphere helps to create a powerful representation of family, memory and loss.

आलिशा

कोंकणी / 118 मिनट / 35 एमएम

निर्माता: राजेन्द्र तालक क्रिएशन्स **निर्देशक:** राजेन्द्र तालक **पटकथा:** दामोदर माउजो **कैमरा:** देबू देवधर **संपादन:** विजयधर पठारे **संगीत:** अशोक पतकी **कलाकार:** तपन आचार्य, प्रियंका बिदिए, विजय ताली, प्रशांति तलपणकर

आलिशा एक फोटोग्राफर होने के साथ पर्यावरण संरक्षक भी हैं। उद्योगपति परिवार में विवाह होने के साथ ही वह अपने आप को विरोधाभास में घिरा पाती है।

पर्यावरण संरक्षण के लिये संघर्ष में उसे अपने उद्योगपति परिवार से भी जूझना पड़ता है। यद्यपि आलिशा के रुख से उसके परिवार को अन्य उद्योगपति परिवारों से भी प्रताड़ना मिलती है परंतु अंत में उसकी इच्छा और पर्यावरण संबंधी विचारों का स्वागत होता है।

पर्यावरण और उद्योगों में सांमजस्य समय की पुकार है। फिल्म आलिशा इसी मुद्दे को उठाती है।

ALEESHA

Konkani/118 minutes/35mm

Producer: Rajendra Talak Creations **Director:** Rajendra Talak **Screenplay:** Damodar Mauozo; **Camera:** Debu Deodhar **Editing:** Vijaydhar Pathare **Music:** Ashok Patki **Cast:** Tapan Acharya, Priyanka Bidiye, Vijay Thaly, Prashanti Talpankar

Aleesha is an artist photographer who is also an ardent environmentalist. Married into the family of an industrialist, she finds herself in a contradiction of interests.

Her struggle to set right the blatant violation and flouting of rules brings her in direct confrontation with her family's business interests. Moreover, her hard stance of exposing the facts draws flak from the interested parties.

The film depicts her persuasiveness and the manner in which she manages her will and opinion to prevail.

The co-existence of an eco-friendly industry with nature is the need of the hour. **Aleesha** reiterates this point.

अमू

अंग्रेजी / 100 मिनट / 35 एम एम

निर्माता, निर्देशन एवं **पटकथा:** सोनाली बोस **संगीत:** नन्दलाल नायक **कलाकार** : अंकुर खन्ना, कोंकणा सेनशर्मा, यशपाल शर्मा, बृंदा कारत

21 वर्षीय भारतीय अमेरिकी मूल की अमू तीन वर्ष की अवस्था से अमेरिका में पली बढ़ी है। शिक्षा के उपरांत अमू भारत में अपने संबंधियों से मिलने आती है, जहां उसकी भेंट एक कॉलेज विद्यार्थी कबीर से होती है। कबीर (काजू) के भारत की ओर दृष्टिकोण के प्रति ज़रा भी उत्साहित नहीं है। परंतु अमू फिर भी दिल्ली की झोपड़पट्टियों, भीड़भरे बाजारों आदि का भ्रमण करती है। ऐसी ही एक झोपड़पट्टी में उसे एक अजीब सा अहसास होता है– वह स्थान परिचित सा प्रतीत होती है। अमू (काजू) उस स्थान का ठीक से अन्वेषण करने का निश्चय करती है और पाती है कि वह स्वयं अपनी मां की दत्तक पुत्री है।

तभी अमू (काजू) की मां केया रॉय जो अमरीका में मानवाधिकार कार्यकर्ता है अचानक भारत आ जाती है। अमू के इन बस्तियों में घूमने के समाचार से वह परेशान हो जाती है। धीरे–धीरे अमू अपने जीवन से जुड़ी पहेलियों को सुलझापाती है परन्तु सत्य क्या है, उसे क्यों छुपाया गया? जैसे–जैसे अमू और कबीर इन गुथ्यियों को सुलझाने का प्रयास करते हैं उनका सामना 23 वर्ष पहले भारत की राजधानी में घटी दुर्घटना से होता है जिसमें सिक्ख समुदाय के हजारों व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। फिल्म के चरमोत्कर्ष में इन युवाओं का सामना इतिहास की इस घटना से होता है तथा उनका वर्तमान इस घटना से किस प्रकार प्रभावित होता है।

AMU

English/100 minutes/35mm

Producer, Director and **Screenplay:** Shonali Bose: **Music:** Nandlal Nayak **Cast:** Ankur Khanna, Konkana Sensharma, Yashpal Sharma, Brinda Karat

Amu is the journey of Kajori Roy, a 21 year old Indian American woman who has lived in the US since the age of three. After graduating from UCLA Amu (Kaju) goes to India to visit her relatives. She meets Kabir, a college student from an upper class family who is disdainful of Kaju's wide-eyed wonder at discovering the real India. Undeterred Amu (Kaju) visits the slums, crowded markets and roadside cafes of Delhi. In one slum she is struck by an odd feeling of déjà vu. Soon after she starts having nightmares. Kabir gets drawn into the mystery of why this is happening particularly when she discovers that she is an adopted child.

Meanwhile Amu's adoptive mother – Keya Roy, a single parent and civil rights activist in LA, arrives unannounced in Delhi. She is shocked to discover that Kaju has been visiting the slums. Although Amu (Kaju) mistakes her mother's response to a typical Indian over protectiveness – Keya's fears are rooted deeper.

Slowly Amu (Kaju) starts piecing together what happened to her birth parents. Mother and daughter clash as Amu discovers she has been lied to her whole life. What was the truth? Why was it suppressed? As Amu (Kaju) and Kabir undertake this quest they both discover their families involvement with a man made tragedy of immense proportions which took place twenty three years ago in the capital city of India: the death of thousands of people of the Sikh faith. In a searing climax the young people are forced to confront the reality of the past and how it affects their present.

अंजी

तेलुगु/150 मिनट/35 एम एम

निर्माता: श्याम प्रसाद रेड्डी **निर्देशक:** कोडी रामकृष्ण **पटकथा:** एम.एस. आर्ट मूवीज़ **संगीत:** मणि शर्मा **कैमरा:** छोटा के. नायडू **कलाकार:** चिरंजीवी, नम्रता शिरोडकर, नागबाबू

युवा अंजी के आश्रम में अनाथ बच्चे रहते हैं। यूनानी औषधि का चिकित्सक शिवैया उसका मित्र है। एक अन्वेषक स्वप्ना अपनी पुस्तक पूरी करने के उद्देश्य से भारत आती है और अंजी से मिलती है। अंजी के आश्रम में स्वप्ना को अपने प्रोफेसर की मृत्यु का समाचार मिलता है और वह अपनी शोध डायरी शिवैया को दे देती है। स्वप्ना के अनुसार उसके प्रोफेसर का हत्यारा भाटिया हो सकता है। स्वप्ना की डायरी से शिवैया को पता चलता है कि आत्मलिंगम को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। शिवैया अंजी को आत्मलिंगम प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। अंजी बच्चों को आत्मलिंगम का रहस्य बताता है और बच्चे कुछ गुण्डों को इस नई शक्ति से हरा देते हैं। आत्मलिंगम का पता चल गया है यह जानकर भाटिया अपने आदमियों के साथ भारत आ जाता है। वह एक जंगल तस्कर घोटे के साथ मिलकर आश्रम से एक बच्ची का अपहरण कर लेता है और अंजी को अपनी बातें मानने के लिए बाध्य कर देता है।

मुहूर्त आने पर आत्मलिंगम चमकने लगता है। प्रधान पुजारी भाटिया को मनसा सरोवरम् जाने के लिए कहते हैं जहां सरोवरम् में से एक अद्भुत मंदिर निकल आया है। भाटिया अंजी को मंदिर में घुसकर आकाश गंगा लाने के लिए बाध्य करता है। जैसे ही अंजी आकाश गंगा को लाता है भाटिया मंदिर में घुसकर अंजी के हाथ से शंखु ले लेता है और उसका जल पीकर अत्यन्त शक्तिशाली हो जाता है। काफी संघर्ष के बाद अंजी अपहृत बच्ची को बचा लेता है और आश्रम लौट जाता है।

ANJI

Telugu/150 minutes/35mm

Producer: Shyam Pasad Reddy **Director:** Kodi Ramakrishna **Screenplay:** M/s. M.S. Art Movies **Camera:** Chota K. Naidu Editing: K.V. Krishna Reddy **Music:** Mani Sharma Cast: Chirnajeevi, Namrata Shirodkar, Nagababu

A young helpful man Anji gives shelter to orphans. Unani (Greek Medicine) Doctor Sivaiah is his well wisher. Swapna, a Research student pursues her studies abroad. She comes to India with her Research Book. She boards another bus, and meets Anji who takes her to Urvakonda.

Anji comes to Ashram along with Swapna. Having learnt that her Professor has expired, she is sad and gives her Research Diary to Sivaiah. She reveals her apprehension that Bhatiya might have killed the Professor. Sivaiah learns through the Diary that Atmalingam is the procedure of Puja to secure the said Atmalingam. Sivaiah reveals the details to Anji who performs the Puja with utmost devotion and secures Atmalingam. Anji explains the power of Atmalingam to children. With the help of this power, the children beat Ghote and his rowdies. Having learnt that Atmalingam has been located, Bhatia is jubilant with happiness.

Bhatia arrives in India in his airplane along with his henchmen. Meanwhile, Anji secures the list of Siva's commands and rules and gives it to Sivaiah. Bhatia reaches the Ashram and wants Atmalingam but Sivaiah refuses. Bhatia shakes hand with a forest brigand Ghote. Sivaiah secretly reveals the procedure for Puja of Atmalingam and the secrets of Siva's commands to children. Rowdies kidnap a girl from the Ashram and Anji agrees to do Bhatia's bidding.

As the Muhurtam comes close, Atmalingam gains brightness. Having observed the same, the Head Monk tells Bhatia to go to Manasa Sarovaram. A wonderful temple comes out from the sarovaram. Bhatia asks Anji to enter into it and bring Akasa Ganga on to earth. Anji gains entry and brings Akasa Ganga. Meanwhile, Bhatia also enters the temple. He takes Sankhu from the hands of Anji and after drinking water from it, becomes extra-ordinarily powerful. Along with Swapna and children, Anji starts from there towards Ashram. After a lot of struggle, Anji saves the kidnapped girl and returns to Ashram.

ऑटोग्राफ

तमिल / 168 मिनट / 35 एम एम

निर्माता, निर्देशन एवं **पटकथा:** चेरन **संगीत:** भारद्वाज एवं सबेश मुरली **कैमरा:** रवि वर्मन, विजय मिल्टन, द्वारकानाथ एवं संजय महेन्द्र **संपादन:** एस. सतीश **कलाकार** : चेरन, गोपिका, राजेश

फिल्म का प्रारंभ सेंतिल कुमार के अपने गांव लौटने से होता है। वह रास्ते में अपने विवाह के निमंत्रण बांटता है। अतीत की यादें, उसे सताती हैं। नवयौवन का पहला प्रेम, शिक्षक का उसके प्रति अपनापन आदि यादें अब एक सुंदर स्वप्न बन कर रह गई है। गांव के कच्चे रास्ते उसे उसकी अतीत का हर पहलू याद दिलाते हैं।

फिल्म सेंतिल की यादों से प्रारंभ हो कर उसकी माँ की पसंद की लड़की से उसकी शादी पर समाप्त होती है। परंतु उसकी प्रेमिकाओं की प्रकाशमय झलक सदैव उसके साथ एक नर्म स्वप्न की भांति विद्यमान रहती है।

AUTOGRAPH

Tamil/168 minutes/35mm

Producer, Director and **Screenplay:** Cheran **Camera:** Ravi Varman, Vijay Milton, Dwarkanath and Sanjay Mahendra **Editing:** S. Sathish **Music:** Bharadwaj and Sabesh-Murali **Cast:** Cheran, Gopika, Rajesh

The movie begins with the hero Senthil Kumar, returning to his village distributing his wedding invitations. What happens to the girl who held his hand as a teenager? What happens to the teacher who was extra nice to him? What happens to the girl who wants him just as a friend? As he walks down the familiar lanes, meeting people, he meets his life itself as a beautiful memory, a walk through the past.

The movie records Senthil's recollection of the days gone by and ends with his marriage to a girl of his mother's choice. His ex-flames bless him from the crowning glory - his greatest moment ever.

बेरू

कन्नड़ / 125मिनट / 35 एम एम

निर्माता: मित्रचित्र **निर्देशन:** पी. शेषाद्री **पटकथा:** जे.एम. प्रह्लाद **संगीत:** प्रवीण किरण **कैमरा:** एस. रामचन्द्र **संपादन:** बी.एस. कम्पराज **कलाकार** एच. जी. दत्तात्रेय, एम.पी. वेंकटराव, बेबी सौम्या

एक छोटे तालुके के सरकारी दफ्तर में अफसर की नियुक्ति न होने से एक कनिष्ठ अधिकारी ने कार्यभार संभाला हुआ है। लोककलाकार गौरवैया की झोपड़ी की छत गिरने वाली है क्योंकि एक पेड़ की जड़े उसकी दीवारों को तोड़ने लगी हैं। वह उस झोपड़ी में एक छोटी बच्ची के साथ रहता है। बार–बार वह इस अधिकारी से पेड़ को कटवाने का निवेदन कर चुका है।

उसी समय इस दफ्तर में एक वरिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति होती है। निष्कपट तथा उत्साही इस नये अधिकारी को एक मंत्री के विभागीय दौरे पर आने का समाचार प्राप्त होता है। उनकी आवास व्यवस्था के लिए विभाग के इंस्पेक्शन बंगले को चुना जाता है, पर यह बंगला कहां है इसका भास किसी को नहीं है। विभाग के रिकॉर्ड में बंगले का पता जरूर दर्ज होता है परंतु बंगला वहां पर नहीं है। नया अफसर लोगों की संवेदनाओं को समझते हुए और नादानी के कारण अपने वरिष्ठ अधिकारियों को बंगले के न होने की सूचना देने के स्थान पर इस घटना की लीपापोती में लग जाता है। अब बंगले को तुड़वाकर उसकी जगह नये बंगले का निर्माण होना है।

परन्तु मंत्री का दौरा रद्द हो जाता है और नया अधिकारी अपनी ही बनाई हुई समस्या में उलझ जाता है। उसका श्वसुर उसको किसी तरह इस समस्या से बाहर निकालता है। मामले की दोबारा लीपापोती में यह फैसला होता है कि लोककलाकार गौरवैया को बंगले के न होने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए क्योंकि पुरानी इंस्पेक्शन में गौरवैया को उस बंगले का नकली केयरटेकर बनाकर प्रस्तुत किया गया था।

दोनों अधिकारी गौरवैया को मनाने के लिए उसके घर पहुंचते हैं, परन्तु तबतक झोपड़ी टूट चुकी है और उसके नीचे दबकर गौरवैया मर चुका है।

BERU (The Root)

Kannada/125 minutes/35mm

Producer: Mitrachitra **Director:** P. Sheshadri **Screenplay:** J.M. Prahalad **Camera:** S. Ramachanda **Editing:** B.S. Kemparaj Music: Praveen – Kiran **Cast:** H.G. Dattatreya, M.P. Venkatrao, Baby Soumya

A taluk level office has been working without a regular head for sometime. A junior level official is in charge of the office. It has stuck to mandatory minimal routine work.

Goravayya is a poor old folk artiste. Though living on a small income, he has been magnanimous in his own small way to provide shelter to an orphan girl. He is stuck with a problem. The roots of a tree are affecting the stability of his small shelter. He has been repeatedly requesting the office for permission to fell the tree to save his shelter.

At last, a regular officer arrives on posting. Being sincere and enthusiastic, this new officer starts tuning the office for proactive working. Even before he settles down, a minister's visit is announced. Arrangements have to be made in the inspection Bungalow (IB). Much to his shock and surprise, nobody in the office knows about IB. In the process of locating this IB, a scandal unfolds. The IB exists only on records. It is not there physically. So, many irregularities and misappropriations come to light. The new officer is not able to report the whole matter to higher-ups because of his own indiscretion and emotional considerations. He tries to cover-up the whole thing by seeking approval for demolition of the dilapilated (non-existent) IB for rebuilding a new one there.

Meanwhile the minister's visit is cancelled. But by then the officer is deeply involved in this cover-up story created by himself. He is about to face the consequences, but his influential father-in-law comes to his rescue. He is now asked to provide some cooked-up reasons for the IB's 'present' condition so that the matter can be hushed up and he is saved. Goravayya is proposed to be implicated as the servant looking after IB responsible for its present condition. Both officials go to see Goravayya only to find that his shelter has collapsed and he has died.

छोटा सिपाही

हिंदी/83 मिनट/35 एम एम

निर्माता: भारतीय बालचित्र समिति **निर्देशन** एवं **पटकथा:** जयश्री कणल **संगीत:** केदार अवाति और विवेक फिलिप कैमरा एवं **संपादन:** जयश्री कणल **कलाकार:** मोहन आगाशे, ओम भुतकर

जोजे एक मछुवारे का बेटा है और गोवा के समुद्र तट पर छोटे से गांव में रहता है। अक्सर वह अपनी माँ के साथ रहकर मछली बेचने मडगांव तक जाता है। कभी–कभी वह पुर्तगाली अफसर के घर मछली पहुंचाने भी जाता है। जोजे का समुद्र किनारे गुफाओं में छुपने और खेलने का एक गुप्त स्थान है। एक दिन अचानक जोजे की भेंट इस गुप्त स्थान में मंगेश नामक स्वतंत्रता सेनानी से होती है। दोनों को छुपने का यह स्थान पसंद है। उन्हीं दिनों जोजे समुद्र किनारे खेल रहे बच्चों में से एक गोपू को समुद्र में डूबने से बचाता है। गोपू की अध्यापिका श्यामा दीदी जोजे को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है।

गोपू जोजे को गणेश उत्सव पर आमंत्रित करता है। गोपू के घर मंगेश उसे फिर मिलता है। जोजे को पता चलता है कि मंगेश ही प्रसिद्ध "क्लेवर फौक्स" है जिसकी पुलिस को तलाश है। मंगेश के घर से निकलने में कठिनाई है क्योंकि पुलिस का चारों ओर पहरा है। जोजे एक योजना बनाता है जिसके तहत् लोककलाकार मंगेश के घर के चारों ओर नृत्य करते हैं और मंगेश धीरे से निकल जाता है। जोजे अब गोवा के स्वतंत्रता संग्राम का भाग बन गया है।

एक दिन जोजे सुनता है कि भारतीय थल सेना गोवा की ओर बढ़ रही है, परंतु पुर्तगालियों ने बोरी के पुल पर डायनामाइट लगाया है। जोजे भारतीय सिपाहियों को बचाने के लिए अत्यंत चौड़ी नदी को चुपचाप तैरकर पार करता है और भारतीय सेना को पुल पर बम होने का समाचार देकर क्षति होने से बचा लेता है।

CHHOTA SIPAAHI *(Little Soldier)*

Hindi/83 minutes/35mm

Producer: Children's Film Society, India **Direction** and **Screenplay:** Jayashree Kanal **Camera** and **Editing:** A.S. Kanal: **Music:** Kedar Awati and Vivek Philip **Cast:** Mohan Agashe, Om Bhutkar

Joze, son of a fisherman, lives in a small village on the seashore in Goa.

Often, he accompanies his mother to Madgaon when she goes there to sell the day's catch. Once in a while they go to the Portuguese officer's house to deliver fish. On his way Joze always lingers longingly around the school gate. One day Joze finds a bearded man (Mangesh, a freedom fighter) in his hideout. Joze takes an instant liking for the man.... both part, swearing secrecy about their hiding place and their chance meeting.

A group of school children comes to the beach to play. Joze saves a boy 'Gopu' from drowning in the sea. The boy's teacher – Shyama Didi – encourages Joze to join school. Through his interaction with her, Joze realizes that Goa is ruled by outsiders.

Gopu invites Joze for Ganesh festival celebrations Joze finds Mangesh. He comes to know that Mangesh is a freedom fighter known as 'Clever Fox'. Since the house is being watched by the police. Joze makes a plan, he brings his group to dance. After the musical evening, Mangesh slips out of the house with the dance party.

Joze gets drawn not only towards Mangesh and Didi but also the entire freedom movement now.

He overhears at the Portuguese officer's house that the Indian army is approaching and it is a matter of a day or two before they take over Goa. There is a plan to plant dynamites under the bridge at Bori and blow it while the Indian soldiers cross the bridge......

Joze swims across a river, alerts the Indian Army, and saves casualties.

छुटकन की महाभारत

हिंदी/87 मिनट/35 एम एम

निर्माताः भारतीय बालचित्र समिति **निर्देशन** एवं **पटकथाः** संकल्प मेश्राम **संगीतः** आशीष विलेजार एवं शैलेश दानी **कैमराः** समीरन दत्ता एवं विवेक शाह **संपादनः** जबीन मर्चेन्ट **कलाकारः** अदिति देशपांडे, वरुण झा, सागर शेट्टी और अवनीश सत्यानाथन

10 वर्षीय गांव के लड़के छुटकन के सपने अचानक सच होने लगते हैं। उसके गांव में खलबली फैल जाती है जब यह समाचार मिलता है कि उसके गांव में होने वाला महाभारत का नाटक भी बदल गया है। कौरव और पांडवों का झगड़ा समाप्त हो गया है और युद्ध प्रारंभ होने से पहले ही वे मित्र बन गये हैं। नौटंकी के कलाकार जो गांव में महाभारत का नाटक करने के उद्देश्य से आये हैं वे अपने संवाद भूलकर कुछ नये संवाद बोलने लगे हैं।

छुटकन का ममेरा भाई जो उस पर बहुत रौब गांठता था, छुटकन के सपने के कारण गधा बन चुका है तथा कुछ अन्य गांव वाले बत्तख बन चुके हैं। एक ओझा को छुटकन का इलाज करने के लिए बुलाया जाता है, परंतु छुटकन सपना देखता है कि पांडव उसे आकर बचा लेते हैं। होता भी यही है पांडव आकर छुटकन को बचा लेते हैं और ओझा का इलाज हो जाता है।

पांडव गांव वालों को आश्वासन देते हैं कि अब नौटंकी में केवल छुटकन की महाभारत ही प्रस्तुत की जाएगी।

CHHUTKAN KI MAHABHARAT

Hindi/87 minutes/35mm

Producer: Children's Film Society, India **Direction** and **Screenplay:** Sankalp Meshram **Camera:** Samiran Dutta and Vivek Shah **Editing:** Jabeen Merchant **Music:** Ashish Vilejar and Shailesh Dani **Cast:** Aditi Deshpande, Varun Jha, Sagar Shetty, Avneesh Sathianathan

This is a phantasmagoric story of Chhutkan, a ten year old village boy, whose dreams suddenly start coming true. All hell breaks loose when he dreams that the story of the epic Mahabharat has changed and that the warring brothers Kauravas and Pandavas have buried their differences and become friends even before the war has begun. The Nautanki (folk theatre) actors who are performing the Mahabharat in the village, seem to be under a magical spell, being unable to recite the original lines of the war epic.

Next, Chhutkan turns his bully cousin into a donkey in his dreams and a few aggressive villagers into a gaggle of squawking geese. Finally an exorcist is called to cure Chhutkan but Chhutkan manages to cure him instead by dreaming that the real Pandavas will rescue him. They do. The real Pandavas then declare that the only Mahabharat that will be performed from now on will be Chuttkan's Mahabharat.

डांसर

तमिल / 99 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: योगेश के.आर. **निर्देशन एवं पटकथा:** ए. कोतंड रमैय्या **संगीत:** प्रवीण मणि **कैमरा:** जे. रॉबर्ट आशीर्वतम **संपादन:** आर.टी. अन्नादुरई कलाकार: जे.फिलिप कुट्टी, दिव्या, ए. रॉबर्ट, मीरा कृष्णन

एक पैर से अपंग कुट्टी अपने दुर्भाग्य पर दुखी होने की अपेक्षा कुछ अनोखा कर दिखाने का इच्छुक है। उसके पड़ौस में रहने वाली दिव्या कुट्टी की संगीत और नृत्य में रुचि से परिचित है। दिव्या के पिता नहीं हैं और वह अपने दादा और माँ के साथ रहती है। स्वयं प्रसिद्ध नर्तक बनने का सपना देखने वाली दिव्या का उसका नृत्य शिक्षक अरुण अपमान कर देता है।

अपमानित दिव्या कुट्टी को नृत्य के लिए प्रोत्साहन देती है। कुट्टी को अरुण द्वारा आयोजित एक समारोह में नृत्य प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता है, परंतु आयोजन से पहले अरुण कुट्टी और दिव्या का घोर अपमान करता है। परंतु समारोह से कुछ समय पहले दर्शकों की कुट्टी में रुचि जाग जाती है और उसकी नृत्य कुशलता देखने के लिए वे आतुर हो जाते हैं। कुट्टी का नृत्य सफल होता है और वह शीघ्र प्रसिद्धि प्राप्त करने लगता है। कुट्टी अपंग व्यक्तियों के लिए एक संस्था **अभय** का निर्माण करता है। संस्था के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में अरुण और उसके साथी बाधा पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं। वे दिव्या का अपहरण कर लेते हैं और कुट्टी की पिटाई करते हैं। मजबूत इच्छाशक्ति वाला कुट्टी इन सब समस्याओं से पार पा कर अपने लक्ष्य में सफल होता है।

DANCER

Tamil/99 minutes/35mm

Producer: Yogesh KR **Direction** and **Screenplay:** A. Kothandaramaiah **Camera:** J. Robert Asirvatham **Editing:** R.T. Annathurai Music: Pravin Mani **Cast:** J. Philip (Kutty), Divya, A. Robert, Meera Krishnan

Kutty, the hero in the film is a handicapped person with one leg. This handicap is not from birth but happens early in Kutty's life, at the hands of his stepbrother. Instead of lamenting over the misfortune, Kutty goes about doing odd jobs to earn a living but silently yearns to do something remarkable and astounding. **Divya** (the heroine) is also a resident in the same building as that of Kutty's and happens to observe his interest in dance and music. Fatherless, she lives with her grandfather and mother, who want her to become a rich and famous celebrity. As she is interested in becoming a renowned dancer herself she starts attending dance classes with popular dance master, **Arun**. The dance master in turn misbehaves with her. As she neglects his advances and unruly behaviour, she is ill treated by Arun on different occasions.

Divya, deeply insulted decides to promote and encourage Kutty as a dancer in order to avenge the insult by all possible means. An opportunity knocks on Kutty's door in the form of a stage performance, but, to their dismay, Arun happens to be the host of that particular event. They (Kutty and Divya) are again insulted by him but fortunately, as fate has it, the ten minute performance of Kutty becomes the highlight of the event and wins thunderous applause and appreciation. From then on Kutty's popularity starts soaring and subsequently leads to Arun's downfall. Meanwhile Kutty has high ambitions of creating an institution for the well being of the handicapped.

Abhaya, an institution with similar ambitions, approaches him to perform at the first inaugural function of the fundraiser. Learning of this, Arun along with his henchmen, decides to foil and disrupt the function. In this attempt they kidnap the heroine and Kutty is beaten up during his efforts to save her. However, with his determination and will power, he overcomes these obstacles. Arun finally acknowledges his folly.

देवरई

मराठी / 120 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: वाई.एन. ओक **निर्देशन:** सुमित्रा भावे एवं सुनील सुक्थांकर **पटकथा:** सुमित्रा भावे **संगीत:** श्रीरंग उमराणी **कैमरा:** देबू देवधर **संपादन:** सुमित्रा भावे एवं वीरेन्द्र वाल्संगकर **कलाकार:** अतुल कुलकर्णी, सोनाली कुलकर्णी, तुषार दलवी, देविका दफ्तरदार

युवा शेष देसाई माँ की मृत्यु के बाद समुद्रतट पर अपने गांव में अकेला आम के बागों की देखभाल करता है। उसकी बहन सीना गोरे उसे अपने साथ पुणे ले आती है। अपने नौकरों से उसे सूचना मिलती है कि शेष का व्यवहार कुछ अजीब सा है। शेष के हिंसक व्यवहार को देखते हुए सीना और उसका वैज्ञानिक पति उसे मनोचिकित्सा केंद्र भेज देते हैं। शेष एक मनोरोगी है और अवहेलना के कारण उसकी दशा बिगड़ चुकी है। शेष को देवराई नामक वनों से अत्यन्त लगाव है। उसकी अवस्था बिगड़ने के साथ उसे वन एक देवी के रूप में नजर आने लगते हैं।

चिकित्सा के बाद सीना के लिए शेष को घर में रख पाना एक अत्यन्त दुष्कर कार्य है। शेष के कारण सीना का जीवन भी उसके पति, पुत्र तथा भाई के बीच बट गया है। धीरे–धीरे चिकित्सा के आगे बढ़ने के साथ सीना और कल्याणी शेष का उसके मतिभ्रम के साथ सामंजस्य बिठाने में सफल हो पाते हैं और शेष कल्याणी की मदद से सामाजिक और सार्थक जीवन बिता सकता है।

DEVRAI

Marathi/120 minutes/35mm

Producer: Y.N. Oak **Director:** Sumitra Bhave and Sunil Sukhtankar **Screenplay:** Sumitra Bhave **Camera:** Debu Deodhar **Editing:** Sumitra Bhave and Virendra Valsangkar **Music:** Shrirang Umrani **Cast:** Atul Kulkarni, Sonali Kulkarni, Tushar Dalvi, Devika Daftardar

Shesh Desai, a young man living alone in a coastal village after his mother's death, looking after family business of mango plantations, is brought to Pune by his married sister Seena Gore. Servants who give service to Shesh tell Seena about Shesh's strange behaviour.

Seena and her scientist husband Sudesh experience a sudden violent outburst of Shesh and admit him in a hospital. Psychiatric help is sought.

Through the case history told to the doctors by Seena and through Shesh's sessions with the panel of psychiatrists and psychologists unfolds the story of a neglected victim of Schizophrenia. The meanings and linkages of Shesh's strange behaviour are analysed by the doctor.

Shesh, a victim of Schizophrenia has an obsession for Devrai Sacred Groves (the forests protected by the community in the name of God). As his problem aggravates his interest in Devrai as a student of science is turned into a series of hallucinations. He starts personifying Devrai in the form of a Goddess like character.

After treatment, keeping Shesh at home is another big problem for Seena who is torn between her concern for his brother and her duties towards her husband and ten year old son. Her support is Kalyani, a distant cousin.

Finally, after medication and participation in the day care centre Shesh slowly learn to become friendly with his hallucinations and Seena and Kalyani partly succeed in making him realize the difference between the reality perceived by him and by the others.

Now, with the help of Kalyani's dedicated support, Shesh will live a socially functional and meaningful life.

देस होया परदेस

पंजाबी / 163 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: मंजीत मान **निर्देशक:** मनोज पुंज **पटकथा:** सूरज सनीम **संगीत:** जयदेव कुमार **कैमरा:** आर.ए. कृष्णा **संपादन:** ऑंकार भाकरी **कलाकार:** गुरुदास मान, जूही चावला, सुधीर पांडे, अनूप सोनी, दिव्या दत्ता

गुरशान एक शिक्षित पंजाबी किसान है जो अपने गांव में अपने माता–पिता और छोटी बहन के साथ रहता है। गुरशान का मित्र दर्शन अमेरीका से अपने पुराने कॉलेज के एक समारोह में सम्मिलित होने आता है। समारोह में गुरशान की भेंट जस्सी से होती है जो सुंदर, सुशिक्षित है तथा कॉलेज में संगीत की शिक्षिका है।

एक रात गुरशान का पुराना सहपाठी सुखबीर, जो अब आतंकवादी है, गुरशान से मिलने उसके घर आता है। पुलिस को लगता है कि गुरशान के आतंकवादियों से संबंध हैं, जिसके कारण उसे पुलिस की कैद और प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है।

गुरशान को पुलिस और आतंकवादियों के बीच फंसा जानकर दर्शन उसे भारत छोड़कर अमेरिका में बसाने की कोशिश करता है। गुरशान को राजनैतिक संरक्षण तो प्राप्त होता है, परंतु साथ ही मानवाधिकारों का हनन भी होता है क्योंकि वह अपने माता–पिता को अपने साथ अमेरिका नही ला सकता। इस राजनैतिक संरक्षण के कारण गुरशान के पूरे परिवार को उसके परिणामों का सामना करना पड़ता है।

DES HOYA PARDES

Punjabi/163 minutes/35mm

Producer: Manjeet Maan **Director:** Manoj Punj **Screenplay:** Suraj Sanim **Camera:** R.A. Krishna **Editing:** Omkar Bhakri **Music:** Jaidev Kumar **Cast:** Gurdas Maan, Juhi Chawla, Sudhir Pandey, Anoop Soni, Divya Dutta

Gursharan, an educated man whose parents and sister live in punjab, tills his ancestral land. He is visited by his childhood friend Darshan from America who has come to attend the old student's meet in their college. There they happen to meet Jassi, a beautiful girl who is active in theatre and teaches music in a college.

One night, Sukhbir who happened to be Gursharan's class fellow but now member of a terrorist group, visits Gursharan and this incident drives the police to believe that Gursharan is conniving with the terrorists. This leads to his arrest and torture.

Realising that Gursharan is caught in the crossfire between terrorism and police, Darshan forces him to leave the country and come to America where he fights to get him political asylum. This political asylum given to Gursharan is to protect his human rights but even this protection violates his human rights intentionally or unintentionally and now all the members of the family suffer helplessly courtesy the repercussions of this asylum.

दीनबन्धु

असमिया / 137 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: कृष्णा रॉय **निर्देशन** एवं **पटकथा:** मुनीन बरुआ **संगीत:** ज़ुबीन गर्ग **कैमरा:** सुमन दोवेरा **संपादन:** ए. श्रीकर प्रसाद **कलाकार:** तपन दास, ज़ुबीन गर्ग, निशिता गोस्वामी

दीनबन्धु दास एक सरकारी कार्यालय में साधारण और ईमानदार क्लर्क है। अपनी माँ के ज़िद करने पर दीनबन्धु सावित्री से विवाह के लिए राज़ी हो जाता है, परंतु उसके विवाह से पहले ही उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। दीनबन्धु अपने विवाह पर अपने सामर्थ्य से अधिक खर्च करता है। उसके लिए यह कर्ज़ चुका पाना अत्यन्त दुष्कर कार्य है। उसके घर में दो पुत्रियों रानी और बानी के जन्म के साथ उसकी पत्नी सावित्री बीमार पड़ जाती है। लाख कोशिशों के बाद भी दीनबन्धु अपनी पत्नी के इलाज के लिए धन एकत्रित नहीं कर पाता है और अपनी पत्नी को खो बैठता है।

पुत्रियां बड़ी होती हैं, परंतु दीबन्धु की आर्थिक हालत में कोई सुधार नहीं होता। कॉलेज में पढ़ने वाली रानी पिता की मदद के लिए ट्यूशन पढ़ाना प्रारम्भ कर देती है तथा बानी संगीत की शिक्षा प्राप्त करती है। एक सम्भ्रांत घर का पुत्र रमेश रानी से प्रेम करता है, परंतु रमेश के लालची पिता दीनबन्धु से दहेज की मांग करते हैं और अहंकारी दीनबन्धु दोबारा उधार लेकर रानी और रमेश का विवाह सम्पन्न कराता है। दीनबन्धु का अहंकार और हठधर्म उसकी दूसरी बेटी बानी और बिपुल के विवाह के आड़े आ जाते हैं क्योंकि अब उसके पास साधारण रूप से विवाह खर्च के लिए भी धन नहीं है।

अपने जीवनवृत्त लेखन के माध्यम से दीनबन्धु बानी को बिपुल के साथ भाग जाने का संकेत देता है। पिता द्वारा लिखित वृत्त को पढ़कर बानी बिपुल के साथ भाग जाती है और दीनबन्धु अकेला रह जाता है।

DINABANDHOO

Assamese/137 minutes/35mm

Producer: Krishna Roy **Direction** and **Screenplay:** Munin Barua **Camera:** Suman Dowerah **Editing:** A. Sreekar Prasad **Music:** Zubeen Garg **Cast:** Tapan Das, Zubeen Garg, Nishita Goswami

Dinabandhoo Das is a simple, honest clerk at a government office in town

He yields to his mother's insistence to settle down in life by marrying Savitri, a self-effacing, understanding woman. Hardly a week after his mother dies. Dinabandhoo goes overdrive, spends lot of money beyond his actual capacity only to show off during his marriage.

Paying off his debts incurred during his wedding mires him deeper in debt and he could never hope hope to improve his lot. Soon he is blessed withn two kids, both girls – Rani and Bani. His wife Savitri falls ill. Dinabandhoo starts taking tuitions to earn some extra bucks. To treat his wife. But Savitri finally dies. In the meantime, in a helpful, understanding and caring Dharmakanta, Dinabandhoo finds a true friend.

Both the girls grow up under the able care and guidance of their father. Dinabandhoo's financial constraints continue unabated. His older daughter Rani, a college-going girl also takes tuition to help her father run the family smoothly. His younger daughter Bani has a soft corner for Bipul, a young musician who teaches her.

Ramesh is a boy belonging a well-to-do family, falls in love with Rani.

Ramesh's father Arabinda is a greedy man and demands dowry from Dinbandhoo. Dinbandhoo again comes up with an egoistic approach towards the matter, borrows money from all his sources and marries of his daughter Rani to Ramesh to the fullest satisfaction of Ramesh's father giving the required dowry goods.

Dinbandhoo's obstinacy and arrogance turned out to be a farce in the face of his inability to marry off his second daughter Bani to Bipul even with the minimum basic requirements.

He writes out his candid life-story to impress upon Bani the fact that living happily was more important than pretending to be respectful. He kind of instigates Bani through his story to elope with her beloved so that he can have the satisfaction of pretending that much as he wanted, Bani did not allow him to marry her off the way he had actually wanted. Bani reads her father's story, makes her mind and elope with Bipul. A lonely Dinbandhoo lives on.

ग्रहणम्

तेलुगु/93 मिनट/35 एम एम

निर्माता: कनकधारा क्रिएशन्स **निर्देशन एवं पटकथा:** मोहन कृष्ण इन्द्रगंति **संगीत:** के. विजय **कैमरा:** पी.जी. वृन्दा **संपादन:** लोकेश **कलाकार:** तन्नीकेला भरणी, जयललिता गोपाराजू रमण, ज्योति

लगभग 40 वर्षीय रघु एक डाक्टर है। उसके अस्पताल में एक रोगी एक बूढ़ी औरत को देखते ही पागल सा हो जाता है। वह बूढ़ी औरत अपने आपको उसकी माँ बताती है, जबकि रोगी इस रिश्ते को झूठा बताता है। रघु जब बूढ़ी औरत को सांत्वना देने का प्रयास करता है, तो उसे उस बूढ़ी औरत का चेहरा परिचित सा प्रतीत होता है। जैसे ही रघु उसका नाम पता पूछता है बूढ़ी औरत अचानक चली जाती है। रघु अपने मित्र श्रीनिवास को अपने गांव में घटी एक घटना के बारे में बताता है।

शारदम्बा नारायण स्वामी नामक ज़मींदार की सुन्दर पत्नी थी। कनकैया नामक एक बच्चा उनके घर में अक्सर आता-जाता रहता था। शारदम्बा कभी-कभी बच्चे को मातृप्रेम के साथ भोजन करा देती थी। एक बार कनकैया के बीमार पड़ जाने पर जब दवाइयां काम न आई तो उसके पिता ने गांव के ओझा गोपैया से परामर्श किया। गोपैया ने उस बीमारी को 'दोषगुनम' बताया। उसके अनुसार जब कोई मध्य आयु स्त्री युवा बालकों के साथ या किसी युवा बालक के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है तो उसे 'दोशगुनम' कहते हैं। गोपैया के अनुसार उस औरत की जंघा से निकला खून ही कनकैया का इलाज था।

उसी रात स्वप्न में कनकैया के मुंह से शारदम्बा का नाम निकलने से उसके पिता को लगा कि शारदम्बा ही वह स्त्री है। उसने सारा वृतांत शारदम्बा के पति स्वामी को सुनाया। क्रोधवश स्वामी ने जब शारदम्बा से पूछताछ की तो क्रोध से भरी शारदम्बा ने भी पलटकर जवाब दिया। फिर भी संदेह से भरे स्वामी ने शारदम्बा को मारकर बेहोश कर दिया और उसकी जंघा का रक्त निकाल लिया। इस रक्त को जब कनकैया के आंखों में लगाया गया तो वह ठीक हो गया। शारदम्बा को चरित्रहीन बताकर घर से निकाल दिया गया।

डाक्टर रघु के अनुसार वह बूढ़ी औरत शारदम्बा थी और वह स्वयं कनकैया है। सत्य यह है कि उसके और शारदम्बा के बीच ऐसा कुछ नहीं था, परंतु फिर भी शारदम्बा को अंधविश्वास का शिकार बनना पड़ा। पश्चातापी रघु शारदम्बा से क्षमा-याचना की कोशिश की प्रतीक्षा करता है।

GRAHANAM *(The Eclipse)*

Telugu/93 minutes/35mm

Producer: Kanakdhara Creations **Direction and Screenplay:** Mohan Krishna Indraganti **Camera:** P.G. Vinda **Editing:** Lokesh **Music:** K. Vijay **Cast:** Tanikella Bharani, Jayalalitha Goparaju Ramana, Jyothi

Raghu is a doctor in his early forties, well known and mild-mannered bachelor. One day while on his rounds at the hospital, he faces an unusual situation, which arouses his curiosity. One of the patients turns hysterical at the very sight of an old woman who claims to be his mother. The patient denies relationship between the old woman and himself. Later on in the day, Raghu consoles the old woman about her son. Raghu finds her face familiar. When he tries to find her name and address, she abruptly leaves.

A perturbed Raghu makes enquiries about the patient and realizes that both the patient and his mother are from his native village. That evening Raghu and his friend, Srinivas have a chat over coffee. Raghu narrates a story that took place in his village of two people, a rich landlord's wife called Saradamba and a young boy clalled Kanakayya.

Saradamba was the beautiful wife of a landlord, Narayana Swami, respected figure in the village, well-known for her charitable work. Kanakayya was a hard working and intelligent young boy belonging to a poor family. Saradamba would offer the boy free lunch out of motherly love.

Once Kanakayya fell ill and the local doctor's medication failed. His parents consulted Gopayya, a man known for his magical cures. Gopayya declared that the boy was suffering from a dangerous and rare disease called doshagunam, caused by middle-aged woman seducing a young boy into having sex with her. Gopayya declared that the only cure was a concoction prepared with the blood extracted from the thigh of the woman who seduced Kanakayya.

That night Kanakayya uttered Saradamba's name repeatedly in his sleep, prompting his parents to conclude that it was Saradamba who had seduced him. As Kanakayya's health deteriorated, his father approached Saradamba's husband, Swami and narrated the whole story. Furious Swami interrogated his wife. An enraged Saradamba derided her husband for accusing her of disgusting crime. Suspecting Swami demanded Sardamba's blood, beat her up and took blood after she fell unconscious. As concoction made with Sarada's blood was applied in his eyes, Kankayya recovered.

Saradamba was branded a whore and driven out of the house.

Raghu told Srinivas that the old woman at the hospital was Saradamba and that he himself was Kanakayya! The truth was that there was nothing between him and Saradamba. She was the victim of a superstitious belief and a tragic coincidence.

Repentent, Raghu begins his wait for Saradamba so as to apologise.

हसीना

कन्नड/135 मिनट/35 एम एम

निर्माता: चिगुरू चित्र **निर्देशन** एवं **पटकथा:** गिरीश कासरवल्ली **संगीत:** आईजक थॉमस कोट्टुकपल्ली **कैमरा:** एस. रामचन्द्र **संपादन:** एम.एन. स्वामी **कलाकार:** चन्द्रहास उल्लाल, तारा पुरुषोत्तम तालवत, चित्रा शिनॉय

हसीना अपने तीन बच्चों के साथ शहर के बाहर अपने ऑटोरिक्शा चालक पति याकूब के साथ रहती है। शीघ्र ही डाक्टर को दिखाने पर पता चलता है कि गर्भवती हसीना का यह बच्चा भी लड़की है। याकूब हसीना को छोड़कर चला जाता है। इसी बीच हसीना की सबसे बड़ी नेत्रहीन बच्ची मुन्नी के साथ एक दुर्घटना घटती है। मुन्नी को देखने पर डाक्टर बताता है कि मुन्नी की आँखें एक साधारण ऑपरेशन के बाद ठीक हो सकती हैं। ऑपरेशन के लिए पैसा जुटाने के उद्देश्य से हसीना घरों में काम करना शुरू कर देती है। ऐसी ही एक स्त्री जुलेखा बेगम जिनके घर हसीना काम करती है, इस्लाम और शरीयत की ज्ञाता है। उनकी सलाह पर हसीना जमात से न्याय मांगने का निश्चय करती है। जमात के अध्यक्ष मुतवल्ली को ज्ञापन देने के साथ ही हसीना का न्याय के लिये संघर्ष प्रारम्भ होता है। मुन्नी का स्वास्थ्य बिगड़ता जाता है और जुलेखा बेगम भी एक बिन्दु के बाद सहायता करने से इंकार कर देती है। निराश हसीना याकूब की नई पत्नी ज़रीना से मदद मांगती है और याकूब हाथापाई में हसीना से उसका बचा हुआ धन भी यह समझकर छीन लेता है कि वह ज़रीना का है।

निराश हसीना अब मस्जिद में ही रहकर न्याय मांगने का निश्चय करती है। मुतवल्ली को जमात की सभा का आयोजन करना पड़ता है। जमात याकूब को बुलावा भेजती है जो शराब के नशे में चूर आ पहुंचता है। याकूब और हसीना के बीच हाथापाई होती है जिसमें हसीना की गोद में बैठी मुन्नी का चोट लगने से देहांत हो जाता है। मोहल्ले की सारी स्त्रियां दुख की इस घड़ी में हसीना के साथ बाहर आ जाती हैं। अगले दिन मुतवल्ली हसीना को उसके मेहर का धन देने आता है, परंतु वह लेने से इंकार कर देती है। जब मुतवल्ली वापस अपने घर पहुंचता है तो देखता है कि उसकी पत्नी ऑपरेशन के लिए उसकी इच्छा के विरुद्ध अस्पताल जा रही है।

HASINA

Kannada/135 minutes/35mm

Producer: Chiguru Chitra **Direction** and **Screenplay:** Girish Kasaravalli **Camera:** S. Ramachndra **Editing:** M.N. Swamy **Music:** Issac Thomas Kottakapally **Cast:** Chandrahasa Ullal, Tara, Purushotham Talavata, Chitra Shenoy

Hasina lives with her three daughters in the outskirts of a small town. Her husband – Yakoob – an auto driver is with her. She borne only girls. When the doctor at private clinic tells him after examining the pregnant Hasina, that this baby too is female, he deserts her. Hasina makes despearate attempts to bring Yakoob back home, but does not succeed. She decides to live on her own.

Munni – the eldest daughter, who is blind meets with an accident. The doctor who attends on her, tells Hasina, that a suitable operation could bring eye sight back to Munni. She starts doing odd jobs to raise money for operation. She starts working as a house maid in the house of a rich lady – Julekha Begum. Julekha is a well informed person about the tenets of Islam and Shariat. She advises Hasina to seek justice from Jamaath.

Hasina begins her long journey seeking justice for her and her family, submitting petitions to Muthavalli, the President of the Jamaath requesting him to reprimand Yakoob, so that he would come forward to take the responsibility of the family.

The former Muthavalli finds in Hasina's case an opportunity to discredit the present Muthavalli. He starts politicizing the issue. Thus, Hasina's case, instead of getting sorted out, grows into a maize.

Munni's health begins to deteriorate. Even ever helping Julekha Begum refuses help beyond a certain point. Finding no other way out, Hasina decides to ask Zarina, Yakoob's new bride for help. This infuriates Yakoob, and in the ensuing quarrel, he takes away all the savings of Hasina, mistaking it to be the money given by Zarina.

Helpless Hasina decides to stay in the Mosque premises until she gets justice. The Muthavalli finally calls a Jamaath meeting. Jamaath sends for Yakoob, who comes drunk. A quarrel erupts between Yakoob and Hasina and inadvertently it ends in the tragic death of Munni.

All the women of the mohalla (street) come and stand by Hasina in the moment of sorrow. Next day, Muthavalli comes to Hasina with Mehar money, but she refuses to take it. When Muthavalli reaches home, he watches his wife getting ready to go to the hospital to get operated, much against his wishes.

हम तुम

हिंदी / 144 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: आदित्य चोपड़ा **निर्देशन** एवं **पटकथा:** कुणाल कोहली **संगीत:** मदन मोहन **कैमरा:** सुनील पटेल **संपादन:** रितेश सोनी **कलाकार:** सैफअली खान, रानी मुखर्जी, ऋषि कपूर, किरण खेर

करन एक कार्टूनिस्ट है। उसके प्रसिद्ध कार्टूनपात्र हम और तुम उसके स्त्री–पुरुष के अजीब रिश्तों पर उसका दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। लड़कियों का चहेता करन अक्सर नई लड़कियों से मित्रता करता रहता है। रिया एक संवेदनशील, उच्च चरित्र में विश्वास रखने वाली लड़की है। दोनों अलग–अलग सामाजिक परिवेशों में पले–पढ़े अलग–अलग प्रकार के व्यक्तित्व हैं। करन के फैशन फोटोग्राफर पिता ने उसे जीवन को सरलता से बिताने का मंत्र दिया है, तो वहीं रिया की पंजाबी माँ ने उसे नैतिकता तथा अपने आप में विश्वास रखने का सबक दिया है। दोनों में बहुत कम समानतायें हैं परंतु दोनों के जीवन अनेक बिंदुओं पर मिलते रहते हैं। तीन महाद्वीपों तथा लगभग 10 वर्षों में उलझे ये दो जीवन विभिन्न रंगों को पर्दे पर जीते हैं।

HUM TUM

Hindi/144 minutes/35mm

Producer: Aditya Chopra **Direction** and **Screenplay:** Kunal Kohli **Camera:** Sunil Patel **Editing:** Ritesh Soni **Music:** Madan Mohan **Cast:** Saif Ali Khan, Rani Mukherji, Rishi Kapoor, Kiron Kher

Karan is a cartoonist. His characters Hum and Tum are very popular. Hum Tum reflect Karan's perspective on men and women and their relationship. Karan is the quintessential bad boy – he is a complete flirt, and is constantly changing girlfriends. Rhea is sensitive, well bred and with high ethical and moral standards. The two come from very different backgrounds, and have evolved into very different people. Whereas Karan's father – a flamboyant famous fashion photographer, has influnced his son to be nonchalant and cool, Rhea gets her self-assuredness and moral code from her mother – a typical Punjabi with an effervescent spirit.

They have very little in common, except the fact that, time and again, their paths cross. Across three continents, and over the period of nearly a decade, the lives of Karan and Rhea intersect, and their relationship evolves, from hate, to mutual friendship and respect and finally ......

इति श्रीकान्त

बंगाली / 124 मिनट / 35 एमएम

निर्माता: दीपक बजाज **निर्देशक:** रंजन दास **पटकथा:** सांतोश्री सरकार **कैमरा:** शिरषा रॉय **संपादन:** संजीव दत्ता **संगीत:** विक्रम घोष **कलाकार:** आदिल, सोहा अली खान, पीयूष गांगुली

श्रीकांत का जीवन दो स्त्रियों, जिनसे वह जीवन के भिन्न–भिन्न पड़ावों पर मिलता है, के बीच उलझा हुआ है। एक ओर सुन्दर, कामिनी, धनी तथा उसके बचपन की मित्र राजलक्ष्मी है जो अब पटना में दरबारी नर्तकी है तथा दूसरी ओर सुन्दर तथा मृगतृष्णा से परिपूर्ण वैष्णवी कमललता है। श्रीकांत का इन दो सिरों में बंटा जीवन इस फिल्म का कथानक है। जहा एक ओर राजलक्ष्मी का प्रेम उसे पाने की चाह के रूप में है वहीं दूसरी ओर कमललता अनेक कठिनाइयों के बावजूद श्रीकांत को मुक्त करना चाहती है। राजलक्ष्मी खुलेआम उसकी निन्दा करती है। वहीं दूसरी ओर कमललता उसकी प्रशंसा करती है। श्रीकांत राजलक्ष्मी के प्रेम के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता और अपने गांव वापस लौट जाता है। वह प्रताड़ित कमललता से गौहर की कब्र के पास मिलता है। क्या वे एक–दूसरे को समझ पाते हैं? या अलग हो जाते हैं।

ITI SRIKANTA

Bengali/124 minutes/35mm

Producer: Deepak Bajaj **Director:** Anjan Das **Screenplay:** Shantoshree Sarkar **Camera:** Sirsha Roy Editing: Sanjeeb Dutta **Music:** Bikram Ghose **Cast:** Adil, Soha Ali Khan, Reema Sen, Piyush Ganguly

Srikant finds himself constantly torn between the two women he encounters during his journeys without destination. On the one hand, there is the seductive, affluent and dignified Rajlakshmi, his childhood sweetheart who is now a renowned courtesan of Patna. On the other, there is the beautiful, elusive and enigmatic Kamallata, the Vaishnavi who talks to him as if they have known each other forever. The complete polarization of his relationship with these two women defines the focal point of the film. While Rajlakshmi's love for him is expressed through a fierce desire to possess him and hold him back, Kamallata wishes to liberate him from any kind of commitment and bondage, even when she desperately needs his protection and shelter. Rajlakshmi openly accuses him of cowardice. Kamallata praises him for his ability to resist bondage. Srikanto fails to cope with Rajlakshmi's obsessive love and goes back to his village. He meets a devastated Kamallata at Gauhar's grave. Do they finally discover themselves in each other? Or do they go their separate ways?

क्रान्तिकाल

बंगला / 110 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: शम्पा भट्टाचार्जी **निर्देशन एवं पटकथा:** शेखर दास **संगीत:** चिरोदीप दासगुप्ता **कैमरा:** प्रेमेन्दु विकास चाकी **संपादन:** देबकान्त चक्रवर्ती **कलाकार:** सौमित्र चटर्जी, रूपा गांगुली, हाराधन बनर्जी, रितु दत्ता चक्रवर्ती

पुराने रजवाड़े के एक महल में एक पुराने महाराजा, उनका प्रौढ़ पुत्र तथा उसकी तलाकशुदा बहू रहते हैं। एक रात इस महल में उत्तर–पूर्वी भारत का एक भगोड़ा आतंकवादी आश्रय के लिए घुस आता है। उसके साथ ही अनेक अनसुलझे प्रश्न भी पुराने रजवाड़ों के प्रत्यक्ष अभिभूत होते हैं। आतंकवादी की अंत में पुलिस के हाथों मृत्यु होती है, परंतु इसके साथ ही जन्म होता है कुछ बुनियादी सवालों का।

KRANTIKAAL (Critical encounter)

Bengali/110 minutes/35mm

Producer: Sampa Bhattacharjee **Direction** and **Screenplay:** Sekhar Das **Camera:** Premendu Bikash Chaki **Editing:** Debakanta Chakraborty **Music:** Chirodip Dasgupta **Cast:** Soumitra Chattrejee, Roopa Ganguly, Haradhan Banerjee, Ritu Dutta Chakraborty

Inside the palace of a princely state of India, time seems to have stood still. Confined in a quite and once grand home, a one-time Maharaja and his now elderly son exist along with the daughter-in-law, commoner and now divorced.

Into this stagnant atmosphere erupts the challenge of terror, as a 'secessionist' from North-Eastern part of India and a fugitive from the police intrudes into the palace in urgent need of refuge. He carries a frightening array of arms as well as an ideology that justifies violence as a means to a political end.
He also carries with him many unresolved questions which, in his critical encounter with the former royals, are brought into focus.

It is the princess-by-marriage, a woman with an exceptional intellect and immense moral strength, who evokes the essential qualities of Indian tradition that make India's amazing pluralism viable: non-violence, tolerance, sacrifice and generosity.

The lady's convictions are remarkably persuasive, and a breath of self-criticism gets through a chink in the terrorist's armour, but before he can resolve his new doubts, the last word is spoken by the instrumentalities of legal violence...the terrorist gets killed in the final encounter but his death gives birth to several basic questions.

लक्ष्य

हिंदी / 185 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: रितेश सिधवानी **निर्देशन:** फरहान अख्तर **पटकथा:** जावेद अख्तर **संगीत:** शंकर, अहसान, लॉय **कैमरा:** क्रिस्टोफर पॉप **संपादन:** आनन्द सुबाया **नृत्य निर्देशन:** प्रभु देवा **कलाकार:** ऋतिक रोशन, प्रीति जिंटा, अमिताभ बच्चन, ओमपुरी, बोमन ईरानी, सुशांत सिंह

धनी परिवार में जन्मा करन शेरगिल हमेशा स्वयं को जीवन के चौराहे पर खड़ा पाता है। इस सदैव बदलाव वाले जीवन में अगर कोई स्थिर स्तम्भ है तो वह है रोमिला दत्ता। एक प्रखर युवा लड़की। रोमी करन से प्रेम करती है और जानती है कि करन एक दिन अपने उद्देश्य में सफल होगा। करन भारतीय थल सेना में नियुक्ति के लिए इण्डियन मिलिट्री अकादमी में प्रवेश प्राप्त करता है। उसके इस फैसले से उसके पिता दुखी हैं और उसे थल सेना में प्रवेश करने से रोकना चाहते हैं। पिता की डांट से उत्तेजित करन अपने आप को साबित करना चाहता है और सेना में प्रशिक्षण के लिए चला जाता है, जहां उसका अनुभव कुछ अच्छा नहीं होता। उसे लगता है कि वह केवल अपनी हठधर्मिता के कारण तथा पिता को नीचा दिखाने के लिए सेना में प्रवेश पाना चाहता था। करन सैन्य अकादमी से प्रशिक्षण पूरा किये बिना ही भाग खड़ा होता है।

रोमी उसके इस फैसले से दुखी है और उसे भविष्य में मिलने से इंकार कर देती है। पिता की प्रताड़ना सुनकर एक बार फिर करन सैन्य अकादमी वापस आ जाता है और रोमी एक पत्रकार बन जाती है। प्रशिक्षण के बाद करन की तैनाती 3 पंजाब रेजीमेंट के साथ कारगिल में होती है। द्रास में शत्रु की घुसपैठ का पता चल चुका है और ऑप्रेशन विजय प्रारम्भ हो चुका है। पर्वत चोटी संख्या 5178 को पुनः विजित करने की ज़िम्मेदारी 3 पंजाब रेजीमेंट को सौंपी जाती है। एक कमांडो ग्रुप का भाग बनकर करन पर्वत चोटी पर भारतीय तिरंगा फहरा देता है और अपने लक्ष्य को पूरा करता है।

LAKSHYA (Goal)

Hindi/185 minutes/35mm

Producer: Ritesh Sidhwani **Director:** Farhan Akhtar **Screenplay:** Javed Akhtar **Camera:** Christopher Popp **Editing:** Anand Subaya **Music:** Shankar, Ehsaan, Loy **Choreography:** Prabhudeva **Cast:** Hrithik Roshan, Priety Zinta, Amitabh Bachchan, Om Puri, Boman Irani and Sushant Singh

Lakshya is the story of a young man, Karan Shergill. Born to rich, affluent parents, he lives life not worrying about tomorrow. He is, forever at the crossroads of life. The only thing stable in his life is Romila Dutta, a bright and ambitious, young woman. Romi loves Karan and believes that someday, he will find his calling.

Karan enrolls himself into the Indian Military Academy (IMA). His father is shocked to hear of it and reprimands him for making this decision.

This run in with his father makes Karan dig his heels in. He wants to prove to his disapproving, cynical father, that he too can amount to something. Romi stands by him, supporting his decision.

Karan's experience at the IMA is not a memorable one. He realizes that he is there, more because of his ego problem with his father, than his desire to achieve anything. Unable to cope with the grueling program, he runs away.

Romi is disappointed to hear that he has quit and tells him that she doesn't want to see him again. His indecision and lack of self-respect is worrying her. She feels he needs to grow up and realize his responsibilities. Karan is shattered. He decides to go back and finish what he had started. Romi, meanwhile, becomes a news correspondent .

Post IMA, Karan is posted in Kargil with the 3 Punjab Regiment. The intrusions in Drass are detected and Operation Vijay commences. The responsibility of recapturing Peak 5179 is given to the 3 Punjab Regiment.

As part of a Commando Group, Karan after great heroics reaches the hilltop and unfurls the Indian tricolour to signal recapture of the peak.

नवरस

तमिल / 99 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: सुनील दोषी **निर्देशन, पटकथा एवं कैमरा:** संतोष सिवन **संगीत:** असलम मुस्तफा **संपादन:** ए. श्रीकर प्रसाद **कलाकार:** खुशबू, श्वेता, अज्जिके उमा महेश, अपेक्षा भट्ट

नवरस एक ऐसी अनोखी यात्रा है जिसमें एक युवा लड़की श्वेता को अपने चाचा के किन्नर होने के बारे में पता चलता है। इस यात्रा में श्वेता का सामना इस दर्दभरे सत्य के यथार्थ से होता है। तमिलनाडु में चित्रित इस फिल्म में श्वेता की यात्रा अपने चाचा को वापस लाने के लिए होती है। उसके चाचा कुछ किन्नर रिवाजों को पूरा करने के लिए कूवगम की यात्रा पर निकल चुके हैं। ऐसा माना जाता है कि इन रिवाजों को पूरा करने के बाद किन्नरों को पूर्ण स्त्रीत्व की प्राप्ति हो जाती है। इस यात्रा में श्वेता के समक्ष एक संपूर्ण नया परिप्रेक्ष्य खड़ा हो जाता है और श्वेता के अन्वेषण से दर्शकों को एक ऐसे समुदाय के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जो दुष्कर है।

NAVARASA

Tamil/99 minutes/35 mm

Producer: Sunil Doshi **Direction, Screenplay** and **Camera:** Santosh Sivan **Editing:** A. Sreekar Prasad **Music:** Aslam Mustafa **Cast:** Kushbu, Swetha, Ejji K. Umamahesh, Bobby Daring and Apeksha Bhatt

In a world where, being human and surviving is bad enough, battling between the gender you physically are and the gender you mentally belong to can be a never ending trauma. Navarasa is one such journey, where a young girl Swetha discovers that her uncle, belongs to the third gender. This discovery leads her to realize the reality behind this painful truth. The film set in Tamil Nadu, is an entire journey which Swetha undertakes, in search of her uncle, who has left home to a place called Koovagam, to complete certain rituals, which will lead him to complete woman hood. Through this journey Swetha discovers a whole new world and through the film we discover her discovery.

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

हिन्दी / 207 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: सहारा इंडिया मीडिया कम्युनिकेशन्स **निर्देशक**: श्याम बेनेगल **पटकथा**: शमा जैदी **कैमरा**: राजन कोठारी **संपादन**: असीम सिन्हा **संगीत**: ए.आर. रहमान **कलाकार**: सचिन खेडेकर, अन्ना प्रस्टल, कुलभूषण खरबन्दा, राजपाल यादव, इली अरुण

संध्या समय दुर्गा विसर्जन के अवसर पर सुभाषचन्द्र बोस तथा उनके साथी कैदी नाच–गा रहे हैं। दुर्गा की प्रतिमा सुभाष बाबू के हाथ में देते समय उनके भतीजे शिशिर उनको एक कागज में लिखा संदेश पकड़ा देते हैं। बोस जेल में भूखहड़ताल पर चले जाते हैं।

सुदूर पेशावर में बोस के एक पार्टी कार्यकर्त्ता शाह को तुरंत कलकत्ता आने के लिए तार मिलता है। जबतक शाह कलकत्ता पहुंचते हैं बोस को आज़ाद कर दिया जाता है ताकि जेल में उनकी भूख से मृत्यु होने पर दंगा न फैल जाए। शाह को अफगानिस्तान के मार्ग से बोस को रूस भेजने का प्रबंध करने का आदेश दिया जाता है। शिशिर अपने चाचा को वेष बदलकर कलकत्ता रो अंग्रेजी सरकार से बच निकलने में सहायता करते हैं। बोस पेशावर पहुंचते हैं और अपने एक साथी तलवार के साथ काबुल के लिए रवाना होते हैं।

काबुल में अफगान पुलिस उन्हें परेशान करती है तथा रूसी संपर्क स्थापित करने से इंकार कर देते हैं। मल्होत्रा नामक एक भारतीय दुकानदार बोस को न केवल अपने घर में आश्रय देता है बल्कि इटली तथा जर्मनी की सरकारों से संपर्क करने में सहायता करता है। अंततः बोस एक इटालियन नवाब के वेष में रूस होते हुए बर्लिन पहुंच जाते हैं।

ऐसे ही अनेक दृश्यों के माध्यम से यह फिल्म बोस के जीवन, उनके संघर्ष तथा भारत की स्वतंत्रता में उनके योगदान को सजीव रूप से प्रस्तुत करती है।

Netaji Subhas Chandra Bose the Forgotten Hero

Hindi/207 minute/35 mm

Producer: Sahara India Media Communication **Director:** Shyam Benegal **Screenplay:** Shama Zaidi **Camera:** Rajen Kothari **Editing:** Aseem Sinha **Music:** A.R. Rahman **Cast:** Sachin Khedekar, Anna Prustel, Kulbhushan Kharbanda, Rajpal Yadav, Ila Arun

It's the eve of Durgavisarjan. Subhas Chandra Bose and his fellow prisoners are singing and dancing. As the image of Durga is handed over by Subhas' nephew Sisir outside the prison, a note is slipped through as well. This note is the precursor of Bose's escape from India. Bose goes on a hunger strike in prison, to protest his unjust incarceration.

In faraway Peshawar, one of Bose's party workers, Shah receives a telegram to come to Calcutta immediately. By the time Shah arrives in Calcutta, Bose has been set free because the government is afraid that Bose's death in prison may spark off an extreme reaction. Shah is told to make arrangements for Bose's travel into Russia via Afghanistan. Subsequently, Sisir helps his uncle to escape in disguise. Bose arrives in Peshawar and is accompanied to Kabul by Talwar.

In Kabul, they are harassed by the Afghan secret police and the Russians to refuse to make contact. Malhotra, an Indian shopkeeper, not only hides Bose in his house, but helps to establish contact with the Italian and German legions. Finally, Bose disguised as an Italian Count, escapes through Russia to Berlin.

The film traces Bose's story in Berlin and Burma, the great saga of raising of the Azad Hind Fauj, its exploits, the mystery associated with his death.

ओरिडम

मलयालम / 90 मिनट / 35 एम एम

निर्माताः जेसिन लाल जेम्स **निर्देशन** एवं **पटकथाः** प्रदीप नायर **कैमराः** मनोज **संपादनः** रंजन अब्राहम **संगीतः** आईज़ाक थॉमस कोटकापल्ली **कलाकारः** गीतू मोहनदास, के. पी.ए.सी. ललिता

फिल्म की प्रमुख पात्र एक वेश्या है जो शान्त एवं सुखद जीवन की तलाश मे है जहां उसे उसके शरीर से न पहचाना जाए। अपने को बेचकर जीवनयापन करने से बड़ी दुखद घटना नहीं है। दिन–प्रतिदिन अजनवियों को अपना शरीर सौंपते हुए उसे इस बात का अहसास होता है। यह दुख उसे निःश्वास कर देता है और वह इस चक्रव्यूह से बच निकलने की कामना करती है। फिल्म एक वेश्या के जीवन चित्रण के माध्यम से इस वर्ग की अपेक्षाओं, दुखों, स्वप्नों तथा विचारों को प्रस्तुत करती है। ओरिडम समाज के उस वर्ग की महिलाओं की मृगतृष्णा का चित्रण है जिसे आम समाज हेय दृष्टि से देखता है।

ORIDAM (An Abode)

Malayalam/90 min/35mm

Producer: Jesin Lal James **Direction** and **Screenplay:** Pradeep Nair **Camera:** Manoj M. **Editing:** Ranjan Abraham **Music:** Isaac Thomas Kottukapally **Cast:** Geetu Mohan Das, KPAC Lalitha

Oridam narrates the story the story of sex workers of their angst, apathy and their craving to get out of the profession and their relentless search for a place of their own. It focuses on their yearning to be seen as human beings and not as mere flesh to be traded.

The protagonist is a prostitute on the pursuit of a tranquil place to live on.... Where she could not be gauged by her flesh. There's no greater tragedy for a woman than to live selling herself.

As the day dies down, she hands over her body to a stranger. Her agony can never be elucidated in words. The anguish of the mind virtually kills her, and she craves to be rescued.

The reasons for a woman being thrown into the street are universal in nature. The angst of a woman, who has to live as a sex worker in a city is the film's content.

Oridam is the heart wrenching quest of a woman, who belongs to that section which is viewed by the mainstream society with contempt.

पेज–3

हिंदी / 139 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: बॉबी पुष्करण **निर्देशन:** मधुर भण्डारकर **पटकथा:** मनोज त्यागी **कैमरा:** मधु एस. राव **संपादन:** एस. सुरेश पाई **संगीत:** शमीर टंडन **कलाकार:** कोंकणा सेन शर्मा, बोमन ईरानी, अतुल कुलकर्णी,उपेन्द्र मधुकर लिमये, संध्या मृदुल, तारा शर्मा

पेज–3 कहानी है माधवी, उसकी मित्र गायत्री जो बॉलीवुड में अभिनेत्री बनना चाहती है तथा पर्ल एक विमान परिचालिका जो किसी रईस या रईसजादे से विवाह करने का स्वप्न संजोए हुए है। फिल्म के दूसरे पात्रों में एक समाचारपत्र का संवाददाता तथा एक क्राईम रिपोर्टर है जो माधवी के प्रकार की पत्रकारिता को हेय दृष्टि से देखते हैं। अनेक काल्पनिक पात्रों के माध्यम से तथा पत्रकार माधवी शर्मा के दृष्टिकोण से फिल्म शहरी समाज के विलासी जीवन के अनेक चौंका देने वाले तथ्यों को उजागर करती है। अंततः फिल्म के संदेश के अनुसार शहरी विलासता का भौंडापन जारी रहता है।

PAGE 3

Hindi/139 minutes/35 mm

Producer: Bobby Pushkarna **Director:** Madhur Bhandarkar **Screenplay:** Manoj Tyagi **Camera:** Madhu S. Rao **Editing:** S. Suresh Pai **Music:** Shamir Tandon **Cast:** Konkana Sensharma, Bomab Irani, Atul Kulkarni, Upendra Madhukar Limaye, Sandhya Mridul, Tara Sharma

Page 3 tells the story of Madhavi (Konkana Sensharma) and her friends Gayatri (Tara Sharma), a struggling Bollywood actress and Pearl (Sandhya Mridul) a bold n' sassy, no-nonsense talking air hostess who dreams of marrying a rich tycoon. The other essential characters include a powerful newspaper editor, a crime reporter who finds Madhavi's brand of journalism demeaning, a Bollywood star a gay make-up artist a friend of the protagonist.

The plastic life of high society unfolds through the eyes of Madhavi Sharma. She contributes her bit by exposing them but nothing changes. This section of society lives on with the same principles...

पेरुमढ़कालम

मलयालम / 102 मिनट / 35 एम एम

निर्माताः सलीम पडियत **निर्देशकः** कमल **पटकथाः** टी.आर. रज़ाक **कैमराः** पी. सुकुमार **संपादनः** के. राजगोपाल **संगीतः** एम. जयचन्द्रन **कलाकारः** दिलीप, मीरा जैस्मिन, मामुकोया, काव्या माधवन, राहियाना

रज़िया एक युवा मुस्लिम महिला है जो कोज़ीकोड में कल्लाई नदी के किनारे रहती है। वह मुस्लिम दुलहनों के हाथों में मेंहदी की सजावट का काम करती है। गंगा दूसरी ओर ब्राह्मण महिला है जो अपने पति के घर कलपति नदी के किनारे पालघाट में रहती है। दोनों महिलाओं के एक वर्ष छोटे शिशु हैं तथा दोनों के पति सउदी अरब में काम करते हैं। दोनों अपने पतियों के वापस लौटने पर पूर्ण दाम्पत्य की चाह रखती हैं।

तभी समाचार मिलता है कि गंगा के पति की रज़िया के पति अकबर ने हत्या कर दी है। सउदी अरब की शरियत अदालत का निर्णय है कि गंगा के क्षमा करने पर ही अकबर को अभय दान मिल सकता है। अपने पति को हरहाल में बचाने की इच्छुक रज़िया गंगा से मिलती है, परंतु क्या गंगा अपने पति के हत्यारे को क्षमा करती है?

तेज वर्षा इन दोनों महिलाओं के जीवन के हर उतार चढ़ाव की साक्षी बनी रहती है।

PERUMAZHAKKALAM (While It Rains Hard)

Malayalam/102 minute/35 mm

Producer: Salim Padiyath **Director:** Kamal **Screenplay:** T.R. Razak **Camera:** P. Sukumar **Editing:** K. Rajagopal **Music:** M. Jayachandran **Cast:** Dileep, Meera Jasmin, Mamukoya, Kavyamadhvan and Rahiana

Raziya is a young Muslim woman residing on the bank of Kallai river in Kozhikode. She is a professional engaged in the task of beautifying Muslim brides with intricate patterns of henna on the eve of their weddings. Ganga, on the other hand, is an orthodox Brahmin woman living in happiness in her husband's home by the Kalpathi river in Palghat. Both the women are mothers of one-year-old babies, with their husbands working in Saudi Arabia. Raziya and Ganga look forward to a life full of marital bliss when their husbands return from the Gulf.

Then comes the distressing news. Ganga is forced to wear the garb of a widow, even as widowhood stares Raziya in the face. Meanwhile, the Shariat Court of Saudi Arabia sentences Akbar, Raziya's husband to death on the charge of murdering Raghu, Ganga's husband. Akbar will be set free if Ganga grants him pardon. Raziya, who is determined to undergo any ordeal to save her husband's life, decides to see Ganga. Would Ganga forgive her husband's murderer?

The incessant hard rain becomes witness to the emotionally charged encounters of the women.

रेनकोट

हिंदी / 117 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: श्री वेंकटेश फिल्म्स **निर्देशक** एवं **पटकथा:** ऋतुपर्णो घोष **कैमरा:** अमीर मुखर्जी **संपादन:** अर्घ्यकमल मित्रा **संगीत:** देबज्योति मिश्रा **कलाकार:** अजय देवगन, ऐश्वर्या रॉय, अन्नु कपूर, मौलि गांगुली

बिहार के एक गांव में रहने वाले मनोज और नीरू को हालात अलग होने पर मजबूर कर देते हैं। मनोज पूंजी की तलाश में है। व्यवसाय के लिए पूंजी की तलाश मे अपनी माँ को छोड़कर कोलकाता जा रहा है। माँ उसके जाने से नाखुश है क्योंकि उसने मनोज के बटुए में एक पता देखा है।

मनोज अपने पुराने सहपाठी से उधार मांगने के उद्देश्य से शहर आया है। उसके पास कोई नौकरी नहीं है, न ही धन है और न हालात के सुधरने की कोई आशा। उसका पुराना मित्र आलोक जिसके साथ वह रह रहा है अपने सभी मित्रों को मनोज की मदद करने के लिए पत्र लिखता है। मजबूर मनोज दुखी है और इसका अहसास केवल आलोक की पत्नी शीला को है। जब आलोक मनोज को कुछ दफ्तरों में जाने का परामर्श देता है तो मनोज उससे एक लड़की का पता पूछता है। मनोज की माँ की भाँति आलोक भी इस लड़की के नाम से क्रोधित हो जाता है।

गुत्थी थोड़ा और सुलझती है। नीरू मनोज के बचपन की दोस्त थी और कोलकाता के एक धनी अधिशासी से विवाह करने की चाह में उसने मनोज को ठुकरा दिया। यह विवाह नीरू की माँ ने तय किया था।

वर्षा में एक दिन अपने मित्र का रेनकोट (बरसाती) पहन कर मनोज नीरू की तलाश में निकल पड़ता है..........

RAINCOAT

Hindi/117 minutes/35 mm

Producer: Shri Venkatesh Films **Director** and **Screenplay** Rituparno Ghosh **Camera:** Abhik Mukherjee **Editing:** Arghyakamal Mitra **Music:** Debojyoti Mishra **Cast:** Ajay Devgan, Aishwarya Rai, Annu Kapoor and Mouli Ganguli

This is a film about two people who share the same village in the backwoods of Bihar. A young man, Manoj and a woman, Niru...two people joined by love but separated by circumstances.

Manoj is leaving his mother to travel to the city of Kolkata in search of finance. His mother is unhappy at his departure. She is even unhappier because she has discovered a certain address in his wallet.

Manoj has gone to the city to borrow money from his old school friends and set himself up in business. He has no job, no money and apparently no hope of things improving. His old friend Alok, with whom he is staying, writes letters to all his friends asking them to help Manoj, but Manoj cannot bear to beg. He cries secretly in Alok's shower, heard only by Shiela, Alok's faithful wife. Alok, unaware of this, gives him directions to the various offices, and is, in turn, asked about how to locate a certain address...the address of a girl. Like Manoj's mother, Alok is also furious at the mention of the girl's mother.

The mystery unravels a little more – Niru was Manoj's childhood sweetheart. She jilted him to marry a Kolkata executive with more money. A marriage that was arranged for her by her ambitious mother.

On a rainy day in Kolkata, equipped with his friend's old raincoat, Manoj sets out to visit his old love......

स्वदेस

हिन्दी / 195 मिनट / 35 एम एम

निर्माता एवं **निर्देशक:** आशुतोष गोवारीकर **पटकथा:** आशुतोष गोवारीकर, समीर शर्मा, ललित मराठे, अमीन हाजी, चारलोट, व्हिटबी कोल, यशोदीप निगुडकर एवं अयान मुखर्जी **कैमरा:** महेश अणे **संपादन:** बल्लू सलूजा **संगीत:** ए.आर. रहमान **कलाकार:** शाहरुख खान, गायत्री जोशी, दया शंकर पांडे, किशोरी बल्लाल एवं मास्टर स्मित सेठ

मोहन भार्गव नासा में प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में काम कर रहा एक प्रखर भारतीय वैज्ञानिक है जो अपनी धाय माँ को ढूंढना चाहता है। कावेरी अम्मा जो साक्षात मातृत्व का रूप हैं को अमेरिका लाने के लिए चरनपुर पहुंचने वाला मोहन स्वयं को ग्रामीण विकास से जुडे प्रश्नों से घिरा पाता है। गांव के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने वाली गीता उसकी जिज्ञासा को और बढ़ा देती है क्योंकि सम्पूर्ण कठिनाइयों के बावजूद वह भी इसी गांव में रह रही है।

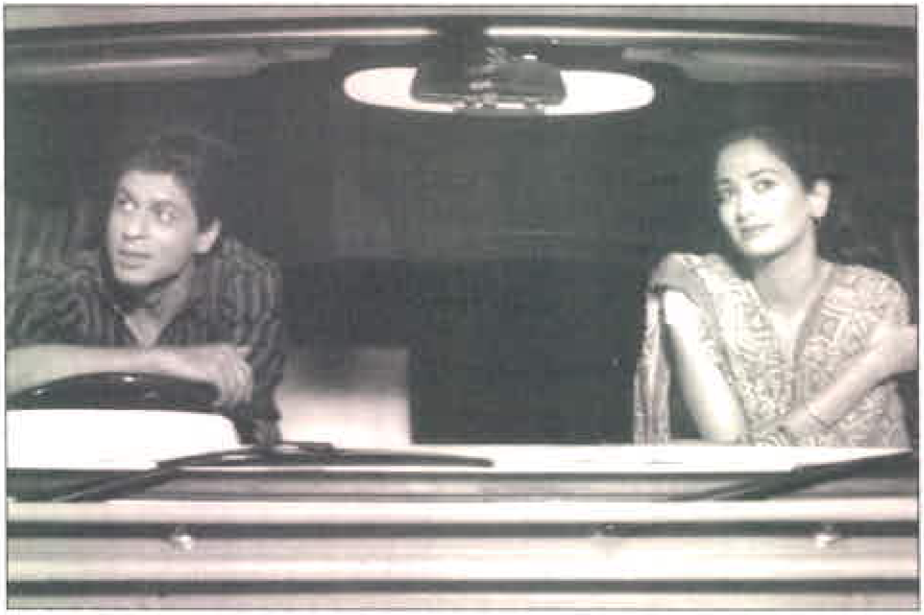

SWADES *(Our Country)*

Hindi/195 Minutes/35 mm

Producer and **Director** Ashutosh Gowarikar **Screenplay:** Ashutosh Gwarikar, Sameer Sharma, Lalit Marathe, Amin Hajee, Charlotte Whitby Coles, Yashodeep Nigudkar and Ayan Mukherji **Camera:** Mahesh Aney **Editing:** Ballu Saluja **Music:** A.R. Rahman **Cast:** Shah Rukh Khan, Gayatri Joshi, Daya Shankar Pandey, Kishori Ballal and Master Smith Seth

Mohan Bhargava, a bright young scientist working as a project manager in NASA, returns to India in search of his childhood nanny.

In his attempts to persuade Kaveriamma, the symbol of motherhood to him and to take her with him to America, he gets drawn into the life of a village called Charanpur and finds himself searching for answers to the questions of progress and development that the village is facing. His curiosity is piqued by Gita, an admirable young woman teaching in the village primary school, who chooses to live there despite problems like casteism, prejudice and a lack of basic amenities.

स्वप्नेर दिन

बंगला / 87 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: जुगल जे. सुगन्ध **निर्देशन** एवं **पटकथा:** बुद्धदेव दासगुप्ता **कैमरा:** वेणु **संपादन:** रबिरंजन मैत्रा **संगीत:** बिस्वदेब दासगुप्ता **कलाकार:** प्रसेनजित् चटर्जी, रिमी सेन, राजेश शर्मा, राइमा सेन

परेश एक सरकारी प्रोजेक्टर चालक है जो जीप में प्रोजेक्टर रखकर स्थान–स्थान पर सरकारी शिक्षात्मक फिल्में दिखाता है। परेश अपनी फिल्मों में दिखने वाली एक लड़की की छवि से प्रेम करता है और उसको पाने का स्वप्न देखता है। चपल उसके सरकारी ड्राइवर के स्थान पर आया नया ड्राइवर है जो नकली पासपोर्ट के जरिए दुबई भाग जाना चाहता है। अमीना एक गर्भवती मुस्लिम लड़की है जिसके पति की मृत्यु गुजरात दंगों में हुई है। ये मुस्लिम दम्पत्ति बंगला देश से भारत आये थे। अमीना बंगला देश वापस लौटने की इच्छुक है जहां वह अपने बच्चे को नाम और पहचान दे पाएगी।

फिल्म में तीनों के स्वप्नों को मिलाकर अनेक परिदृश्यों के साथ यथार्थवादी घटनाओं जैसे हत्या, प्रोजेक्टर तथा जीप की चोरी आदि हैं। परेश, चपल और अमीना एक ऐसे सेतु पर आ पहुंचते हैं जहां से साधारण जीवन की ओर लौटना अत्यंत कठिन है। परेश और चपल अमीना के साथ बंगलादेश जाना चाहते हैं। चोरी से वह अमीना की भूमि में प्रवेश करते हैं, परंतु सुरक्षा सेनाओं द्वारा सीमा पर घेर लिये जाते हैं। फाइरिंग से बच निकलने की कोशिश में अमीना अपने देश नहीं जाना चाहती। चपल मारा जाता है और परेश एक ऐसी भूमि पर पहुंच जाता है जिसके बारे में उसे कोई अंदाजा नहीं है।

SWAPNER DIN (Chased by Dreams)

Bengali/87 minutes/35 mm

Producer: Jugal J. Sugandh **Director** and **Screenplay:** Buddhadaeb Dasgupta **Camera:** Venu Editing: Rabiranjan Maitra **Music:** Bishwadeb Dasgupta **Cast:** Prasenjit Chatterjee, Rimi Sen, Rajesh Sharma and Raima Sen

Paresh the central character, travels by a government jeep with a 16mm film projector. As he goes from one place to another screening government educational films, he falls in love with the image of a girl in one of the films and dreams of finding her one day. Chapal, the substitute driver of the jeep, dreams of making it rich in Dubai by sneaking in with a forged passport. Amina a pregnant Muslim girl whose husband was killed out the Gujarat riot after they migrated from Bangladesh to India dreams of returning to her own land to give her unborn child a definite, unquestionable identity. The magical mosaic of these dreams constantly has to face the realistic conflicts like the murder, the theft of the projector aand ultimately the theft of the jeep.

Paresh, Chapal and Amina are left on a ridge from which they can never return to the normalcy of life. Helplessly Paresh and Chapal decide to go with Amina to Bangladesh. They stealthily enter Amina's native place but are encountered by the security forces at the border. A skirmish takes place in which Chapal is killed, Amina resists going back to her own country and Paresh manages to run away to the country of which he knows nothing.

स्वराभिषेकम

तेलुगु / 166 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: सी.के. राव **निर्देशन** एवं **पटकथा:** के. विश्वनाथ **कैमरा:** दुर्गा प्रसाद **संपादन:** जी.जी. कृष्णा राव **संगीत:** विद्यासागर **कलाकार:** श्रीकांत, लाया, श्रीधर, सुरेखा वाणी

स्वराभिषेकम कहानी है दो संगीतज्ञ भाइयों की जो गरीबी से ऐश्वर्य और प्रसिद्ध की पराकाष्ठा पर पहुंचते है। छोटे भाई रंगा की पत्नी की मृत्यु हो जाती है और वह सुरेखा से विवाह करता है। सुरेखा को प्रतीत होता है कि बड़ा भाई श्रीनिवासचारी सारी प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है, जबकि उसके पति को सम्मान नहीं मिल रहा है। दोनों भाइयों के अलग होते ही रंगा का आत्मविश्वास, स्वर, संगीत तथा ऐश्वर्य क्षीण होने लगते हैं।

शीघ्र ही अपनी गलती को समझकर वह अपने बड़े भाई से मिलता है और धन, मान, सम्मान और आत्मविश्वास पुनःप्राप्त करता है।

SWARABHISHEKAM

Telugu/166min/35mm

Producer: C.K. Rao **Director** and **Screenplay:** K. Viswanath **Camera:** Durga Prasad **Editing:** G.G. Krishna Rao **Music:** Vidyasagar **Cast:** Srikanth, Laya, Sridhar, Surekhavani

Swarabhishekam is the story of two musician brothers who rise from penury to prosperity and fame. Ranga, the younger brother's wife dies and he remarries Surekha. Surekha somehow, feels that the elder brother Srinivasachari is cornering all the glory, denying it to her husband. As the two brothers separate, Ranga begins to lose his confidence, voice, music and wealth.

Realizing his folly, he returns to his elder brother and the prosperity, music, fame all return.

UTTARAYAN

Marathi/92 Minutes/35 mm

Producer: Opticus Films **Director** and **Screenplay:** Bipin Nadkarni **Camera:** Mahesh Limaye Editing: Vishal Kharat **Music:** Amartya Rahut **Cast:** Shivaji Satam, Neena Kulkarni, Viju Khote and Uttara Baokar

Raghuveer Rajadhyaksha, a widower for the last 14 years, had been running a pharmacy in Nagpur for a long time now. After his first heart attack, he had returned to Mumbai to his only son Sanjay wanting to retire from active life. Mumbai was also his birthplace where he had spent his formative days.

One day he bumps into his old pal Babu Borkar. They talk about the good old times they had shared. The good old friends they had. Mangesh, his sister Kusumavati...

Raghu for a moment is lost in a reverie. Kusumavati, his first love.... He had even penned a poem for her. How could he not go and meet her.

He meets Kusum after almost 25 years. She too has changed. Kusum, now Durgi after a broken marriage could still manage that smile but she is lonely, just like Raghu.

Raghu meets her more often. The share a bonding. He is scared to believe that he wants to marry her.... at this age....

Should he ask her or just cling on to his son all his life.

Would Durgi marry him?

Would his son like it?...

उत्तरायण

मराठी / 92 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: ऑप्टिकस फिल्म **निर्देशन** एवं **पटकथा**: बिपिन नादकर्णी **कैमरा**: महेश लिमये **संपादन**: विशाल खरत **संगीत**: अमर्त्य राउत **कलाकार**: शिवाजी सतम, नीना कुलकर्णी, वीजू खोटे, उत्तरा बावकर

नागपुर में फार्मेसी चलाने वाला रघुबीर राज्याध्यक्ष पिछले 14 वर्ष से विधुर है। दिल का दौरा पड़ने के बाद मुम्बई लौटने वाला रघुबीर अब रिटायर हो चुका है। रघुबीर मुम्बई में जन्मा है तथा वहीं उसका बचपन बीता। एक दिन वह अपने पुराने मित्र बाबू बोरकर से मिलता है और बचपन की मित्रता को याद करता है, और याद करता है मंगेश की बहन कुसुमावती को........ कुसुमावती उसका पहला प्रेम थी। रघु ने उसके लिए कविता भी लिखी थी। जीवन के इस पड़ाव में रघु कुसुमावती से मिलने क्यों न जाता। रघु कुसुम से 25 वर्ष बाद मिलता है। कुसुम अब दुर्गी है और एक टूटे हुए विवाह को लेकर अकेली जी रही है। रघु उससे अक्सर मिलने लगता है। दोनों में एक अजीब सा रिश्ता है। दुर्गी से इस आयु में विवाह करने का विचार रघु को भयभीत कर देता है।

क्या उसे दुर्गी से पूछना चाहिए या अपने पुत्र के साथ जीवन काट देना चाहिए ?

क्या दुर्गी उससे विवाह करेगी ? क्या उसका पुत्र इस विवाह को स्वीकार करेगा?

वीर–ज़ारा

हिन्दी / 192 मिनट / 35 एम एम

निर्माताः यशराज फिल्म्स **निर्देशकः** यश चोपड़ा **पटकथाः** आदित्य चोपड़ा **कैमराः** अनिल मेहता **संपादनः** रितेश सोनी **संगीतः** प्रीतम **कलाकारः** शाहरुख खान, प्रीति जिंटा, अमिताभ बच्चन, हेमामालिनी, रानी मुखर्जी, अनुपम खेर, दिव्या दत्ता

स्कॉवड्रन लीडर वीर प्रताप सिंह भारतीय वायु सेना में पायलट हैं जो अपना जीवन खतरे में डालकर दूसरों की जानें बचाता है। ऐसे ही एक दिन वीर प्रताप एक पाकिस्तानी लड़की ज़ारा, जो भारत में अपनी दादी माँ की इच्छा पूरी करने आई है, को बचाता है। ज़ारा किसी कारणवश बस के एक सफर में वीर के साथ अकेली छूट जाती है। वीर उसका जीवन बचाता है और दोनों का जीवन सदा–सदा के लिए बदल जाता है।

22 वर्ष बाद एक पाकिस्तानी वकील सामिया सिदि्दकी अपने पहले केस के रूप में उस वीर प्रताप का मुकदमा लेती है जो 22 साल से पाकिस्तानी जेल में सड़ रहा है। इन वर्षों में वीर ने कभी किसी से बात नहीं की है और किसी को इसका कारण भी नहीं पता। सामिया का उद्देश्य वीर के संबंध में सत्य को जानना और उसे न्याय दिलवाना है। सामिया का वीर को न्याय दिलाने का सफर कई सत्यों को उजागर करता है।

वीर 22 वर्षों से चुप क्यों है? वह पाकिस्तान की जेल में क्यों है? ज़ारा कहां है? उसे क्या हुआ? विधाता ने वीर और ज़ारा के भाग्यों को इस प्रकार लिखा है कि वे कभी एक न हो पाएं, परंतु सामिया इन सब को बदल देना चाहती है और अंततः सफल होती है।

VEER – ZAARA

Hindi/192 Minutes/35 mm.

Producer: Yash Raj Films (P) Ltd. **Director:** Yash Chopra **Screenplay:** Aditya Chopra **Camera:** Anil Mehta **Editing:** Ritesh Soni **Music:** Pritam **Cast:** Shah Rukh Khan, Preity Zinta, Amitabh Bachchan, Hema Malini, Rani Mukherjee, Anupam Kher, Divya Dutta

Squadron leader Veer Pratap Singh is a rescue pilot with the Indian Air Force, who risks his own life to save the lives of others. One day, on duty, he comes across a stranded Zaara...a girl from Pakistan. Zaara, a carefree, sprightly girl has come to India to fulfill her surrogate mother's dying wish. She meets with a bus accident leaving her stranded in a foreign land.

Veer saves her life...and his life is never the same again...

Twenty-two years later, Saamiya Siddiqui, a Pakistani lawyer on her first case, finds herself face-to-face with an aging Veer Pratap Singh, he has languished in a Pakistan jail cell for 22 years and has not spoken to anyone all these years-and no one knows why.

Her mission is to discover the truth about Veer and see to it that justice is served. Thus starts her journey to unveil the truth...the story of Veer and his life...

Why has Veer been silent for 22 years? Why is he in a jail in Pakistan? Where is Zaara? What happened to her?

God has written the destinies of Veer and Zaara, in such a manner that they can never be joined together. Saamiya has come to change that...to join Veer and Zaara together...forever...and she succeeds.

कथासार : Synopses :
गैर कथाचित्र Non-Features Films

क्रेडल सॉंग

हिन्दी / अंग्रेजी / 19 मिनट / वीडिओ

निर्माताः भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशकः** निमिषा पांडे **कैमराः** नेहा पर्ती **संपादनः** साक्षी बिन्दल

क्रेडल सॉंग एक लघु कल्पित फिल्म है जिसमें एक विकलांग शिशु को जन्म देने वाले पति–पत्नी की मानसिक यंत्रणा को दर्शाया गया है। लम्बी प्रतीक्षा के बाद शिशु का जन्म होता है। पता चलता है कि शिशु हाईड्रोसिफैली नामक असाध्य रोग से पीड़ित है। अब पति–पत्नी इस द्वन्द्व में हैं कि वे शिशु को किसी अनाथाश्रम में छोड़ दें या जीवनभर एक विकलांग शिशु के पालन की पीड़ा को सहते रहें।

CRADLE SONG

Hindi/English/19 minutes/Video

Producer: Film and Television Institute of India **Director:** Nimisha Pandey **Camera:** Neha Parti **Editing:** Sakshi Bindal

Cradle Song is a short fiction that explores the mental agony of a couple that has given birth to a crippled child. After a long wait the couple gives birth to a child only to discover that the child suffers from a rare disease, Hyderocephaly. Now, they face the dilemma - whether to give up the child to an orphanage or bear the pain of raising a deformed child.

द्विजा

मराठी / 22 मिनट / 35 एम एम

निर्माता : भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशक**: पंकज पुरंदरे **कैमरा**: त्रिभुवन बाबू **संपादन**: मिलिंद पामले

फिल्म में 1930 के दशक में बालविधवाओं की स्थिति का चित्रण है। मथुरा एक युवा बाल-विधवा है जो पति की मृत्यु के पश्चात् अपने मायके लौट आती है। यहां बदले हुए एवं अनिश्चित वातावरण में वह अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष कर रही है।

DWIJAA

Marathi/22 minutes/35mm

Producer: Film and Television Institute of India **Director:** Pankaj Purandare **Camera:** Tribhuvan Babu **Editing**: Milind Pamle

Set in 1930, the film is about young Mathura, a child widow who is brought back to her maternal home. It is the story of her coming to terms with the changed reality and her trying to find her own voice in the face of uncertainty.

'DWIJAA' is loosely adapted from " Magey Valoon" (Looking Back) an autobiography of Dr. Malthutai Athaley.

एक सागर किनारे

मराठी / 44 मिनट / वीडिओ

निर्माता : गोमांतक मराठी अकादमी **निर्देशकः** लक्ष्मीकांत शेतगांवकर **कैमराः** सचिन कृष्ण **संपादनः** हेमंती सरकार

एक स्कूल अध्यापक शाबू अपने गांव को बाजार के रूप में परिणत होता हुआ देखकर व्यथित है, किंतु वह ग्रामवासियों की जल्दी पैसा बनाने की मानसिकता को बदलने के लिए कुछ नहीं कर सकता। एक दिन उसका सामना एक विदेशी पर्यटक नैन्सी से होता है और उसे अपनी शक्ति एवं कमजोरी का आभास होता है। वह व्यापारीकरण के विरुद्ध व्यक्तिगत रूप से संघर्ष करने के लिए कटिबद्ध हो जाता है।

EKA SAGAR KINARE (A SEASIDE STORY)

Marathi/English/44 minutes/Video

Producer: Gomantak Marathi Academy **Director:** Laxmikant Shetgaonkar **Camera:** Sachin Krishn **Editing:** Hemantee Sarkar

The film is about a schoolteacher Shabu, who silently grieves about the transformation of his village into a market place and is unable to do anything about the 'fast money making' mentality, growing amongst his fellow villagers. One fine day, he bumps into a foreign tourist, Nancy. While interacting with her he realizes his own weaknesses and strengths, and changes him to such an extent that he fights his battle against commercialization on a personal level.

गिरनी

मराठी / 22 मिनट / 35 एम एम

निर्माता: भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशक:** उमेश विनायक कुलकर्णी **कैमरा :** मनोज रेमंड लोबो **संपादन:** कृष्णेन्दु सरकार

ध्वनि तरंग मरती नहीं। हम ध्वनि विस्फोट के युग में जी रहे हैं। जो ध्वनि हम उत्पन्न करते हैं वह वातावरण में सदा जीवित रहती है। सच्चे अर्थों में हमें शांति की तलाश है। ऐसी शांति जिसमें शरीर जी सके और मस्तिष्क कल्पना कर सके।

10 वर्षीय समीर भारत के एक महानगर की चाल में अपनी विधवा माँ और दादा के साथ रहता है। उनके लिए धन कमाने का मात्र एक साधन एक चक्की है। परंतु इसके साथ आगमन होता है भयानक कभी न रुकने वाली ध्वनि का। यह मशीन न केवल भौतिक बल्कि मानसिक रूप से भी पूरे परिवार पर अपना प्रभाव डालती है। समीर का अल्हड़ मस्तिष्क इस अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह कर देता है।

GIRNI (Grinding Machine) Marathi/22minutes/35mm

Producer: Film and Television Institute of India **Director:** Umesh Vinayak Kulkarni **Camera:** Manoj Raymond Lobo **Editing:** Krishnendu Sarkar

Sound waves do not die. We are living in the era of sound explosion. All the sound that we create is going to be in the atmosphere forever. We need peace in its literal sense. The peace in which the body can survive and the mind can create an imagination.

Samir, a 10 year old, is living in a chawl in a metropolis in India. Samir lives with his widowed mother and grandfather. The only easily available alternative to earn money is through a grinding machine. The machine brings with it its horrible, incessant and oppressive sound that not only takes away the physical space but the mental space as well of the whole family. Samir's innocent mind is alert to this oppression and rebels against it.

हार्वेस्ट ऑफ हंगर

अंग्रेजी / उड़िया / 60 मिनट / वीडिओ

निर्माता: एक्शन एड इण्डिया **निर्देशक:** रूपाश्री नन्दा **कैमरा:** जे. देबता, रूपाश्री नन्दा एवं अन्य **संपादन:** प्रशांत नायक

उड़ीसा का बोलनगीर जिला सूखे की भयानक चपेट में था। धन और अनाज के अभाव में ग्रामीणों को सूदखोरों से कर्ज़ लेना पड़ा। इस धन की वापसी के लिए कोई साधन न होने के अभाव में ये गरीब व्यक्ति मजदूर ठेकेदारों के हाथों बिक गए। केवल तीन चार सौ रुपए की मजदूरी पर संपूर्ण परिवार बंधुआ मजदूर बन गए। मजदूर ठेकेदारों ने उन्हें देशभर में ईटों के भट्टों में काम करने के लिए भेज दिया। जो यात्रा न कर सके वह भुखमरी से मर गए या उन्होंने अपने बच्चों को जिंदा रहने के लिए बेच दिया।

बोलनगीर में कमेटी के बाद कमेटी आती रहीं, परंतु जनता और सरकार के बीच की खाई बढ़ती गई। आठ महीनों के क्रूर समय के बाद जब इन मजदूरों ने अच्छे मानसून की आशा की तब भी उन्हें निराशा ही हाथ लगी और वे एक बार फिर ईंट भट्टों की ओर मुड़ गए। लाखों लोग पीढ़ी दर पीढ़ी इस भूख से आजीवन प्रभावित रहे। इसलिए नहीं कि खाने को न था। इसलिए भी नहीं कि वे मेहनती नही थे। परंतु जितना भी वे मेहनत करते भूख उनका पीछा नहीं छोड़ती। देश के गोदामों में अनाज भरा पड़ा था परंतु भूख उसके लाखों नागरिकों का पीछा नहीं छोड़ती थी। यह एक दुखभरी, लज्जाजनक विडंबना ही है।

HARVEST OF HUNGER

English/Oriya/60 minutes/Video

Producer: Action Aid India **Director:** Rupashree Nanda **Camera:** J. Debta . Rupashree Nanda and others **Editing:** Prashant Naik

Bolangir, a district in Orissa, was hit by yet another severe drought. With neither food nor cash reserves, villagers turned to private moneylenders for loans. To repay these accumulating debts they turn to the labour contractors and mortgaged their family labour . For as little as 300-400 rupees, entire families were turned into bonded labourers. The labour contractor then rented them to brick kilns all over the country. Those who were too weak to travel succumbed to starvation or sold off children in order to survive.

Meanwhile, committees upon committees visited Bolangir to ascertain the situation on the ground but ended up further alienating the state from the people.

After eight cruel months, the migrants returned hoping for a good monsoon and also hoping that they would not have to migrate again, but soon they were on their way to brick kilns.

Millions of people and generations of families were condemned to lifetimes of persistent hunger. Not because there was not enough food to go around or because people were not working hard. In fact, no matter how hard they worked or where they worked or for whom they worked, hunger was their constant companion. The country's godowns were spilling over with foodgrains while hunger stalked millions of it's citizens. It is a sad, shameful and grim irony.

इट्स प्रभात

मराठी / 78 मिनट / वीडिओ

निर्माता: ए.वी. दामले **निर्देशक:** माधवी वैद्य **कैमरा:** विजेन्द्र पाटिल **संपादन:** संजय डबके

प्रभात फिल्म कंपनी की स्थापना 1929 में कोल्हापुर महाराष्ट्र में स्वर्गीय श्री विष्णु जी दामले, स्वर्गीय श्री एस. फत्तेलाल, स्वर्गीय श्री केशव राव धाईबर, स्वर्गीय श्री बी. शांता राम तथा स्वर्गीय श्री सीताराम पंत कुलकर्णी द्वारा की गई। प्रभात फिल्म कंपनी सन् 1933 में पुणे आ गई। इस कंपनी ने कुल 42 फिल्मों का निर्माण किया। अन्य फिल्मों के अतिरिक्त इसकी कुछ महान फिल्में है –**संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर , गोपाल कृष्ण, धर्मात्मा, कुंकू, शेजारी** और **मानूस**। कंपनी ने मुख्यत: सर्वसाधारण को संबोधित करने वाली तथा सामाजिक सुधार और भाईचारे को बढ़ाने वाली फिल्मों का निर्माण किया। **अयोध्येचा राजा** प्रभात द्वारा निर्मित पहली बोलती फिल्म थी जो आज भी भारत में उपलब्ध सबसे प्राचीन बोलती फिल्म है। **संत ज्ञानेश्वर** पहली भारतीय फिल्म थी जिसका व्यावसायिक प्रदर्शन अमेरिका में भी हुआ। सन् 1937 में वेनिस फिल्म समारोह में सम्मान प्राप्त करने वाली तीन फिल्मों में से इस स्टूडियो द्वारा निर्मित संत तुकाराम भी थी। यह फिल्म पुणे के प्रभात टॉकीज में 37 सप्ताह तथा मुम्बई के सैंट्रल सिनेमा में 40 सप्ताह चली।

फिल्म, प्रभात फिल्म कंपनी की कहानी दर्शाती है।

'IT'S PRABHAT'

Marathi/ 78 mins / video

Producer: A.V. Damle **Director:** Madhavi Vaidya **Camera:** Vijendra Patil **Editing:** Sanjay Dabke

Prabhat Film Company was founded in 1929 at Kolhapur, Maharashtra by Late Shri Vishnu G. Damle, Late Shri S. Fateelal, Late Shri Keshavrao Dhaibar, Late Shri V Shantaram and Late Shri Sitarampant Kulkarni. It shifted to Pune in 1933. The company produced about 42 films in all, including great films like **Sant Tukaram, Sant Dnyneshwar, Gopal Krishna, Dharmatma, Kunku, Shejari,** and **Manoos** among others. The company produced movies, which appealed to the audiences and gave messages of social reform and brotherhood, which were appreciated by audiences internationally. **Ayodhyacha Raja**, the first talkie film of Prabhat, is the oldest available talkie film in India. **Sant Dnyaneshwar** was the first Indian film to be screened commercially in USA.

Sant Tukaram became the first Indian film to be honoured at the Venice Film Festival as one of the three best films in the year 1937. This film ran for 37 weeks at Prabhat talkies in Pune and over 40 weeks at Central Cinema in Mumbai.

It's Prabhat narrates the story of Prabhat Film Company.

क्ष त्र ज्ञ
हिन्दी / 22 मिनट / वीडिओ

निर्माता: भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशक:** अमित दत्ता **ध्वनि आलेखन:** विवेक

वृक्ष कथाएँ सुनाते हैं, कथाएँ तैरती हैं और अन्य कथाओं को जन्म देती हैं। बालक ईश्वर है, नायक है, दर्शक है, साधन है जो कथाओं को प्राप्त करता है। सर्जक एवं प्राप्तकर्ता, वह समस्त कथाओं को सर्जना के बिन्दु वृक्ष के गर्भ में पुनर्स्थापित कर देता है।

KSHA TRA GYA
Hindi/22 minutes/Video

Producer: Film and Television Instituate India **Director:** Amit Dutta **Audiography:** Vivek

Trees tell strories, stories float and reproduce other stories. Child is the God and the protagonist and the viewer and the source, which receives the story. Creator, recipient, he sends all the stories back to the womb, the point of genesis back to the tree.

द लीज़ेंड ऑफ फैट ममा

अंग्रेजी / 27 मिनट / वीडिओ

निर्माता, निर्देशक, पटकथा एवं **कैमरा** : रफ़ीक इलियास **संपादन:** शर्मिष्ठा झा एवं श्वेता वैंकट **स्वर:** यांग येन थॉ

कोलकाता के चाइना टाउन में स्वादिष्ट नूडल बेचने वाली एक चीनी समुदाय की महिला की यह कथा है। कोलकाता के चीनी समुदाय के संबंध में अनेक अंतर्निहित कहानियों से बनी यह फिल्म गायब होते पारिवारिक रेस्टोरेंट तथा लुप्त होती अन्य चीनी परम्पराओं का चित्रण करती है। इस कथा में भारतीय चीनी युद्ध के बाद चीनियों के हालात का तथा उनके कनाडा या अन्य देशों में प्रवास का संवेदनशील चित्रण है।

THE LEGEND OF FAT MAMA

English/27 minutes/Video

Producer, Director, Screenplay and **Camera:** Rafeeq Ellias **Editing:** Sharmishtha Jha and Shweta Venkat **Voice:** Yang Yen Thaw

The sad-happy story of the Chinese community in Calcutta (Kolkata), a nostalgic journey in search of a woman who once made the most delicious noodles in the city's Chinatown. Many stories intersect in Calcutta's melting 'wok': thriving street food, disappearing family-run eateries, manjong clubs, a Chinese printing press that has closed down, another that 'hand write' the newspapers every morning, and the first all-woman dragon dance group preparing for the Chinese New Year. There is pain and hurt too, at the treatment the Chinese received in the aftermath of the Indo-China war, causing many of them to migrate to Canada and elsewhere, but there is generosity and hope, in the spirit of the New Year; besides the ever-binding ties of tandoori chicken and Hindi cinema!

राजू एण्ड आई

अंग्रेजी / हिन्दी / 30 मिनट / वीडिओ

निर्माता: असीमा चेरिटेबल ट्रस्ट **निर्देशक:** गायत्री राव **संपादन:** सुमंत राव **एनीमेंटर:** चेतन शर्मा

यह फिल्म शोषित बालकों की समस्याओं से संबंधित है। अतुल अपने दोस्त राजू को ढूढ़ रहा है जो अपने गांव को छोड़कर शहर भाग गया है... उसकी यह खोज उसे प्रतिदिन एक नई दुनिया से परिचित कराती है। किंतु वह शहर की प्रतिक्रिया के प्रति चिन्तित नहीं है।

अतुल और उसके अंतरंग मित्रों की यह संवेदनशील यात्रा उन्हें उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का अहसास कराती है और जागरूकता पैदा करती है। उनके भविष्य में सामाजिक भूमिका के बारे में।

RAJU & I

English/Hindi/30 minutes/Video

Producer: Aseema Charitable Trust **Director:** Gayatri Rao **Editing:** Sumant Rao **Animator:** Chetan Sharma

The 30 minute film deals with issues faced by underprivileged children, as seen from the eyes of a 12-year-old city boy. Atul who searches for his best friend Raju, who has run away from his village to the city... this search introduces him to a world he sees everyday but has not cared to notice... a typical urban reaction...

The emotional journey that begins for Atul and his friends, with whom he shares his experiences, leads to an awareness of social conditions and their own responsibility for the future... an awareness, the filmmakers hope will be shared by their target audience. The film was primarily aimed at children in urban schools who are at a stage where their sensitivities can be honed towards their role as future citizens. The compassion and love for all, that each one has inside of us, is unfortunately lost over time as influences of the world creep in and the most natural human instinct for love and compassion is lost under layers of materialistic values.

साँझ
अंग्रेजी / 27 मिनट / वीडिओ

निर्माता: भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान **निर्देशक:** जैस्मीन कौर **कैमरा:** पराशर बरुआ **संपादन:** अविनाश रॉय

पुणे के एक छोटे से शहर में एक कठोर मकान मालकिन की एक चॉल है। इसके अन्य किरायेदारों में एक जराजीर्ण वयोवृद्ध भी हैं जिनके परिवार में कोई नहीं है। धीरे–धीरे उनका वास्तविकता से संपर्क टूटता जा रहा है। वह बिलकुल अकेले हैं और उनके आस–पास सब उनसे परेशान हैं। उनके लिए समय मानो रुक गया है परंतु शेष की जीवनयात्रा पूर्ववत् है।

SAANJH (THE DUSK)
Hindi/22 minutes/35mm

Producer: Film and Television Institute of India **Director:** Jasmin Kaur **Camera:** Parashar Baruah **Editing:** Avinash Roy

A small crowded chawl (lodge) somewhere in the suburbs of Pune. Managed by a stern landlady, it houses among others, an old man, who has no family and is on the verge of becoming senile. Caught in a time warp, he is slowly losing touch with reality. He is alone and everyone around him seems to have had enough of him. As time stops for him, for the rest of them, life goes on.

शोर्स आफॅ साइलेंस–व्हेल शार्क्स इन इण्डिया

अंग्रेजी / 24 मिनट / वीडिओ

निर्माताः गौतम पांडे **निर्देशकः** रंजना पांडे **कैमराः** माइक पांडे **संपादनः** रीता बनर्जी

व्हेल शार्क संसार की सबसे बडी मछली है। गर्म पानी में रहने वाली इन राक्षसी मछलियों का जीवन आज भी मनुष्य के लिए एक पहेली है। मुख्यतः आस्ट्रेलिया के गरम पानी में पाये जाने वाली ये मछलियां गर्मियों में भारत की ओर प्रवास करती हैं। पश्चिमी भारत में गुजरात के तट पर हर वर्ष सैकड़ों शार्क मार दी जाती हैं, कारण–लिवर ऑयल, जिसका प्रयोग नाव आदि के जल अभ्येद्यन के लिए होता है। इसके अतिरिक्त पिछले पांच वर्षों से शार्क का मांस तथा वसा निर्यात हो रही है। मछुआरे जो शार्क को पकड़ते हैं, अपने लिए बहुत कम धन बचा पाते हैं।

फिल्म शार्क के शिकार के बारे में कुछ बुनियादी प्रश्नों को उठाती है। संरक्षण का यह प्रयास अब धीरे–धीरे सफल हो रहा है।

SHORES OF SILENCE – Whale Sharks in India

English/24 minutes/Video

Producer: Gautam Pandey **Director:** Ranjana Pandey **Camera:** Mike Pandey **Editing:** Rita Banerji

Whale sharks are the largest fish in the world. The lifestyle of these warm water giants is an enigma to man. Largely found in the warm waters of Australia, they migrate to India during summers.

Every year, hundreds of these gentle giants are slaughtered on the shores of Gujarat, western India. The reason – liver oil – for waterproofing boats and trawlers, shark meat, fat and fin. The fisherman who risk their lives to capture this massive creature, however, make hardly any money for their effort.

Shores of Silence questions the rationale behind this mindless slaughter of a special marine species already at stake because of its slow regeneration. This film is a conservation effort to gather support to protect these enigmatic giants while offering the fishing community an alternative in the form of whale shark tourism.

TIMELESS TRAVELLER-The Horseshoe Crab

English/16 minutes/Video

Producer: Riverbank Studios **Director:** Gautam Pandey **Camera:** Mike Pandey and Gautam Pandey **Editing:** Doel Trivedi and Sanjeev Jha

A film on the world's most spectacular scientific breakthrough that has rewritten the pages of medical history, benefiting nearly 2 ½ billion people on earth. Nature could not wipe out this unique creature for millions of years, but man out of ignorance has brought it to the brink of extinction in just a few decades.

Conservation of this enigmatic creature, the Horseshoe Crab is the prime theme of this film. The film is an effort to gather support and create awareness in order to protect this endangered species from extinction.

The Horseshoe crab has been unknown and ignored for thousands of years. The film generated new interest and research started in India after news snippets of this film were shown. A relative of the spider and the scorpion this space ship like creature with blue blood holds some of the most fantastic secrets that could revolutionize medical history.

टाइमलेस ट्रैवलर–द हॉर्सशू क्रैब

अंग्रेजी / 16 मिनट / वीडिओ

निर्माता: रिवर बैंक स्टूडियोज **निर्देशक:** गौतम पांडे **कैमरा:** माइक पांडे एवं गौतम पांडे **संपादन:** दिऑल त्रिवेदी एवं संजीव झा

एक प्रभावशाली वैज्ञानिक खोज जिसने चिकित्सा के इतिहास को पुनर्भाषित कर धरती पर 250 करोड़ लोगों को लाभान्वित किया है। जिस अद्भुत प्राणी को प्रकृति ने लाखों वर्षों से संजोकर रखा था उसे मानव ने अपने अज्ञान और लालच के कारण विनाश के कगार पर पहुंचा दिया।

इस रहस्यमय प्राणी हॉर्सशू क्रैब का संरक्षण फिल्म का मुख्य विषय है। फिल्म इस संकटापन्न प्राणी की सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने का एक प्रयास है।

हॉर्सशू क्रैब हजारों वर्षों से अनभिज्ञता एवं अज्ञान के अंधकार में आवृत्त था। फिल्म के प्रदर्शन से इस प्राणी के विषय में लोगों की रुचि हुई। मकड़ी और बिच्छू की प्रजातियों से संबंधित यह नील रक्त वाला जीव अपने अंदर कई अद्भुत रहस्यों को छिपाए हुए है जो चिकित्सा के इतिहास में क्रांति ला सकते हैं।

DIRECTORATE OF FILM FESTIVALS

SHRI AFZAL AMANULLAH
DIRECTOR
Tel : 2649 9398 (DFF)
2338 4453 (Ministry)
Fax : 2649 9371 (DFF)
2338 7823 (Ministry)

SHRI SRINIVASA SANTHANAM
DEPUTY DIRECTOR
(International Film Festival of India)
Tel: 2649 9356
Fax: 2649 9357

SHRI R N MALHOTRA
DEPUTY DIRECTOR
(Administrative matters)
Tel: 2649 9370
Fax: 2649 9398

SHRI SHANKAR MOHAN
SENIOR DEPUTY DIRECTOR
(Participation in Film Festivals, Cultural Exchange Programmes)
Tele/ Fax : 2649 0457

SHRI MANOJ SRIVASTAVA
DEPUTY DIRECTOR
(National Film Awards, Indian Panorama)
Tel : 2649 9378
Fax: 2649 7214

SHRI MOHAN LAL MITTAL
DEPUTY DIRECTOR
(Accounts, Finance, Auditoria Booking)
Tel: 2649 9354
Fax: 2649 7214

Indian Airlines
Travel Partner